www.vinoba.in

सर्व सेवा संघ

वार्षिक अधिवेशन

राजगीर (बिहार)

(ता. २३–२४ अक्टुबर, १९६९)

★

कार्यवाही

2-31
469

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

www.vinoba.in

31

सर्व सेवा संघ

वार्षिक अधिवेशन

राजगीर (बिहार)

(ता. २३–२४ अक्टुबर, १९६९)

संदर्भ विभाग

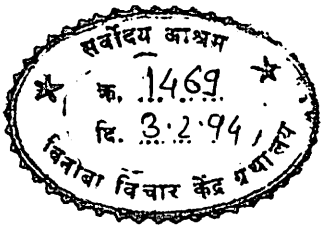

कार्यवाही और विवरण

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

www.vinoba.in

प्रकाशक : मंत्री, सर्व सेवा संघ,
गोपुरी, वर्धा

संस्करण : पहली

*

प्रतियाँ : १०००, सितम्बर, १९७०

मुद्रक : साम्ययोग मुद्रणालय, वर्धा

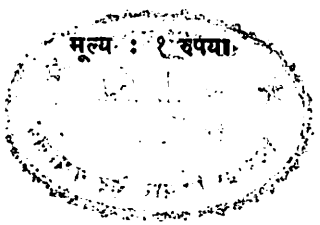

Title :
Sarva Seva Sangh Adhiveshan
Rajgir (Bihar)

*

Subject : Report.

*

Publishres :
Sarva Seva Sangh
Gopuri, Wardha

Price : Rs. 1-00

www.vinoba.in

प्र का श की य

राजगीर (बिहार) में दिनांक २३–२४ अक्टुबर, ६९ को श्री विनोबाजी की उपस्थिति तथा अन्तर्राष्ट्रीय और अठारहवें सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ का अधिवेशन हुआ । इस संघ अधिवेशन की कार्यवाही प्रकाशित की जा रही है । प्रारंभ में कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण है और आगे तिथिवार विस्तृत विवरण जोड़ा गया है ।

संघ अधिवेशन में शामिल होनेवाले लोकसेवकों, संघ-सदस्यों तथा आमंत्रितों की सूची परिशिष्ठ में दी गई है । आशा है इस विवरण से राजगीर संघ-अधिवेशन की पूरी जानकारी मिलेगी ।

गोपुरी, वर्धा
३० सितम्बर, १९७०

–ठाकुरदास बंग
मंत्री

www.vinoba.in

सर्व सेवा संघ

अधिवेशन

राजगीर (बिहार) दिनांक २३–२४ अक्टुबर, ६९

कार्यवाही

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन अठारहवें सर्वोदय सम्मेलन के पहले दिनांक २३–२४ अक्टुबर, ६९ को राजगीर (बिहार) में सभा मण्डप में संघ के अध्यक्ष श्री एस्. जगन्नाथन् की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवधि में अधिवेशन की कुल मिलाकर पांच बैठकें निम्न प्रकार से हुई :

दिनांक २३ अक्टुबर, ६९	प्रातः ९ से १२ बजे तक	पहली बैठक
,, ,, ,, ,,	दोपहर २ से ६ बजे तक	दूसरी बैठक
,, २४ ,, ,,	प्रातः ९ से १२ बजे तक	तीसरी बैठक
,, ,, ,, ,,	दोपहर ३ से ६ बजे तक	चौथी बैठक
,, ,, ,, ,,	रात्रि ७-३० से ९-३० बजे तक	पांचवी बैठक

अधिवेशन में जो लोकसेवक, संघ-सदस्य तथा आमंत्रित महानुभाव उपस्थित हुए, उनकी उपस्थिति, उपस्थिति पंजिका के अनुसार परिशिष्ठ में दी गई है।

१. पिछली बैठक की कार्यवाही की स्वीकृति :

संघ के सहमंत्री श्री नरेन्द्र दुबे ने तिरूपति (आंध्र प्रदेश) में दिनांक २३ से २५ अप्रैल, ६९ तक हुए संघ अधिवेशन की कार्यवाही प्रस्तुत की। संक्षिप्त कार्यवाही पहले ही सबको परिपत्रित करदी गई थी। छपी हुई कार्यवाही वितरित की गई। सर्वसम्मति से कार्यवाही स्वीकृत की गई।

www.vinoba.in

२. कार्य विवरण :

संघ के मंत्री श्री ठाकुरदास बंग ने तिरुपति संघ अधिवेशन से राजगीर संघ अधिवेशन तक सम्पन्न हुए सर्व सेवा संघ के काम की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि गांधी शताब्दि वर्ष होने के नाते सारे देश में आंदोलन को आगे बढाने के लिए इस अवधि में सघन प्रयास हुए और उन्हें यह कहते हुए प्रसन्नता है कि इस अवधि में जो उपलब्धि हुई, पिछले अठारह वर्षों में शायद ही कभी हुई हो। ग्रामदानी गांवों की संख्या साठ हजार से एक लाख चालीस हजार यानी दुगनी से ज्यादा, प्रखण्डदानों की संख्या तिगुनी से ज्यादा और गत वर्ष के ५ जिलादान के स्थान पर तीस जिलादान यानी जिलादान की संख्या छै गुनी बढ़ी है। आज हम बिहारदान तक पहुँच चुके हैं। आंदोलन के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। उन्होंने उन सभी कार्यकर्त्ताओं का अभिवादन किया जिन्होंने भीषण परिस्थितियों में एकाग्रता से काम किया। मंत्री ने आगे कहा कि बिहारदान के बाद तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश उत्कल और मध्य-प्रदेश भी तीव्रता से प्रदेशदान की ओर बढ रहे हैं। दक्षिण के अन्य प्रदेशों में भी काम की हलचल शुरू हुई है। अन्य प्रदेशों में भी काम आगे बढ रहा है। उन्होंने आशा प्रकट की कि इसी प्रकार से यदि एकाग्रता से काम हुआ तो संकल्पित प्रदेश १९७० तक प्रदेशदान तक पहुंच सकते हैं।

आंदोलन में आनेवाली कठिनाइयों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कार्यकर्त्ता प्राप्ति के नए दालान बिहार, उत्कल और तमिलनाडु में खुले हैं। अर्थ की दृष्टि से महाराष्ट्र और गुजरात में विशेष प्रयास हुए हैं। प्रतिकूल जनमानस को अनुकूल बनाने की दृष्टि से श्री जयप्रकाश बाबू की यात्राओं से बहुत मदद मिली है। तमिलनाडु तथा बिहार के रांची के काम से प्राप्ति की नई टेकनिक हाथ में आई है। शांति सेना का काम बढा है। इस संदर्भ में उन्होंने अहमदाबाद की घटनाओं का विशेष उल्लेख किया और कहा कि अभी हमें इस दिशा में लंबी मंजिल तय करनी है। खादी जगत में आनेवाली कठिनाइयों का जिक्र करते हुए

www.vinoba.in

उन्होंने कहा कि प्रबंध समिति ने सरकार से रिजर्वेशन ऑफ स्पेयर की मांग की है। प्रकाशन विभाग की ओर से सर्वोदय साहित्य सैट निकालने का प्रशंसनीय प्रयास किया गया है। मंत्री ने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि संगठन की हमारी स्थिति बहुत कमजोर है। बहुत ही कम जिलों में सर्वोदय संगठन बने हैं लेकिन वे भी सक्रिय नहीं है। आपने बादशाह खान के भारत आगमन पर उनका अभिवादन किया और कहा कि उनके आगमन से भारत में एक नए युग का प्रारंभ हुआ है।

३. अध्यक्ष का प्रतिवेदन :

संघ के अध्यक्ष श्री एस. जगन्नाथन् ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए आंदोलन का सिंहावलोकन किया। उन्होंने कहा कि राज्यदान के लिए की जारही कोशिशों के साथ-साथ गांव और प्रखण्ड के स्तर पर ग्रामसभा को मजबूत बनाने पर हमारी ताकत लगानी चाहिए। उन्होंने निश्चयपूर्वक कहा कि अगर गांधी-शताब्दी के बीच प्रखण्ड तथा जिले के स्तर पर भूमि-वितरण और पेचीली भूमि-समस्याओं के हल के लिए ग्रामसभाएं सक्रिय होती हैं तो अनिवार्यतः आनेवाली आर्थिक क्रान्ति के लिए देश गांधीजी के रास्ते पर चल निकलेगा।

४. श्री विनोबाजी द्वारा मार्गदर्शन :

श्री विनोबाजी का अधिवेशन को प्रत्यक्ष मार्गदर्शन का लाभ मिला। वे संघ के सभी अधिवेशनों में उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि अधिवेशन और सर्वोदय सम्मेलन मुक्त चर्चा और आपसी स्नेह के आधार बनने चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि रायपुर में त्रिविध-कार्यक्रम का प्रस्ताव किया गया था। हमको इस वक्त सोचना चाहिए कि उसके अमल के बारे में हम क्या कर पाए हैं, और क्या-क्या नहीं कर सके, क्या न्यूनता रही। प्रस्ताव के अमल के बारे में अधिवेशन में छानबीन होनी चाहिए। जो भी प्रस्ताव किया जाय वह सर्वसम्मति से हो। उन्होंने बताया कि संभव है इस प्रकार "लाउड-स्पीकर" का उपयोग करने का मौका इस सम्मेलन के बाद उनके लिए न हो। क्यों कि जो सूक्ष्म-प्रयोग शुरू किया है, वह इसके आगे

www.vinoba.in

सूक्ष्मतर में जाएगा। श्री विनोबाजी के प्रवचन आगे विस्तृत विवरण में यथास्थान दिए गए हैं।

५. अधिवेशन में चर्चाएं :

श्री बैद्यनाथप्रसाद चौधरी ने विहारदान तथा उसके बाद पुष्टि के काम की योजना की जानकारी दी। इसी संदर्भ में उन्होंने वैशाली में ग्रामस्वराज्य के तात्विक और व्यवहारिक पहलुओं पर विचार करने के लिए जो ग्रामस्वराज्य पर संगोष्ठी हुई, उसकी भी जानकारी कराई। विहार के पुष्टि काम की योजना, उसकी दिशा ओर उसमें आनेवाली समस्याओं तथा कठिनाइयों का भी जिक्र उन्होंने किया।

श्री सिद्धराज ढड्ढा ने वर्तमान परिस्थिति और सर्वोदय आंदोलन का विषय प्रस्तुत किया। पिछले दिनों राजनैतिक क्षेत्र में राष्ट्रपति के चुनाव को लेकर जो घटनाएं घटी, उसके लिए उन्होने कहा कि इस सत्ता-संघर्ष में जनतांत्रिक तरीकों की खुले आम अवलेहना हुई है। आर्थिक क्षेत्र में 'बैंकों का राष्ट्रीयकरण' तथा 'खेती की हरित क्रान्ति' इन दो प्रमुख घटनाओं का उन्होने उल्लेख किया। बैंकों के राष्ट्रीयकरण पर उन्होंने कहा कि राष्ट्रीयकरण का लाभ गरीबों को तभी मिल सकेगा जब वे जागृत और संघठित होंगे। इसके अभाव में छोटे उद्योगों के या खेती के नाम पर भी पैसा उन लोगों के हाथ मे जायगा जिन्होने आज तक गांवों के विकास के नाम पर बहाए गए करोड़ों रुपयों का लाभ उठाया है। अतः बैंकों के राष्ट्रीयकरण के संदर्भ में लोक-शक्ति जागृत करना मुख्य काम है। अन्यथा समाजवाद और प्रगति के नाम पर गरीबों के गले का फंदा और भी मजबूत होजायगा। हरित क्रान्ति के दो पहलुओं पर उन्होंने ध्यान आकर्षित किया। पहला यह कि यह लाभ बडे और सम्पन्न किसानों को मिल रहा है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में भी अमीर और गरीब के बीच का अन्तर बढता जारहा है। हरित क्रान्ति वास्तव में प्रति क्रान्ति साबित होरही है। दूसरा– रासायनिक खाद की दृष्टि

से होने वाले गंभीर परिणामों और खतरों पर भी अब गंभीरता पूर्वक सोचा जाना चाहिए। अनुभव यह बताता है कि इन चीजों का उपयोग एक ऐसे दुष्चक्र को जन्म देता है जिससे न केवल आगे जाकर जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट होजाने का खतरा है बल्कि प्रकृति के सारे चक्र को टूटने की संभावना और पशुओं तथा मनुष्यों की जान को भी सीधा खतरा है।

श्री प्रेमभाई ने कहा कि बिहारदान के बाद अब ग्रामनिर्माण का संदर्भ भी बदल गया है। इतने बड़े पैमाने पर हम काम नहीं कर सकते। ग्रामसभाओं को सक्रिय कर उनके मार्फत विकास के काम चलाने के लिए उनको सक्रिय किया जाय। मिर्जापुर क्षेत्र में ग्रामदान-ग्रामसभाओं द्वारा किए गए काम के अनुभव की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि ग्रामसभाओं द्वारा सरकार से भूमि कटाव, भूमि-संरक्षण तथा खेतीसुधार का काम हाथ में लिया जाना चाहिए।

श्री काकासाहब कालेलकर ने शांतिसेना के संगठन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि देश में एक करोड़ शांतिसैनिक चाहिए। लेकिन यदि आज आप पचास लाख का लक्ष्यांक भी रखते हैं तो उसके संगठन के काम की जिम्मेवारी वे लेने के लिए तैयार हैं। यदि हमारे पास पचास लाख शांतिसैनिक हों तो किसी बाहर की शक्ति की हिम्मत नहीं हो सकती कि वे उसका मुकाबिला कर सकें। यही बात आंतरिक शांति से संबंधित है।

श्री शंकररावजी ने कहा कि जो कुछ आंदोलन से हुआ है, उससे उनको समाधान नहीं है। आंदोलन का स्वरुप ऐसा हो जो हम करना चाहते हैं। उसका प्रारंभ खुद अपने से ही हो। आज जो निर्माण का काम चल रहा है, वह क्रान्तिकारी परिवर्तन का नहीं है बल्कि सामाजिक सुधार का विकास का कार्यक्रम है। उससे हम-आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक बदल नहीं कर सकते। सर्व सेवा संघ को क्लास-लेस बनना है।

www.vinoba.in

यह सोचा गया कि विभिन्न विषयों पर टोलियों में चर्चा हो। तद्नुसार गोष्ठियों के संयोजक तथा विषय निम्न प्रकार से रखे गए :

१. ग्रामदान अभियान और संगठन का स्वरुप	संयोजक– श्री एस. जगन्नाथन्
२. पुष्टि	,, ,, राममूर्ति
३. हिंसा की समस्या और शांतिकार्य	,, ,, क्षितिशराय चौधरी
४. राष्ट्रीय परिस्थिति और हमारी भूमिका	,, ,, सिद्धराज ढड्ढा
५. खादी–ग्रामोद्योग	,, ,, वी. रामचन्द्रन्

उक्त विषयों पर गोष्ठियों में चर्चा हुई और संयोजकों ने अपनी-अपनी गोष्ठी के निष्कर्षों की रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्ट का विवरण विस्तृत विवरण में आगे यथास्थान दिया गया है।

उक्त विषय मुक्त चर्चा के रुप में भी शुरू किए गए और विभिन्न लोगों ने अपने विचार रखे। श्री शेंदूर्णीकर ने कहा कि हमें जिला परिषदों पर ध्यान केंन्द्रित करना चाहिए। श्री जेठालाल ने खादी काम समर्थ व्यक्तियों को जिम्मेवारी लेने पर बल दिया। श्री विठ्ठलदास बोदाणी ने आंदोलन के साथ सर्वोदय साहित्य सैंटों की बिक्री पर जोर दिया। श्री रामेश्वरदास तोतला ने कहा कि सर्व सेवा संघ को विभिन्न दलों की राष्ट्रीय परिषद बुलानी चाहिए। श्री वेंकटराव ने देश में पूर्ण नशाबंदी पर बल दिया। श्री प्यारेलाल शर्मा ने कहा कि विचार के अनुकूल हमारा जीवन हो। श्री सत्यनभाई ने सभी रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधी लेकर सर्व सेवा संघ बनाने का सुझाव दिया। श्री शंकरलाल मण्डलोई ने कहा कि अब सत्याग्रह करने का समय आया है। श्री रामवतार ने कहा कि ग्रामदानी गांव के स्वरुप की जो हमारी कल्पना है, उसे हम साकार करने की कोशिश करें। श्री मणिलाल ठोकरसी ने मणीपुर के काम की जानकारी दी। श्री बद्रीनारायण गाड़ोदिया ने कहा कि युवक वर्ग के बीच में काम किया जावे और चुनावों के समय साम्प्रदायिकता न फैले, इसका प्रयास किया जाय।

श्री रा. कृ. पाटील ने इस बातपर जोर दिया कि संकल्प हमारा न होकर जनता का संकल्प बने। हमें ग्रामसभाओं को सक्रिय करने पर

जोर लगाना चाहिए। श्री मनमोहन चौधरी ने कहा कि ग्रामदान की प्रक्रिया की संभावनाओं का अभी अंत नहीं हुआ है। श्री गोकुलभाई भट्ट ने कहा कि आंदोलन कार्यकर्ता का न होकर जनता का बने। श्री नरेन्द्र दुबे ने आपसी मतभेदों को एक जगह बैठकर खुलाशा कर लेने का सुझाव दिया। श्री राममूर्ति ने विस्तार से बिहारदान के बाद पुष्टि, ग्राम-स्वराज्य की दिशा और उसके कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। बैशाली-ग्राम स्वराज्य गोष्ठी के निष्कर्षों की जानकारी दी। उन्होंने आगे कहा कि संगठन तथा पूरे आंदोलन के स्वरूप के बारे में ही अब नए सिरे से सोचने की आवश्यकता है। संघ के प्रधान कार्यालय के लिए उन्होंने कहा कि पूर्वांचल में आन्दोलन बढ़ रहा है और क्रान्ति का सघन प्रयोग विकसित हो रहा है। इसलिए वह यथास्थान रहे और आवश्यक्तानुसार क्षेत्रीय कार्यालय शुरू किए जा सकते हैं।

श्री जयप्रकाश नारायण ने अहमदाबाद के दंगों के पीछे उनके विचारों का विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण किया। उन्होंने कहा कि दोनों कोमों के बीच तिरस्कार की भावना फैलाने वाले लोग देश का अहित करते हैं। यदि इन दोनों कोमों के बीच तिरस्कार की भावना इसी प्रकार फैलाते रहेंगे तो उन्होंने आगाह किया कि देश खतम हो जायगा और आखिरकार दुबारा इस देश के टुकड़े होंगे। शांतिसेना को यह काम उठाना चाहिए। गांधी शांति प्रतिष्ठान इस काम के लिए आर्थिक जिम्मेवारी उठावे।

संघ के अध्यक्ष श्री एस. जगन्नाथन् ने सीमांत गांधी के भारत आगमन पर उनका अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि वे अहमदाबाद की स्थिति के कारण वहाँ ठहर गए हैं। सर्वोदय परिवार उनके साथ है। उन्होंने उनके प्रति सद्भावना प्रकट करने के लिए एक प्रस्ताव अधिवेशन में प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। स्वीकृत प्रस्ताव परिशिष्ठ में आगे दिया गया है।

६. संघ के प्रधान कार्यालय का वर्धा स्थानान्तरण :

संघ के अध्यक्ष ने सर्व सेवा संघ का प्रधान कार्यालय गोपुरी, वर्धा स्थानान्तरण करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

अधिवेशन में इस विषय पर चर्चा होकर यह विषय संघ की प्रबंध समिति को फिर से सौंपा गया जो इस पर विचार कर योग्य निर्णय ले।

अधिवेशन के आखिरी भाषण में संघ के अध्यक्ष श्री एस. जगन्नाथन् ने अधिवेशन का समारोप किया। उन्होंने आशा प्रकट की कि यदि हम एकाग्रता और सातत्यपूर्वक सामूहिक रूप से काम में लग जावें तो अधिक-से-अधिक प्रदेशों का गांधी जन्म शताब्दी वर्ष में दान हो सकता है। उन्होंने आगे कहा कि हमें विषमता का निवारण करना है, इसके लिए तीव्रता आवश्यक है।

अधिवेशन की कार्यवाही २४ अक्टुबर ६९ की रात्रि को ९–३० पर समाप्त हुई।

★★★

परिशिष्ठ

सीमांत गांधी स्वागत प्रस्ताव :

"सर्व सेवा संघ की यह सभा २२ वर्ष की जुदाई, कष्ट और कठिनाई की अवधि के बाद बादशाह खांन के भारत आगमन पर उनका हार्दिक स्वागत करती है, तथा उनके प्रति सम्मान व स्नेहभरी शुभाकांक्षा अर्पित करती है। इस अवसर पर आजादी, मानव-बंधुत्व और परस्पर प्रेम के लिए उनकी सेवाओं का सहज स्मरण हो आता है।

बादशाह खांन ने हमें तथा देश के सम्पूर्ण जन-समुदाय को हृदय-स्पर्शी संदेश दिया है, जैसा कि पिछले कई वर्षों में हमें नहीं मिला। उन जैसे साधुमना की उपस्थिति और सामान्य सच्चाई को सहज सरलता के साथ प्रकट करनेवाले उनके उद्‌गारों ने महात्मा गांधी की याद को पुनर्जीवित कर दिया है। इसके फलस्वरुप शताब्दी कार्यक्रम को एक गहराई और दिशा प्राप्त हुई है, जो कमी बराबर अनुभव की जा रही थी।

सर्व सेवा संघ और पूरा सर्वोदय आंदोलन देश निवासियों को घृणा, हिंसा और सर्वनाश के रास्ते से विरत करने के बादशाह खांन के कठिन प्रयास-कार्य के पूर्ण समर्थन का अपना संकल्प प्रकट करता है।"

★★★

www.vinoba.in

सर्व सेवा संघ
अधिवेशन
तिथिवार विस्तृत विवरण

पहला दिन

२३ अक्टुबर, ६९ पहली बैठक प्रातः ९ बजे

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन दिनांक २३–२४ अक्टुबर, ६९ को राजगीर (बिहार) मे संघ के अध्यक्ष श्री. एस. जगन्नाथन् की अध्यक्षता में हुआ। अधिवेशन में लगभग २५० संघ सदस्यों, लोकसेवको और निमत्रितों ने भाग लिया।

संघ के सहमंत्री श्री नरेन्द्र दुबेने तिरूपति (आंध्रप्रदेश) में दिनांक २३ से २५ अप्रैल, ६९ तक हुई संघ अधिवेशन की कार्यवाही प्रस्तुत की और वह सर्वसम्मतिसे स्वीकृत की गई। संक्षिप्त कार्यवाही पहले ही सबको परिपत्रित कर दी गई थी। छपी हुई कार्यवाही वितरित की गई।

संघ के मंत्री श्री. ठाकुरदास बंगने तिरूपति संघ-अधिवेशन से राजगीर अधिवेशन तक संघ के काम का सिंहावलोकन किया। उन्होंने कहा कि सौभाग्य से यह वर्ष गांधी जन्म शताब्दी के रूप में हिंदुस्तान और पूरी दुनिया में मनाया जा रहा है और सर्वोदय कार्यकर्त्ता बंधुओं ने गांधीजी के ग्रामस्वराज्य एवम् उसकी बुनियाद के तौर पर ग्रामदान का संदेश गांव-गांव पहुँचाने का सघन प्रयास किया है! इस सवा वर्ष की अवधि में ग्रामदानी गांवों की संख्या साठ हजार से एक लाख चालीस हजार यानी दुगनी से भी ज्यादा हुई है। प्रखण्डदानों की संख्या तिगुनी से ज्यादा एवम् गत वर्ष के पांच जिलादान के स्थान पर तीस जिलादान

यानी जिलादान की संख्या छैगुनी बढी है। इस अवधि में इतनी बड़ी उपलब्धि पिछले अठारह वर्षों में शायद ही कभी हुई हो। इस सफलता के कारण कार्यकर्त्ताओं में स्वाभाविक ही आत्मविश्वास बढ़ा है और उत्साह की लहर दौडी है।

उन्होंने आगे कहा कि आज हम बिहार दान तक पहुँचे हैं। आंदोलन के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। जो भीषण कठिनाइयां विशेषकर दक्षिण बिहार के आदिवासी क्षेत्रों में साथियों से सम्पर्क न होने के कारण सामने आई, उनसे हमारा प्रशिक्षण हुआ है, धीरज तथा हिम्मत बढी है। इन भीषण परिस्थितियों में साथियों ने एकाग्रता से वहाँ काम किया है। जो भाई अधिवेशन में उपस्थित हुए हैं और जो ग्रामदान अथवा शांतिसेना का अनवरत काम कर रहे हैं और अधिवेशन में नहीं आए हैं, उनका उन्होंने अभिवादन किया। प्रदेशवार आंदोलन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बिहार को छोडकर उत्तर-प्रदेश, तमिलनाडु, उत्कल, मध्यप्रदेश महाराष्ट्र, राजस्थान और हरियाणा इन सात प्रदेशों के कार्यकर्त्ताओं ने ५ अक्टुबर, ६९ तक राज्यदान का संकल्प लिया था। अभी अकेला बिहार मंजिल तक पहुँचा है। अन्य राज्य अभी नहीं पहुँचे हैं। लेकिन उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और उत्कल के बारे में ऐसे आसार दीख रहे हैं कि ये राज्य गांधी-जन्म-शताब्दी के प्रारंभ में नहीं तो उसके समाप्ति तक यानी फरवरी, ७० तक राज्यदान की गति तक पहुँच जाएँगे। उत्तर प्रदेश में पांच जिलादान हो गए हैं और २४ हजार से अधिक गांवों का ग्रामदान हुआ। तमिलनाडु प्रदेशदान की ओर तीव्रता से बढ रहा है। उत्कल और मध्यप्रदेश भी इस यात्रा में लगातार अनवरत कोशिस कर रहे हैं। राजस्थान और महाराष्ट्र में भी कोशिशें जारी हैं लेकिन अभी दृश्य सफलता मिलना वहाँ शेष है। यदि एकाग्रता से काम हो तो आज जो गति इन प्रान्तों में है, इससे अधिक गति इनमें आ सकती हैं। हरियाणा ने दो महीने पहले राज्यदान का संकल्प किया है, लेकिन वहाँ गति बढ नही रही है। असम मे भी राज्य-दान के संकल्प करने की ओर सोच रहे है। गुजरात में दो-तीन जिलादान हो जाने पर राज्य दान का संकल्प लेने मे सहूलियत हो सकती है।

www.vinoba.in

केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में आंदोलन कई वर्षों से शून्य था। लेकिन तिरुपति संघ-अधिवेशन के बाद संघ के अध्यक्ष के प्रयत्नों से वहाँ काम में सक्रियता आई है। आंध्र का कड़प्पा जिलादान के सन्निकट पहुँच गया है। कर्नाटक में बीजापुर की चार तहसीलों का दान हो चुका है। वहाँ जिलादान का प्रयत्न चल रहा है। केरल में त्रिवेन्द्रम, अलेखी और कालीकट में सघन काम करने का सोचा गया है। वहाँ पिछले दिनों शिविर-सम्मेलन हुए हैं और पदयात्राएं आयोजित हुई है। श्री शंकररावजी की यात्राएँ यहाँ हुई हैं। बंगाल की विशेष परिस्थिति में श्री चारुबाबू उत्तर बंगाल मे लग रहे हैं। इस प्रकार से आंदोलन की दृष्टि से प्रदेशों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पहला जिन्होंने राज्यदान का संकल्प किया है, दूसरा मध्यम जो इस दिशा में क्रमशः बढ़ रहे हैं तथा तिसरा, जिसमें आंदोलन की शुरुवात हुई है। एकाग्रता से प्रयत्न हों तो संकल्पित प्रदेश १९७० तक प्रदेशदान तक पहुँच सकते हैं और शेष १९७२ तक ! इस प्रकार से १९७२ तक सारा भारत ग्रामदान की स्वीकृति दे सकता है– ऐसे स्पष्ट चित्र आए हैं।

आंदोलन को कई प्रदेशों में गति न पकड़ने में कई मुख्य कठिनाइयां है। कार्यकर्त्ताओं तथा अर्थ का अभाव है। प्रतिकूल और उदासीन वातावरण है। शहरों के बुद्धिजीवी वर्ग में, राजनैतिक पक्षों में ग्रामदान के बारे में अज्ञानता है। जहांतक कार्यकर्त्ताओं के अभाव का सवाल है, राज्यदान करते-करते बिहार, उत्कल और तमिलनाडु ने रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं का, सरकारी पक्षों का, ग्रामदानी गांवों के नागरिकों का एवम् शिक्षित नवयुवकों का सहयोग प्राप्त कर कार्यकर्त्ता प्राप्ति के नए दालान खोले हैं। उडीसा के तीन जिलों में कार्यकर्त्ताओं की शक्ति नगण्य है। मयूर भंज इसकी मिसाल है। कार्यकर्ता कम रहते हुए स्वयम् ग्रामदानी गांवों के लोगों द्वारा जिलादान कैसे हो सकता है, यहएक नमूना वहाँ प्रकट हुआ है। तमिलनाडु में शिक्षित नवयुवकों द्वारा जिलादान हो रहे हैं। इसलिए यह अनुत्तरित प्रश्न भी आज उत्तरित हो रहा है। अर्थ की कठिनाई दूर करने के लिये पिछले दिनों महाराष्ट्र और गुजरात में विशेष प्रयत्न हुए हैं। अर्थप्राप्ति की दिशा में नई प्रक्रिया की खोज भी यहाँ हुई

www.vinoba.in

है। श्री जे. पी. की यात्रा से महाराष्ट्र में एक ओर जहाँ अर्थ संग्रह प्रचूर मात्रा में हुआ, वहाँ आंदोलन के लिए भी अनुकूल भूमिका का निर्माण हुआ है। महाराष्ट्र में खोज की जा रही है कि बिना जे. पी. जैसे बडे नेताओं को बुलाए लोकसेवक, सर्वोदय मित्र तथा सर्वोदय पात्र द्वारा किस प्रकारसे अर्थ की समस्या हल की जा सकती है। विचारकों की हमारे पास कमी नहीं है। वरिष्ठ साथी हमारे मौजूद है। प्रतिकूल जनमानस को अनुकूल बनाने के लिए श्री जयप्रकाश नारायणजी की यात्राए कितनी असरकारक होती है, इसका फिरसे दर्शन महाराष्ट्र और पंजाब में इन दिनों हुआ। सारे भारत में इन यात्राओं के आयोजन से वातावरण बदलने में बहुत मदद मिल सकती है।

ग्रामदान प्राप्ति की भी नई टेकनिक हाथ आई है। रांची में जहाँ गांधीजी का नाम तक नही जानते थे, स्वतंत्रता का संदेश तक नही पहुँचा था, वहाँ भी धीरजकी कार्यकर्ताओं की परीक्षा हुई। ऐसे क्षेत्र में भी प्रखन्डदान, जिलादान हुए। कार्यकर्ताओं का वहाँ प्रशिक्षण हुआ। भारत का कोई भी कोना ऐसा नहीं बचा है, जहाँ ग्रामदान नही हुए हैं। भारत के किसी भी कठिन-से-कठिन जिले मे रांची के अनुभव से हम पहुँच सकते है।

राज्यदान के बाद के आगे के कार्य का सवाल प्रथम राज्यदानी प्रदेश बिहार के सामने उपस्थित हुआ है। राज्यदान होने के बाद अन्य प्रदेशों के सामने भी यह सवाल स्वाभाविक ही आएगा। अगस्त के मध्य में वैशाली ग्राम स्वराज्य के तात्विक एवम् व्यवहारिक पहलुओं पर विचार हुआ। उसमें बिहार के आगामी दो वर्ष के कार्यक्रम के संबंध में विचार किया गया है। प्राप्तिके साथ पुष्टि का सर्वोत्तम कार्य उत्कलमें हुआ है। "डिफेक्टो" पुष्टी वहाँ हो रही है। स्थानीय लोगों द्वारा ही पुष्टि का काम वहाँ हो रहा हैं। बाबा ने कल बिहार के लिए पुष्टि के "अति तूफान" की बात कही। यहाँ एक साल में डिफेक्टो पुष्टि का काम होना चाहिए। १९७२ के चुनाव के समय पर लोकनीति का दर्शन होना चाहिए। ग्रामदान कागजी हैं, ग्रामदान आंदोलन का शहरों एवम् बुद्धिजीवियों पर कोई

www.vinoba.in

असर नहीं है, राजनीति से यानी देश के मुख्य प्रवाह से सर्वोदयवाले दूर भागते हैं, आदि आक्षेपों का भी उत्तर भविष्य में कार्यकर्त्ताओं से इन अगुआ राज्यों को देना है। अतः बिहार के राज्यदान के साथ-साथ ग्राम-स्वराज्य की बहुत बड़ी जिम्मेवारी बिहार पर आपड़ी है।

शांतिसेना का काम बढ रहा है। तरुण शांति सेना का प्रयास विशेष रूप से बिहार में किया जा रहा है। ग्राम शांतिसेना का अच्छा काम उत्कल में हुआ है। तरूण शांति सेना का पहला अधिवेशन बंबई में हुआ। लेकिन हमें अभी कितनी लंबी मंजिल तय करनी है, यह गुजरात के हाल के दंगो से फिर से एक बार बरबस ख्याल में आया है। तंजौर और केरल की समस्या का श्री शंकररावजी अहिंसक हल ढूंढ रहे हैं। मध्यप्रदेश के साथियों ने एक-दो स्थानों पर शराबबंदी के लिए सफल सत्याग्रह किया है।

खादी जगत् के सामने आज भीषण परिस्थिति है। खादी के औजारों में तकनीकि दृष्टि से प्रगति हुई है। संघ की प्रबंध समिति ने राजकोट की बैठक में इस समस्या पर विचार किया है। खादी का स्टाक पड़ा हुआ है। राजकोट प्रबंध ने एक पखवाडे का आयोजन कर खादी को घर-घर पहुँचाना तथा सरकार से रिजर्वेशन ऑफ स्पेयर की मांग करने का निश्चय किया है।

गांधी शताब्दी के अवसर का लाभ उठाकर साहित्य के क्षेत्र में सर्व सेवा संघ प्रकाशन की ओर से विशेष प्रयत्न हुआ है। पांच रुपए का एक विशेष सैट तैयार किया गया है और दो लाख सेट बेचने की बड़ी योजना बनाई है। जहाँ तक पत्र-पत्रिकाओं का संबंध है, भूमिपुत्र को छोडकर अन्य पत्रों के ग्राहक बहुत ही कम है। इनमें किस प्रकार से वृद्धि हो सकती है, यह सोचना होगा। इस काम के माहिर लोगों के अनुभव का लाभ उठाया जाय। जिस साहित्य की हमें जरूरत है, वैसा साहित्य नहीं निकला है। सरल और रोचक भाषा में जनता के अनुरूप साहित्य तैयार करना होगा।

www.vinoba.in

संगठन की स्थिति बहुत कमजोर है। सब जिलों में न तो जिला सर्वोदय मण्डल ही बने हैं और जहाँ बने हैं, वहाँ भी ज्यादातर जिला सर्वोदय मण्डल सक्रिय नहीं हैं। प्राथमिक सर्वोदय मण्डल तो नाम मात्र के हैं। पंचायत के स्तर पर लोक सेवकों को दर्ज कर प्राथमिक सर्वोदय मण्डल बनाकर बुनियाद पक्की की जाय। आंदोलन सारे भारत मे लोक-आंदोलन कैसे बने और ग्रामदानी गांवों के संगठनो के आधार पर वह कैसे बढ़े, यह प्रश्न अभी अनुत्तरित है। आंशिक और पूरा समय देने वाले कार्यकर्त्ता साथियों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण समिति का गठन हुआ है। हमारे पारस्परिक सबंध प्रेमपूर्वक कैसे बढें, दृढ़ हों, यह सोचने की आवश्यकता होती है।

बादशाह खान साहब के भारत आगमन से एक नए युग का, एक नए जीवन का प्रारंभ हुआ है। ३० जनवरी, ४८ को जिस युग का अंत हुआ, वह वापिस आ रहा है, ऐसा लग रहा है।

अंत में आपने आशा प्रकट की कि संघ अधिवेशन हमारी कमियों को पूरा करने में सहायक होगा और एक नया प्रकाश यहाँ से हमें मिलेगा। यदि हम एकाग्रता से लगेंगे तो भारत के सारे दान का दिन दूर नहीं रहेगा।

श्री एस. जगन्नाथन् :

इसके बाद सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री एस. जगन्नाथन् ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होने कहा :

आज हम लोग एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना के बाद मिल रहे हैं–पूरे भारत में गांधी-जन्म-शताब्दी-समारोह आयोजन के बाद। जैसा आज रिवाज है इस सिलसिले में भी भाषण, परिसंवाद, प्रदर्शनियां वगैरह हुई। जिंदगी भर गांधीजी पहले कोई चीज स्वयम् कर लेते, उस पर प्रयोग करते और तब उस पर बोलते या प्रदर्शन करते थे। प्रदर्शन के पहले प्रयोग, यह उनका तरीका था। लेकिन हम बिना प्रयोग किए ही

www.vinoba.in

सिर्फ भाषण और प्रदर्शनों के शौकीन हैं। अपने देश में इस शताब्दी वर्ष के दौरान हम क्या देखते हैं कि गांधीजी के नाम पर कोई भी प्रयोग या काम किया जा रहा है। सारी गांधीशताब्दी भाषणों और परिसंवादों में ही करीब-करीब खत्म कर दी गई। सुप्रीम कोर्ट के एक जज श्री गोभर ने तो मजाक में यहाँ तक कह दिया है कि बातचीत पर टैक्स और भाषणों पर हर्जाना लगना चाहिए। लम्बी-लम्बी तकरीरें देना हमारी राष्ट्रीय आदत बन गई है। शायद वैसी ही गलती आज आपके सामने बोलनेके लिए खड़े होकर मैं भी कह रहा हूँ। सरकारी मंत्री वगैरह मुल्क के एक कोने से दूसरें कोने तक दौडते रहते हैं और इस गांधी शताब्दी वर्ष में तो किसी-न-किसी शिल्यान्यास या मूर्ति-अनावरण के बहाने उन्होंने और भी ऐसा किया है। क्या पार्लियामेण्ट, क्या राज्यों की एसेम्बलियां, लंबे भाषणो की हर जगह भरमार है। किसी हिसाब-किताब विशेषज्ञ को यह बताना चाहिए कि इस बातचीत में मुल्क का कितना वक्त बरबाद होता है। इसलिए, बातचीत पर हर्जाना लगाने से मुमकीन है हिन्दुस्तानी "बातूनी" लोगों के बजाय "काम करनें वालों" का मुल्क कहा जाने लगे। गांधीजी तो टनों बातचीत के बजाय रत्तीभर काम को ज्यादा पसंद करते थे। और दिल्ली में अपनी पहली आम सभा में सरहदी गांधी ने इसी बात पर जोर भी दिया। थोडी देर के लिए यह मान भी लिया जाय कि काम के पहले बात पर जोर भी दिया। थोड़ी देर के लिए यह मान भी लिया जाय कि काम के पहले बात और परिसंवाद वगैरह जरूरी है, तो क्या अब हम सिर्फ उन्हीं तक सीमित न रहकर किसी गंभीर कार्यक्रम में भी लगेंगे ? मुझे तो यह डर है कि महज बातें ही बातें की गई हैं।

कोरी तकरीरें और तंगदिल

आखिर हम बात भी क्या कर रहे हैं ! राजनीतिक लोग तो आजादी की लड़ांई के दिनों की अपनी कीर्ति का बखान करते हैं। ऐसे लोगों के लिए उनदिनों की याद मीठी सी हो सकती है। लेकिन मौजूदा पीढी को महज पुरानी बहादुरी की कहानियों से संतोष नही है। उन्हें तो ठोस काम चाहिए। बातें दिलों को हमेशा जोड़ती नहीं, कभी-कभी वे

उन्हें तोड़ती भी है। ज्यादा बात का मतलब है ज्यादा पार्टियां, जिनके बीच में भी "वाम" "दक्षिण" और "मध्य" जैसी चीजें रहती हैं। बिना काम के सिर्फ बातचीत आदमी को तंगदिल और छोटे दिमागवाला बना देती है। जब से गांधीजी गए हैं, राष्ट्र कितना छोटा हो गया है। क्या गजब की नेतागिरी थी उनकी, कितनी सार्वभौम; सबके दिलों को छूनेवाली! अब न मुल्क के स्तर पर ही कोई नेतृत्व है, न राज्यस्तर पर। हमारी तंगदिली ने हमें टुकडे-टुकड़े कर डाला है। गांधीजी की शहादत तक, यानी बीसवीं सदी की करीब-करीब आधी, हिन्दुस्तान के लिए गौरव का जमाना था। गांधीजी को मुल्क ने महात्मा करके जाना और वे सारी दुनियां के सरताज बने। सचाई और अहिंसा की बिलकुल नई ताकतों के बल पर उन्होंने इस बड़े मुल्क को आजादी दिलाई। उनके सबसे बड़े सिपहसालार नेहरू सारी दुनियां में मशहूर हुए। गांधीजी की खासियत इसमें भी थी कि वे लोगों का चुनाव कर उन्हें ट्रेनिंग के जरिए तैयार भी करते रहते थे—सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबु, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, सरहदी गांधी, जैसे लोग उनकी देखरेख में तैयार हुए। लेकिन बीसवीं सदी के दूसरे आधे में हम इतना गिर गए हैं कि अब न राष्ट्रीयस्तर के नेता हैं, न राज्यस्तर का नेतृत्व। जिधर देखिए, हम टूटे हुए-से दिखाई पड रहे हैं।

अभी भी खुमारी में

लेकिन गांधीजी के नजदीकी आश्रमों में रहनेवाले, जिन्हें लोगों की "आत्मा के रक्षक" भी कहा जाता है, उन रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं का क्या हाल है? हम रचनात्मक कार्यकर्त्ता लोग भी आजादी की लड़ाई में रचनात्मक कार्यक्रम के 'रोल' पर गर्व करते हैं, लेकिन इस गांधी शताब्दी के दौरान हमने रचनात्मक कार्यक्रमों, बुनियादी, तालीम नशाबंदी, कौमी एकता, अस्पृश्यता-निवारण आदि को जमीन में दफन कर दिया, कोई खास चीज तो किया नहीं। गांधीजी ने एक तरफ ईंट-ईंट रखकर और बीच में सत्याग्रह का पुट देकर मुल्क का राजनीतिक ढांचा तैयार किया था और दूसरी तरफ अखिल भारत चर्खा संघ, अखिल भारत ग्रामोद्योग

संघ, हरिजन सेवा संघ अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों को भी राष्ट्रीय स्तर पर संगठित किया था। हिंदुस्तान के इतिहास में शायद अपने तरह की यह अकेली मिशाल है, जब सामाजिक, आर्थिक क्रान्ति के लिए सारे मुल्क के स्तर पर एकता कायम हुई हो। गांधीजी के पास सारी दुनियां को नजर में रखकर देखनेवाली विशाल बुद्धि और दृष्टि थी। और इसी वजह से वे सारे मुल्क में क्रान्ति ला सके। सारा मुल्क उनकी दिल की धडकनों के साथ था। लेकिन उन्हीं की जन्म-शताब्दी मनाते हुए हमने अपने बीच अलगाव के कारण अपने को नीचे गिरा दिया है। हमने कौमी, क्षेत्रीय तथा भाषायी भेदों और मारकाट से गांधीजी को बदनाम किया है। इसमें सिर्फ राजनैतिक लोगों को ही दोष नहीं दिया जा सकता। रचनात्मक कार्यकर्त्ता भी तो नेतृत्व देने में असफल रहे हैं। गांधीजी के नामपर कोई आश्रम बनाकर या कोई संस्था खड़ी करके हम अपने-अपने घरौंदो में गुलाम-से हो गए हैं। सरकार से कुछ इमदाद लेकर, कुछ अनुदान पाकर हम खुश हो जाते हैं। हम रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं ने कोई कम दगा नहीं की है। लेकिन ईश्वर ने विनोबा जैसे मसीहा को भेजकर हमें बचा लिया। वही हम सब के उद्धारकर्ता हैं। उनके और उनके कार्य के बिना हम अब भी अंधेरे और नींद में पडे रहते। लेकिन क्या हम अब पूरी तरह से जग गए है? हम अब भी खुमारी में ही हैं। विनोबाजी के बार-बार कहनें पर भी अभी चारों तरफ से संगठित कोशिश नहीं हो रही है। हम लोगों का यह भूदान-ग्रामदान आंदोलन अभी गति शील नहीं बना है। एक राष्ट्रीय आंदोलन नही बना है. क्यो? इसलिए कि हम लगातार पूरी मेहनत नहीं कर रहे है। हम लोग स्वतंत्ररूप से सोचकर काम भी नहीं करते। हम किसी न किसी के नेतृत्व पर बहुत ज्यादा निर्भर रहते हैं। विनोबाजीने हमारी भलाई के लिए ही नेतृत्व करना छोड दिया है। वह एक क्रान्तिकारी हैं। वह व्यक्ति पूजा नहीं चाहते। आप जानते ही हैं कि कम्युनिस्ट भी अपने ढंग से व्यक्ति पूजा खत्म कररहे है। विनोबाजी तो कहते है कि "लीडरशिप" का जमाना गया और अब यह समूह नेतृत्व का युग आया है। फिर भी, अपने देश के रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने इस

आंदोलन को पूरी तरह से नहीं अपनाया है। हम लोग मिलीजुली कोशिश के लिए अभी एक नहीं हुए हैं। हम जानते है कि विनोबाजीने वर्षों अपने को रचनात्मक कार्यक्रम में खपाया है, वह रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सरताज है, फिरभी उनके बताए रास्ते पर चलने में हम काफी समय तक हिचकते रहे है। वह कोई तानाशाह तो है नहीं। उनका व्यक्तित्व तो एकदम लोकतांत्रिक है। व्यक्तिवादी तो हमी है। सामूहिक निर्णय और काम के लिए हम साथ नहीं बैठते। इसलिए अहिंसक क्रांतिका यह अनोखा मौका हम खोरहे है।

फंसी हुई नाव

विनोबाजीने काफी पहले यह चाहा था कि इस देश में जनता का एक आंदोलन खड़ा हो, लेकिन इस आंदोलन में अभी जनता पूरी तौर से लगी नही है। भूदान का समाज पर एक खास असर हुआ। भूमिहीनों की भूमिहीनता मिटाने की दिशा में निश्चितत: कुछ सफलता मिली। हम यह दावा भी करते हैं कि सरकारी कानून के मुकाबले हमें ज्यादा जमीन मिली है। इस तरह हमें ४२ लाख एकड़ जमीन मिली। इसमें शक नहीं कि यह एक बडी सफलता है। सरकार का हमसे कोई मुकाबला ही नही है, क्योंकि भूदान इकट्ठा करते-करते हमने लोगों को यह अच्छी तरह से समझा दिया कि "सबै भूमि गोपाल की" यानी समाज की है। सरकार से यह सब कभी हो नहीं सकता। लेकिन हम कभी अपनी असफलता का भी ध्यान करते हैं कि पांच करोड़ भूमिहीनों के लिए विनोबाजीने जो पांच करोड़ एकड़ भूमि की मांग रखी थी वह हम पूरी नहीं कर सके, और जो भूमि मिली भी उसके बँटवारे में हम बेहद देर कर रहे हैं? अगर हम पांच करोड़ एकड़ इकट्ठा करने के लक्ष्य पर डटे रहते और उसे प्राप्त कर लेते और साथ ही जमीन बांटने की रफ्तार भी तेज कर देते तो बेशक यह एक कौतुक होता और हम क्रान्ति के निकट होते। लेकिन यहाँ हम असफल रहे और आंदोलन ने ग्रामदान की शक्ल पकड़ी। विनोबाजी की दैविक बुद्धि का यह एक कमाल है। ग्रामदान का विचार और उससे हो सकनेवाला ग्राम-स्वराज हमें बहुत

www.vinoba.in

प्रिय है। ग्रामदान ने भविष्य की, उसके राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक अर्थों के साथ एक स्पष्ट तस्वीर हमारे सामने रखी है। लेकिन ग्रामदान के विचार पर अभी अमल नहीं हो रहा है। तो बिना अमल या इस्तेमाल के बड़े विचार का मतलब ही क्या है? इसीलिए हम देखते हैं कि इस चीज का समाज पर कोई असर नहीं है, हाँलाकि हमें प्रखण्ड-दान, जिलेदान मिलते ही जा रहे हैं। और हम राज्यदान के नजदीक पहुँच गए हैं। आंदोलन जैसे रुकसा गया है। असलियत तो यह है कि नाव ही फंस गई है; वह इधर-उधर हिलने-डुलने लायक अब नहीं है। लोगों के काम में कोई जान हीं नहीं लगती और इसीलिए हमारा आंदोलन भी अब आगे बढ़ नहीं पा रहा है।

ग्रामसभा : विधायक क्रान्ति का माध्यम

लेकिन लोगों को अब आगे बढना चाहिए। अब हमें ग्रामदानी क्षेत्रों में लोगों के अभिक्रम पर ताकत लगानी है। यही असली मौका है। अगर जिलादान के बाद लोग अपनी ताकत से अपनी समस्याएं नहीं सुलझा सकते तो समझिए कि कहीं कोई बड़ी कमी है। प्रखण्डदान, जिलादान आदि के ग्रामदानी लोगों को अब भूमिवितरण ग्राम-कोष के संयोजन और ग्रामहित की दृष्टि से नियोजित उत्पादन में लग जाना चाहिए। ग्रामसभा की मार्फत यही विधायक क्रान्ति है। इस काम में जो अड़चन सामने आये, लोग उसे दूर करें और अगर अड़चन वैधानिक तरीके से दूर न हो तो सत्याग्रह का इस्तेमाल किया जाय। लेकिन अगर ग्रामदानी लोग गाँव, प्रखण्ड और जिले के स्तर पर काम आगे बढ़ाने में नहीं लगते तो राज्यदान के बाद फिर वही खालीपन और बेबसी नजर आने लगेगी। इसलिए राज्यदान के लिए की जा रही कोशिशों के साथ-साथ गाँव और प्रखण्ड के स्तर पर ग्रामसभा को मज़बूत बनाने पर हमारी ताकत लगनी चाहिए। यहाँ मैं किसी नमूने के गाँव या आदर्श टुकड़े की बात नहीं कर रहा हूँ, जैसा कि हमारे आलोचक हमसे बार-बार माँग करते रहते हैं। यह सब नहीं, मैं केवल ग्रामसभा के जरिये ग्रामदानी लोगों के सक्रिय होने की बात कर रहा हूँ, ताकि वे अपनी

रोजमर्रा की समस्याओं से जूझना शुरू कर दें। ग्रामसभाओं की मार्फत हम ऐसा कोई कार्यक्रम जरूर बनायें। ग्रामदानी समुदायों की प्रगति में खुद भूमि-समस्या से ही लगी हुई अनेक अड़चने हैं। आखिर ग्रामदान आन्दोलन में भूमिहीन और थोड़ी जोत के किसान ही तो शामिल हुए हैं! कुछ बड़े जमींदार भी आये हैं, लेकिन बहुत-से नहीं भी आये हैं। जो शामिल भी हुए हैं वे सिर्फ बीसवाँ हिस्सा ही तो देते हैं। तो, क्या समुदाय-हित की दृष्टि से ग्रामसभाएँ भूमिवानों की शेष भूमि की भी काश्त अपने हाथ में ले सकती है? इसके साथ ही अनुपस्थित जमीदार 'एब्सेन्टी लैण्डलार्डिज्म' की लगातार बढ़ती जानेवाली समस्या भी है। अनुपस्थित जमींदारों की जमीन ग्रामसभाओं के प्रबन्ध में आनी ही चाहिए। इसके बाद मंदिरों, मठों, ट्रस्टों और बेकार पड़ी सरकारी जमीनों का मसाला है। इन सभी मुश्किलों का सामना करने के लिए ग्रामसभाओं को विकसित करना चाहिए नहीं तो हमारा काम एकतरफा ही रहेगा। ग्रामदान-प्राप्ति लोगों के काम की शुरुआत भर है। ग्रामदान से हमें एक आदर्श संगठन मिल जाता है। इन ग्रामसभाओं की मार्फत हमको समस्याओं का सामना करना चाहिए। तब ये ग्रामसभाएँ क्रान्ति की सक्रिय गत्वर घटक 'सेल' बनेगी। बस, अब हम डाँड़ पकड़कर बैठे न रहें। मुझे निश्चय है कि अगर इस गांधी संवत्सरी के बीच प्रखण्ड तथा जिले के स्तर पर भूमि-वितरण और पेचीदी भूमि-समस्याओं के हल के लिए ग्रामसभाएँ सक्रिय होती हैं, तो अनिवार्यतः आनेवाली आर्थिक क्रान्ति के लिए देश गांधीजी के रास्ते चल निकलेगा।

इसे अब और न टालें

बाबा (विनोबा) ने बिहार को इस प्रयोग के लिए तैयार किया है। यहाँ राज्यस्तरीय इकाई एक ताकतवर राजनीतिक इकाई है। बाबा ने बिहार को ठीक ही चुना है। यह सिर्फ बुद्ध की ही नहीं, बल्कि जे० पी० (जयप्रकाश नारायण) जैसे देश के बड़े नेता और क्रान्तिकारी की भी भूमि है। जिन्होंने बुद्ध की ही तरह सत्ता का त्याग किया है। इसलिए सन् १९७० तक बिहार हमारे सामने क्रान्ति का नया चरण उद्घाटित

करेगा और सन् १९७२ तक चुनाव में ग्रामदानी प्रतिनिधियों को खड़ा कर लोकनीति का अनोखा प्रयोग प्रकट करेगा।

अब हमें कार्य का विधायक अहिंसात्मक तरीका लोगों के सामने रखना चाहिए। अपने देश में बढ़ते हुए हिंसात्मक वातावरण का सिर्फ यही एक जवाब है। अभी तो हम साम्प्रदायिक दंगों, क्षेत्रीय उपद्रवों, श्रमिकों के बढ़ते असन्तोष आदि को सिर्फ बेबसी से देखते भर रहते हैं। साम्प्रदायिक अशान्तियों—पहले इन्दौर और अब अहमदाबाद—असम में दूसरे तेल-शोधक सम्बन्धी उपद्रवों, पंजाब और हरयाणा में चंडीगढ़ के लिए होनेवाले भारी उपद्रव की धमकियों, तेलंगाना के प्रश्न को लेकर आन्ध्र में चल रही कटुता, पश्चिमी बंगाल में बराबर होनेवाले घेरावों तथा देश के अन्य भागों में होनेवाले श्रमिक असन्तोष आदि से लोगों की ताकत बरबाद होती है, और उनका ध्यान असली चीज से हटता रहता है। यह सब नाटक तबतक चलेगा जबतक हम अपना बचाव ढूंढ़ते रहेंगे। बस, हमें विधायक क्रान्ति में लग जाना है। गांधीजी के नेता-रूप में पदार्पण के पहले देश में सशस्त्र विद्रोह की भूमिका थी। यह उन्हींकी विलक्षण प्रतिभा थी कि उन्होंने एक अहिंसक विकल्प सामने रखा। नतीजा यह हुआ कि हिंसात्मक शक्तियाँ दबीं। हिंसात्मक क्रान्ति में विश्वास रखनेवालों का भी मत-परिवर्तन हुआ और वे भी अहिंसा के भक्त बने। स्थायी मूल्यों की क्रान्ति में समय लगता है। ग्रामदान के जरिये जन-आन्दोलन का एक मजबूत आधार विकसित करने में भूदान-आन्दोलन को करीब १८ साल लगे हैं। ग्रामदान का लक्ष्य और संगठित ग्रामसभा आदर्श हथियार है। मित्रो, मैं चाहता हूँ कि जहाँ ग्रामदान नहीं हुए हैं, देश के ऐसे हिस्सों में भी ग्रामदान-आन्दोलन आग की तरह फैले। देश के अनेक हिस्सों में अभी 'तूफान' को पहुँचना बाकी है। गांधीसंवत्सरी वर्ष में देश में फैले सात लाख गाँवों तक न सही, लेकिन जहाँ तक मुमकिन हो, अधिकाधिक राज्य-दान हों। हम यह सब करें, लेकिन इतना जरूर ध्यान में रखें कि ग्रामदान-भावना से प्रेरित लोगों का विधायक कार्य, भूमि-वितरण, सामूहिक ग्रामकोष द्वारा ग्राम-निर्माण की कोशिश और भूमि-समस्याओं के सुलझाव के लिए ग्रामसभा की गतिशीलता का सारे देश में आन्दोलन पर बड़ा अच्छा असर

होगा। प्रखण्ड या जिला-स्तर पर हमें जहाँ कहीं भी ग्रामदान मिले हैं, वहाँ लोगों द्वारा कार्यान्वित किये जानेवाले कार्यक्रम का हमें महत्त्व समझ लेना चाहिए। हम इस काम को अब और न टालें, क्योंकि इससे स्वयं आन्दोलन की हानि होगी।

संघर्षों की चुनौती

आपकी मुझसे और क्या आशा है? जागतिक स्थिति या अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की समीक्षा की मुझमें योग्यता नहीं है। आगे दूर तक देख सकने के लिए जे० पी० हम लोगों के दिमाग की खिड़कियाँ खोलते रहते हैं। अगर धर्मान्ध लोग साम्प्रदायिक घृणा को सामूहिक पागलपन और मारकाट के रूप में भड़का सकते हैं, तो मेरा तो यही कहना है कि शान्ति-सेना कार्यक्रम में हम बुरी तरह असफल रहे हैं। हमने कोई विधायक अहिंसक कार्यक्रम लोगों के सामने नहीं रखा है। क्या हम यह दावा कर सकते हैं कि शान्ति-सैनिक के रूप में हमने कहीं भी किसी निश्चित विधायक कार्यक्रम के साथ काम किया है? हाँ, हम किसी हिंसात्मक घटना का इन्तजार जरूर करते रहते हैं। और अब काफी देर से और इतने दबे ढंग से हम काम करते है, कि उसका कोई खास असर नहीं होता। शान्ति-सैनिक रूप में हमारे पास लोगों की समस्याएँ सुलझानेवाला कोई कार्यक्रम नहीं है। आर्थिक और राजनीतिक संघर्ष के 'पाकेट' देश में कई है जहाँ जोरदार हिंसा फूट पड़ती है, और ऐसे पाकेट बढ़ ही रहे हैं। नक्सालवादी, तंजौर आदि क्षेत्रों में प्रभावशाली अहिंसात्मक विकल्प का प्रदर्शन होना ही चाहिए। आज खुदाई खिदमतगार, परमात्मा के सेवक सरहदी गांधी हमारे बीच है। देश में शांतिसेना के प्रभावशाली कार्यक्रम के लिए क्या हम उनका मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे? इतिहासचक्र तेजी से चल रहा है। सरहदी गांधी अपना पख्तूनिस्तान का लक्ष्य किसी-न-किसी शक्ल में प्राप्त करनेवाले हैं। ईश्वर की मर्जी हुई तो हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बीच अच्छे सम्बन्धों की वह कड़ी बन सकते हैं, और उनके मार्फत कश्मीर समस्या भी शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझ सकती है। यह सब हो जाने पर हमारा ताकतवर पड़ोसी चीन आसानी से दबाया जा सकता है। आसार तो अच्छे नजर

www.vinoba.in

आने शुरू ही हो गये हैं। चीन, हिन्दुस्तान और रूस से सीधे बात भी करना चाहता है।

अफ्रीका की ओर

आपकी इजाजत हो तो मैं कुछ भरे हृदय से अपने पड़ोसी देशों, विशेषकर अफ्रीका महाद्वीप, से अपने सम्बंधों की चर्चा करना चाहूँगा। पश्चिमी देशों से हमें काफी आर्थिक सहायता मिलती है। हमारे लिए यह शर्म की चीज है। हम विदेशी सहायता पर बहुत ज्यादा निर्भर हैं। हम उन्हीं देशों से अपना व्यापार भी बढ़ा रहे हैं। सफेद चमड़ी के लिए हममें एक आकर्षण है। भूरा भारतीय गोरे लोगों और गोरी चीजों की ओर बड़ा आकर्षित होता है। भूरा हिन्दुस्तानी सफेद अंग्रेज या अमरीकी से देशाटन के दौरान काफी मिलता-जुलता है। जातपाँत में विश्वास रखनेवाला हिन्दुस्तानी रंग का बड़ा कायल होता है। सवाल यह है कि अपने अफ्रीकी भाइयों की ओर हमारा क्या मानस है? हम जरा अपने दिलों को टटोलें। असलियत यह है कि अफ्रीकी भाइयों के प्रति अपने को मित्र साबित कर सकने लायक हमने बहुत कम किया है। हिन्दुस्तान आनेवाले अफ्रीकी विद्यार्थियों की यह शिकायत रहती है कि हिन्दुस्तानी विद्यार्थी रंगभेद रखते हैं, और उनसे बहुत कम मिलते हैं। अपने साथ भारत से प्रवास-काल की सुखद स्मृतियाँ ले जाने के बजाय वे हिन्दुस्तान के प्रति एक पूर्वाग्रह (प्रेजुडिस) लेकर लौटते हैं। लानत है इस जातिग्रस्त हिन्दुस्तान को। मजा तो यह है कि ब्राम्हण जाति अस्पृश्यता की भावना आसानी से छोड़ सकती है, लेकिन गैर-ब्राह्मण उसे मजबूती से पकड़े रहेगा। सफेद लोगों में ही अफ्रीका की आदिम कला अब एक फैशन बन गयी है, लेकिन हम अभी उस तरफ से उदासीन हैं। क्या हमें इस बात का एहसास है कि सहकार और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने मित्र बढ़ाने की दृष्टि से भारतीय-अफ्रीकी मैत्री का कितना महत्व है? अफ्रीकी राष्ट्रों के प्रति अपनी जानकारी और अच्छी बनाने के लिए हिन्दुस्तान को और ज्यादा कोशिश करने की जरूरत है।

कभी-कभी हिन्दुस्तानी सांस्कृतिक टीमें अफ्रीका जाती भी हैं और हिन्दुस्तानी फिल्में वहाँ लोकप्रिय भी हैं लेकिन अगर हिन्दुस्तान और अफ्रीका के लोगों को एक-दुसरे के करीब लाना है तो इससे कहीं ज्यादा करने की जरूरत है। हिन्दुस्तान और अफ्रीकी देशों के बीच प्राध्यापकों, कलाकारों, नर्तकों और गायकों का आदान-प्रदान और तेजी से किया जाय। अफ्रीकी लोगों के हर तबके को यहाँ की सरकार व सांस्कृतिक संगठन आमंत्रित करें। हिन्दुस्तानी विश्वविद्यालयों में अफ्रीकी इतिहास व राजनीति पर पाठ्यक्रम रखे जायँ। भारतीय विद्यार्थी पश्चिमी दुनिया के मामलों में ज्यादा रुचि लेते हैं। समय आ गया है कि अफ्रीका महाद्वीप से निकलनेवाली नयी चीजों का भारतीय विद्यार्थी अध्ययन करें।

एका चमत्कार होगा

हिन्दुस्तान की तरह अन्य जगहों में भी लोगों की धार्मिक भावना का निहित स्वार्थों द्वारा गलत इस्तेमाल किया जाता है। अल-अक्सा मस्जिद को ही लीजिए, जो एक बड़ा स्मारक है। सन् १९६१ में मैंने जेरूसलम में स्वयं वह विशाल इमारत देखी थी। पूजा की इस सुन्दर जगह में आग लगा देना पागलपन नहीं तो और क्या है? वह आस्ट्रेलियन युवक निश्चित ही पागल रहा होगा, जिसने ऐसा किया। लेकिन क्या ईश्वरके नाम में लड़ाई छेड़ने के लिए अनेक देशों को एकमत होने का यह कोई बहाना चाहिए? पूजा की एक जगह मात्र के लिए क्या मुसलमानों और यहुदियों को एक-दुसरे के खिलाफ हमेशा लड़ते रहना चाहिए? ईश्वर के नाम में और धर्म की रक्षा के लिए कितना ही खून यह दुनिया बहा चुकी है। क्या ईश्वर का हमारे लिए यही आदेश है? स्वर्ग में रहनेवाले परमात्मा के नाम में लड़ना एक सामूहिक पागलपन ही होगा, क्योंकि वह यही चाहता हैं कि हम सब एक मानवपरिवार की तरह रहें। हिन्दुस्तान में भी वही गंदा खेल चल रहा है। हिन्दू मुसलमान, दोनों के भोले-भाले लोगों की धार्मिक भावना का राजनीतिज्ञों और धनिकों-जैसे निहितस्वार्थों द्वारा गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। जगन्नाथ मन्दिर की गायों को मुसलमानों द्वारा रोक दिया जाना इतनी बड़ी साम्प्रदायिक आग भड़काने व मार-काट शुरू करने का

महज एक बहाना है। भोले-भाले लोग निश्चित ही निहित राजनीतिक स्वार्थों द्वारा गुमराह किये जा रहे हैं। हिन्दू-मुसलमान, दोनों के गरीबों की तकलीफ देखकर सरहदी गांधी द्रवित हो गये हैं। यह देखकर हमें बरबस नोआखाली में घूमते बापू की याद आ जाती है। भगवान के हम फिर कृतज्ञ हैं कि उसीका यह सेवक खुदाई खिदमतगार, बादशाह खान, उत्तरी-पश्चिमी चोटियों से उतरनेवाला यह ऋषि आज हमारे बीच है। वे ही एक आदमी हैं जो टूटे दिलों को सान्त्वना दे सकते हैं और उन्हें ईश्वर तथा सत्य के प्रति प्रेम के जरिये जोड़ सकते हैं। ईश्वर करे उन्हें इस काम में सफलता मिले! शान्ति-सेना के लिए वह ईश्वर द्वारा भेजे हुए सेनापति हैं। अगर शान्ति-सेना उनके मार्गदर्शन में काम करे तो मुझे पूरा यकीन है कि हिन्दुस्तान में एक चमत्कार होगा और हिन्दू-मुस्लिम-एकता एक असलियत बनेगी। इसी काम के लिए शहीद होनेवाले राष्ट्रपिता को इससे अधिक खुशी और किसी चीज से नहीं होगी। सर्व सेवा संघ को चाहिए कि वह सरहदी गांधी से शीघ्र से-शीघ्र मिले और लाखों गरीबों की खिदमत के लिए उनका मार्गदर्शन ले। गरीबों की भलाई के लिए बस उन्हींकी एक ताकतवर आवाज है।

खण्डित नहीं, संयुक्त का समर्थन

उत्तरी वियतनाम से अमेरिकी सेनाओं का जल्दी ही हटा लिया जाना आज के मौके की जरूरत है। हमें खुशी है कि अमेरिकी जनता शान्ति की शक्तियों को बढ़ावा दे रही है और इसीलिए वहाँ वियतनाम युद्ध खत्म करने के लिए आम लोगों का एक बड़ा प्रदर्शन भी हुआ था। मुझे निश्चय है कि श्री निक्सन को लोगों की आवाज की कद्र करनी होगी। श्री कौल के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधियों और अमेरिकी अण्डरसेक्रेटरी के बीच उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम, दोनों की संयुक्त राष्ट्रसंघ में जगह दिलाने के लिए हुई वार्ता हमारी नजर में दोनों के ही वियतनामों के खयाल से जल्दीबाजी की व अशोभनीय चीज है, उसके पीछे चाहे जो नेक इरादे रहे हों। यह सोचना, कि लड़ाई के बादवाले इस वियतनामी सुलझाव का दुनिया के अन्य बँटे हिस्सों पर अच्छा असर होगा और दो कोरिया, दो

जर्मनी या कहिए दो चीन को दुनिया मान्यता दे देगी, बहुत ज्यादा उम्मीद रखना और गलत कहा जायगा। इस तरह संयुक्त राष्ट्रसंघ एसेम्बली फिर लड़ाकू राष्ट्रों का अड्डा बनेगी और बड़े राष्ट्रों के तिकड़म के कारण उनमें कभी मेल न होगा। सच कहिए तो संयुक्त कोरिया या संयुक्त जर्मनी ही संयुक्त राष्ट्रसंघ के लिए असली ताकत बन सकता है। इन देशों की परस्पर-विरोधी इकाइयाँ तो राष्ट्रसंघ को ही कमजोर कर देंगी। अमेरिका तो यह चेतावनी भी दे रहा है कि अगर हिन्दुस्तान ने अपने उत्तरी वियतनामी दूतावास का दर्जा ऊँचा किया तो यह चीज अमेरिका के खिलाफ दुश्मनी समझी जायगी। इसलिए ये देश अगर संयुक्त राष्ट्रसंघ असेम्बली में एक बार दो इकाइयों की शक्ल में घुस गये तो उनके फिर मिलने की न कोई उम्मीद रखनी चाहिए और न उनका वहाँ रहना दुनिया के लिए कारगर ही हो सकेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ में जाने के पहले वियतनाम हो या कोरिया, उन्हें एक होना ही चाहिए। हो सकता है, मैं कुछ गलत कह रहा होऊँ। इन मामलों में जे० पी० हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

समय का तकाजा : सीधी कार्यवाही

भाइयो, आप सभी समझते हैं कि आज समय का जोर किस चीज पर है। हम लोगों ने काफी देरी यों ही कर दी है। हम लोग काम करने में, चुनौती देनेवाली स्थितियों का मुकाबिला करने में हिचकते हैं। चारों तरफ समस्याएँ-ही समस्याएँ हैं। चाहे हम केरल के किसी क्षेत्र में हों या तमिलनाडु या पश्चिमी बंगाल के नक्सालवादी या कश्मीर में हों, हमें सत्याग्रही लोकसेवकों और सचाई की खोज करनेवालों की तरह मेहनत से काम करना चाहिए। हम सिर्फ लोकसेवक ही नहीं, सत्याग्रही लोकसेवक हैं, जैसा कि विनोबाजी ने हमारा नाम रखा है। लेकिन आज हम बिना सत्याग्रह, बिना सचाई की खोज के ही लोकसेवक हैं। इसलिए हम कमजोर भी हैं। हममें वह गत्वर क्रियाशीलता ही नहीं है, जिससे हम सत्याग्रही लोकसेवक कहे जा सकें। विनोबाजी तो आज की नेतागिरी के खिलाफ हैं। सूक्ष्म-प्रवेश के जरिये वह लोगों को वही ट्रेनिंग दे रहे हैं कि अपना नेतृत्व वे खुद करें। वह चाहते हैं कि हम सभी जिम्मेदारी से काम करें। वह

सिर्फ हमारा इम्तहान भर ले रहे हैं। आप सभी जानते हैं कि जब भी किसी सही चीज के लिए लोग सीधी कार्यवाही करते हैं तो विनोबा और जे० पी०, दोनों आशीर्वाद देते हैं। तमिलनाडु का उदाहरण हमारे सामने हैं। हममें से हर एक काम कर सकता है। हम सभी यह जानते हैं कि पश्चिमी बंगाल के नक्सालवादी, तामिलनाडु के तंजौर और केरल के कुट्टनाद के इलाके के लोग हिंसात्मक उपायों से अब ऊब गये हैं; वे महज कोई विकल्प चाहते हैं। अगर सर्वोदयी कार्यकर्ता कोई अहिंसात्मक रास्ता दिखायें तो उन्हें बड़ी खुशी होगी। तंजौर जिले में इस चुनौती के मुकाबिले के लिए एक प्रयोग शुरू भी किया गया है। शंकररावजी वहाँ कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। तंजौर जिले में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को एक रचनात्मक आन्दोलन की तलाश है। अब जरूरत है ग्रामसभाओं के जरिये जनशक्ति विकसित करने की। नक्सालबाड़ी जैसी चुनौतियों का हमें हिम्मत से सामना करना चाहिए।

विनोबाजी की अनुपम खोज ग्रामदान भेजकर भगवान ने हम पर कृपा की है। अब हमें ग्रामसभाओं की मार्फत लोगों को काम में लगा देने की कोशिश में लगना है। ग्रामसभा क्रान्ति का घटक (सेल) है और ग्रामस्वराज्य की मार्फत वह ईश्वर-प्राप्ति का, दुनिया में ईश्वर का राज लाने का वाहन भी। भगवान हमारा मार्गदर्शन करे!

इसके बाद श्री विनोबाजी का प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि संघ अधिवेशन और सर्वोदय सम्मेलन मुक्त चर्चा और आपसी स्नेह का आधार बने।

विनोबा :

मालूम नहीं, क्या बोला जाय! हम तो मुख्यतः दर्शनानंद पाते हैं। यह तो महासभा इकट्ठा हुई है उसमें सहस्रशीर्षः सहस्राक्ष सहस्रपात, भगवान के हजार सिर हैं, हजार आँखें हैं, हजार पाँव हैं। भगवान का दर्शन यहाँ होता है। भारत के लोगों को दर्शनानंद में बडी श्रद्धा है। बहुत लोग आते है, दर्शन करते है और परितृप्त होकर जाते हैं। यह तो यहाँ की जनता

www.vinoba.in

का स्वभाव है। वह बाबा को भी प्राप्त है। और बाबा को दर्शन में सबसे अधिक आनन्द होता है। बोलना तो गौण है। कहा गया है कि सबसे श्रेष्ठ है कृति, उसके बाद दर्जे में कम वाणी, उसके बाद, अन्तर की बात तो भगवान ही जानता है, मन। लेकिन बाबा उससे उलटा मानता है। बाबा समझता है कि सबसे कम परिणाम इस दुनिया और अन्तरात्मा पर किसी चीज का होता है तो वह कर्म का। उससे बहुत ज्यादा परिणाम वाणी का होता है, शब्द का होता है।

बहुत दफा मैं यह वाक्य बोल चुका हूँ—"शब्द शक्तेः अचिंत्यत्वात्" शंकराचार्य का वाक्य है। शब्द में कितनी शक्ति है, कोई कह नहीं सकता। उन्होंने मिसाल दी—'सुषुप्त पुरुषा', सोये हुए मनुष्य को शब्द से जगाया जाता है। शंकराचार्य को यह महान चमत्कार मालूम हुआ। हमको तो इसमें कोई चमत्कार मालूम नहीं होता। लेकिन शंकराचार्य कहते हैं कि यह बडा चमत्कार है कि शब्द से सोये हुए मनुष्य को जगाया जाय। आज विज्ञान के कारण ऐसी शक्ति प्रकट है कि एक जगह बैठकर कुल दुनिया में शब्द पहुँचता है। लेकिन वह चमत्कार बहुत छोटा है। यहाँ का शब्द अमेरिका में पहुँचे तो भी अमेरिका और यह देश, दोनों एक ही 'प्लेन' पर एक ही भूमिका पर हैं। लेकिन सोया हुआ मनुष्य ब्रह्मलोक में है, इस लोक में नहीं। वहाँ पर उसका एहसास है नहीं कि वह इस दुनिया में है, तो वह है ब्रह्मलोक में, और हम हैं भू-लोक में। अमेरिका और हिन्दुस्थान, दोनों भू-लोक मे है तो भू-लोक की खबर दो मिनिट में पहुँचायी जाती है तो वह बड़ा चमत्कार नहीं। लेकिन भू-लोक से ब्रह्मलोक के मनुष्य को जगाया जाय यह बहुत बडा चमत्कार है, और वह शब्द से होता है। इसलिए शंकराचार्य को वह चमत्कार मालूम हुआ। शब्द-शक्ति अचिन्त्य है और जितनी शब्द में शक्ति है उससे बहुत अधिक शक्ति चित्त में पडी है, चिन्तन में पडी है, ध्यान में, समाधि में पडी है, शून्यावस्था में पडी है। इसलिए सब लोग यहा इकट्ठा हुए है तो प्रेम के लिए इकट्ठा हुए है। तो प्रेम के लिए थोडा बोलना भी पडेगा।

सर्वोदय सम्मेलन : स्नेह सम्मेलन

ऐसे सम्मेलन को बाबा एक ही नजर से देखता है, स्नेह-सम्मेलन ! स्नेह के लिए एकत्र होते हैं। यह ठीक है कि कोई कार्य का निमित्त स्नेह करना होता है तो यह अपेक्षा नहीं रहती कि इकट्ठा मिलें। स्नेह तो दूर रहकर भी कर सकते हैं। इकट्ठा मिलेंगे तभी स्नेह होगा, इतना स्नेह परावलम्बी नहीं है। स्नेह के लिए तो इकट्ठा मिलने की अपेक्षा नहीं, लेकिन स्नेह के प्रकटन के लिए निमित्त होता है तो सर्वोदय-सम्मेलन एक निमित्त है। इसमें हम बैठेंगे, खेलेंगे, बोलेंगे, मजा करेंगे, सांस्कृतिक कार्यक्रम करेंगे। काम तो अपने-अपने स्थान पर कर ही रहे हैं, तो यहाँ आकर थोड़ी बात भी काम की कर लेते हैं, लेकिन वह जरा गौण है। मुख्य तो स्नेह है। मुझे सहज याद आया भगवद्गीता का शब्द–'सर्वत्र अनभिस्नेहः', जिसका कहीं भी स्नेह नहीं, बड़ा विचित्र शब्द है। स्थितप्रज्ञ का लक्षण वर्णन करते हुए इस शब्द का इस्तेमाल किया है। इतना स्नेहशून्य स्थितप्रज्ञ कैसे पसन्द किया होगा भगवान कृष्ण ने, जिनका जीवन अत्यन्त स्नेहमय था ! आप सब जानते हैं कि राम यानी सत्य, कृष्ण यानी प्रेम और बुद्ध यानी करुणा, सत्य-प्रेम-करुणा। प्रेम के अवतार कृष्ण और वह स्थितप्रज्ञ का वर्णन करते हुए 'अभिस्नेह' शब्द का प्रयोग करते हैं। तो ज्ञानेश्वर महाराज ने उसकी व्याख्या की है, ऐसी व्याख्या मैंने और किसी भाषा में नहीं देखी। उन्होंने स्नेह और अभिस्नेह में फर्क किया है। अभिस्नेह यानी कम-बेशी स्नेह नहीं। जिसका स्नेह किसी पर कम, किसी पर अधिक नहीं, और उसके लिए उपमा दी कि चन्द्रमा होता है वह सबके लिए समान आनन्ददायी होता है। खास व्यक्ति-विशेष पर उसका स्नेह नहीं, वह अभिस्नेह। यह ज्ञानेश्वर महाराज की विशेषता है। उन्होंने अभिस्नेह को शुष्कता से बचाया।

मेरे प्यारे भाईयो, हम सारे यहाँ स्नेह के लिए एकत्र हुए हैं। यहाँ पर खूब चर्चा करनी चाहिए और अपने-अपने स्थान पर अर्चा करनी चाहिए। भगवान की सेवा, पूजा तो आप जहाँ जायेंगे, करेंगे ही। वह तो आपका काम ही है। लेकिन आप यहाँ अर्चा के लिए नहीं आये, बल्कि

www.vinoba.in

चर्चा के लिए आये हैं। यहाँ उस चर्चा में कोई मर्यादा नहीं है, सिवाय जो नैतिक मर्यादा मानी जाती है। सब प्रकार के सवाल उठने चाहिए--सीधे, टेढ़े-मेढ़े तिरछे आदि, और चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि यह सवाल कानून के अन्तर्गत है या नहीं। यहाँ स्नेह का ही कानून है, इसलिए कोई भी सवाल उठा सकते हैं। अब 'कामन सेंस' नाम का एक 'सेंस' है, उसके अन्दर-अन्दर सवाल उठा सकते हैं। लेकिन किसीके पास 'कामन सेंस' न हो, 'न कामन सेंस' हो तो भी उठा सकते हैं। तब यह नहीं कह सकते कि 'कामन सेंस' के अभाव में उठाया गया। यह कहेंगे तो वह कहेगा कि यह मेरा 'स्पेशल सेंस' है।

हमारे एक प्यारे भाई हैं वसन्तराव नारगोलकर, बिलकुल वसन्त ऋतु के समान निरन्तर सेवारत हैं। वे आये थे और बहुत-से सवाल हमको पूछे। उन्होंने कई सवाल इकट्ठे किये हैं। उन्होंने कहा कि मैं ये सवाल सम्मेलन में रखनेवाला हूँ। मैंने कहा कि सब सवाल जरूर रखिए और भी जो समय पर सूझें वे भी रखिए। उनका नाम तो मैंने सहज ही लिया। लेकिन यहाँ अनेक यति, मुनि, कवि दिखते हैं। वे इसका जवाब देंगे। यह चलेगा पूर्ण स्वतंत्रता से। यह हुआ नम्बर एक।

नम्बर दो, हमने एक प्रस्ताव कर रखा था रायपुर-सम्मेलन में, जिसमें मैं इसके पहले गया था और उसके बाद यहाँ आया हूँ। उसमें हमने प्रस्ताव किया था--एक ग्रामदान का, दूसरा ग्रामाभिमुख खादी का, अर्थात् ग्रामाधार खादी का और ग्रामोद्योग का, और तीसरा शान्तिसेना का। लोगों ने और भी विषय सुझाये थे, लेकिन कहा गया था कि सब विषयों का समावेश इन तीनों में हो जाता है। इसलिए उनको अलग से लेने की जरूरत नहीं है। तो ये तीन प्रस्ताव वहाँ हुए थे। हमको इस वक्त सोचना चाहिए कि उनके अमल के बारे में हम क्या-क्या कर पाये हैं और क्या-क्या नहीं कर सके, क्या न्यूनता रही है, बजाय इसके कि कोई नया प्रस्ताव हम यहाँ करें। जरूरत पड़े तो वह भी करें आज की परिस्थिति के अनुसार, कोई कार्यक्रम सूझे तो वैसा प्रस्ताव कर सकते हैं। लेकिन जो प्रस्ताव किया हुआ है, उस पर अमल के बारे मे यहाँ छानबीन होनी चाहिए।

www.vinoba.in

एक बहुत बड़ा विचार हमने सुझाया कि जो भी प्रस्ताव किया जाय वह सर्वसम्मति से किया जाय। लेकिन उसका मतलब क्या? व्यक्तिगत राय संकोचपूर्वक प्रकट की जाय? नहीं। बिलकुल खुले तौर पर प्रकट करनी चाहिए। व्यक्तिगत राय प्रकट करने में कोई बाधा नहीं। फिर जो चर्चा होगी उसमें मतभेद का जो अंश है वह छोड़ दिया जाय और जो सर्व-सम्मत अंश है उस पर अमल किया जाय। सर्व-सम्मति या सर्वानुमति के नाम से व्यक्तिगत स्वतंत्रता को किसी प्रकार से हानि नहीं होनी चाहिए, बल्कि, सामान्य बात हो तो विचार-भेद प्रकट करने के बाद भी अनुमति जाहिर कर दें तो अलग बात है। लेकिन सिद्धान्त की बात जहाँ आयेगी वहाँ व्यक्ति को समाज से अलग होना पड़े तो भी अपनी स्वतंत्र राय रखनी चाहिए और वह गलत नहीं मानना चाहिए। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि सर्व-सम्मति ऐसा नाटक न बने, जिससे व्यक्तिगत "कांसेंस" और व्यक्तिगत चिन्तन सीमित हो। ऐसा नहीं होना चाहिए। इससे पहले कोई अधिवेशन या सम्मेलन हुआ था, उसकी जानकारी मुझे दी गयी थी। वहाँ पर जितनी खुली चर्चा होनी चाहिए उतनी हुई नहीं और सर्व-सम्मति के नामपर व्यक्तिगत विचारों का प्रकटीकरण नहीं हो सका। वह ध्यान में लेकर मैं कह रहा हूँ। वह सर्व-सम्मति का गलत अर्थ माना जायेगा।

सूक्ष्म से सूक्ष्मतर की ओर

ये दो-तीन बातें आरंभ में मैंने आपके सामने रखीं, जो मुख्य रूप से मुझे सूझीं। आखिर में मैं इतना कहूँ कि संभव है कि इस प्रकार 'लाउड स्पीकर' का उपयोग करने का मौका इस सम्मेलन के बाद मेरे लिए न हो। क्योंकि जो नाटक मैंने सूक्ष्म-प्रयोग का शुरू किया है वह इसके आगे सूक्ष्मतर में जायेगा। उसका क्या मतलब है अभी मेरे सामने स्पष्ट नहीं है, लेकिन इतना स्पष्ट है कि ३-३।। साल पहले सूक्ष्म-प्रवेश का नाम लिया था, फिर भी बिहार में जो जोरदार आन्दोलन चला उसका निमित्त मैं बना, अगरचे मैंने व्याख्यान आदि ज्यादा नहीं दिये, फिर भी कुछ तो दिया ही, क्योंकि एक प्रवाह था और मैं 'तूफान' शब्द लेकर यहाँ आया था तो बावजूद इसके कि सूक्ष्म में प्रवेश किया था, फिर भी काफी स्थूल का स्पर्श रहा।

यह एक प्रकार की विसंगति मानी जायेगी। लेकिन यह विसंगति जान-बूझकर रखी, क्योंकि एक शब्द निकला, वह न टूटे, वह पूरा हो। वह हुआ, परमात्मा की कृपा से। लेकिन इसके आगे सूक्ष्मतर में जाना होगा, तब यह जो विचार है उस विचार की शक्ति प्रकट होगी।

सूक्ष्म-सूक्ष्मतर कर्मयोग, यह जो नाम मैंने दिया, उसको शास्त्र के आधार से 'अभिध्यान' शब्द दिया है—अभिमुख रहना। उस प्रक्रिया में लोगों को अभिमुख रखकर अन्तरात्मा में लीन होना। उसके लिए अपेक्षित परिणाम यह होगा कि जो व्यक्ति यह प्रयोग करता है वह शून्य, शून्यतर में जायेगा। उसकी अपनी कसौटी होगी शून्य, शून्यतर में जाना। यह उसकी अपनी अनुभूति और अपने लिए परिणाम होगा और समाज के लिए अपेक्षित परिणाम शास्त्र के अनुसार होता है—जैसे आणविक शक्ति होती है वैसा यह सूक्ष्म होता है। और उसका परिणाम स्थूल परिणाम से ज्यादा होगा। इस विषय में स्थूल स्पष्टीकरण शब्दों में जितना हो सकता था उतना मैंने आपके सामने रख दिया।

निराशा का कोई कारण नहीं

आखिर में एक बात कहूँगा। इस साल गांधीजी की जन्म-शताब्दी और तन्निमित्त बहुत भयानक काण्ड अहमदाबाद में हुआ। दूसरी जगहों में भी दंगे हुए। लेकिन अहमदाबाद में हुआ यह विशेष दुःख की बात है। बहुतों को उससे निराशा जैसा मालूम होता है। और वे पूछते हैं कि गांधीजी का क्या परिणाम हुआ। अब ऐसा है कि गांधीजी-जैसे मनुष्य के बारे में सोचते समय दूरदृष्टि होनी चाहिए। उनके जैसी शक्ति के मनुष्य का परिणाम बिलकुल नजदीक के क्षेत्र में और नजदीक के काल में कम अपेक्षित है और व्यापक काल और व्यापक क्षेत्र में अधिक अपेक्षित है। उनमें निराशा होने का कोई कारण नहीं। वे अपना काम कर रहे है। उनके जैसे व्यक्ति का जो परिणाम है वह इतने छोटे से नाप से नापा नहीं जा सकता।

बादशाह खाँ का निर्णय

खान अब्दुल गफ्फार खाँ हिन्दुस्तान में आये हैं और हमारी ओर से उनको कहा गया था कि वे यहाँ आयें तो अच्छा रहेगा। लेकिन वे यहां आयेंगे, ऐसा दिखता नहीं है। वहाँ अहमदाबाद में विकट परिस्थिति पैदा हुई है। वे अपना समय वहाँ देना चाहते हैं। मुझे पूरी जानकारी हासिल नहीं है, लेकिन जितनी हासिल है उस आधार से मैं कह रहा हूँ। उन्होंने वैसा तय किया होगा तो उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। उनके जैसा कर्मयोगी वैसा तय करें तो वह अनपेक्षित नहीं। वे यहाँ आयें और आने के बाद उपवास करेंगे इसकी किसीको कल्पना नहीं थी। लेकिन आये और उनकी अन्तरात्मा को वेदना हुई तो उन्होंने उपवास शुरू किये। अब वे अहमदाबाद गये और उन्होंने तय किया कि वहीं रहना अच्छा है तो मैं वह उचित ही मानूंगा। अगर वे ऐसा निर्णय करें कि यहाँ आयें, सबके साथ बैठकर चर्चा कर शान्ति-सेना लेकर वहाँ जायँ तो वह भी ठीक होता। लेकिन न आने का तय करते हैं तो वह भी उचित है। जिस प्रकार से मनुष्य की अन्तरात्मा उसको कहती है तद्नुसार बरतना ठीक ही होता है। आशादेवी मुझे मिली थीं, वे वहाँ उनसे मिली थीं। वे कह रही थीं कि वे अत्यन्त नम्र भाव से बोलते थे। अपने लिए एक सामान्य सेवक की उनकी कल्पना है और उसी कल्पना से वे बोलते थे। वहाँ आने के लिए उनका जी चाहता नहीं था। तो आशादेवी से इस सम्बन्ध में पूछा गया तब उन्होंने कहा कि आपकी अन्तरात्मा जो कहेगी वह करना ही ठीक होगा। जब उन्होंने मुझे यह सुनाया तब मैंने कहा कि आपने बिलकुल ठीक कहा। वह मनुष्य ऐसा है जिसका ईश्वर के साथ कुछ-न-कुछ सम्बन्ध है। तो, ईश्वर के साथ सम्बन्ध रखनेवाले मनुष्य को हम कौन होते हैं हिदायत देनेवाले? इस वास्ते वे वहाँ रह गये तो ठीक ही है।

शान्ति-सेना का 'रोल'

सारे भारत में हम शान्ति-सेना बनायें, और वह सारे भारत में शान्ति की स्थापना में योग दे, यह हमसे होनेवाला नहीं है। इसलिए नम्रतापूर्वक हमसे क्या हो सकता है इसका नाप लेकर तदनुसार काम करना

www.vinoba.in

उचित होता है। हिन्दुस्तान खण्डप्राय देश है। उसका इतिहास है। वह इतिहास बच्चों को पढ़ा-पढ़ा कर जाग्रत रखा है। मैं इतिहास की पढ़ाई के बिलकुल खिलाफ हूँ। और आम जनता परमात्मा की कृपा से उस इतिहास से अलिप्त है। लेकिन पढ़े-लिखे लोगों के चित्त में यह इतिहास रहता है। ऐसी हालत में जगह-जगह दंगों का मुकाबला हम कर सकेंगे, इसकी संभावना लगती नहीं। जहाँ-जहाँ हमारे अड्डे हैं--कोई दस-बारह स्थान ऐसे होंगे, उन स्थानों में शांति की जिम्मेवारी हम पर आती है। मैंने कहा कि उन स्थानों में शान्ति की जिम्मेवारी हम पर 'भी' आती है। यह 'भी' शब्द मैंने इस्तेमाल किया है, उसके बारे में मैं बाद में कहूँगा। जैसे काशी शहर, वहाँ की शान्ति की जिम्मेवारी हम पर भी आती है। वहाँ सर्व सेवा संघ का दफ्तर है। इस वास्ते जितना परिश्रम वे वहाँ कर सकते हैं, उनको एक सीमित यश मिल सकता है। वैसे ही अहमदाबाद के लिए मेरी अपेक्षा थी कि हमारा वहाँ अड्डा है--हमारा केंद्र है, आश्रम है। वहाँ पर भी हम शहर के साथ अपना परिचय रखकर शान्ति-सेना का काम कर सकते थे और करना चाहिए था, लेकिन हम नहीं कर सके। मुझे इसका आश्चर्य हुआ। मैंने जो माना था उससे उलटा हुआ।

रविशंकर महाराज ने वहाँ ४० हजार सर्वोदय-पात्र रखवाये थे और घर-घर से सम्पर्क रखा था। यह जो सर्वोदय-पात्र है, उसमें जो पैसा मिलता है उसकी कीमत कम है। सर्वोदय-पात्र तो लोक-सम्मति है जिसके आधार से शान्ति-सेना बनेगी। आज किस आधार पर शान्तिसेना बनायेंगे? उसको लोक-सम्मति चाहिए। वह उस पात्र के द्वारा मिलती है। फिर सुझाया गया था कि उस पात्र को 'शान्ति-पात्र' नाम दिया जाय, तो वह भी हमने मान्य किया। लेकिन रविशंकर महाराज अहमदाबाद से चले गये और उसके बाद वहाँ पात्र चलते नहीं। कोई थोड़े-से चल रहे हैं। अपेक्षा यह थी कि घर-घर में सर्वोदय-पात्र हो और उन घरों से हमारा स्नेह-सम्बन्ध बने और निरन्तर शान्ति की रखवाली वहाँ हो सकती थी। वह नहीं हुआ। ऐसे कोई १०-१५ खास अड्डे हमारे हैं। मैंने कुछ नाम भी सुझाये थे, जैसे--काशी है, अहमदाबाद है और छोटे प्रमाण में है लेकिन वर्धा भी है। अगर यह होता तो कुछ हद तक हम सफल हो सकते थे।

अब मैंने कहा कि ऐसे स्थानों में शांति की जिम्मेवारी हम पर 'भी' आती है। भारत की जिम्मेवारी तो छोड़ दी, पर जो अपने स्थान माने, वहाँ शांति की जिम्मेवारी संभालनी चाहिए, ऐसा मानने के बाद ही कहा कि वहाँ पर शांति की जिम्मेवारी हम पर 'भी' आती है। काशी शहर में शांति की जिम्मेवारी हम पर भी आती है। 'भी' यानी क्या? यह मानना कि जैसे मिलीटरी के आधार पर लोग सुरक्षित रहते हैं वैसे शांति-सेना के आधार पर लोग सुरक्षित रहेंगे, तो उसका अर्थ हुआ कि लोग सुरक्षित हैं, स्व-रक्षित नहीं। जब तक लोग स्व-रक्षित नहीं होते तब तक सुरक्षित नहीं होंगे। जब तक यह भावना रहेगी कि हमें बचानेवाले दूसरे कोई हैं, फिर चाहे वह मिलटरी हो या शांति-सेना हो, तब तक शांति का अनुभव नहीं आयेगा। शांति तो अन्तरात्मा से मिलती है। काशी में शांति की जिम्मेवारी काशी-निवासियों की है और हम वहाँ रहते हैं, इसलिए हम पर भी आती है। इस अर्थ से मैंने 'भी' शब्द का इस्तेमाल किया।

श्री विनोबाजी के भाषण के बाद श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने बिहारदान तथा उसके बाद पुष्टि के काम की योजना की जानकारी दी। इसी संदर्भ उन्होंने वैशाली में ग्राम-स्वराज्य के तात्विक और व्यवहारिक पहलुओं पर विचार करने के लिए जो ग्राम-स्वराज्य समिति की बैठक हुई, उसकी जानकारी कराई। उन्होंने कहा कि इस गोष्ठी में बिहार का आगामी दो साल का कार्यक्रम बना है। कल की प्रबंध समिति की बैठक में श्री विनोबाजी ने बिहार के पुष्टि के लिए अति तूफान का जो आवाहन किया है, उससे बिहार के साथियों पर एक विशेष जिम्मेवारी आई है। पुष्टि की दिशा और इस काम में आनेवाली कठिनाइयों और समस्याओं का भी उन्होंने जिक्र किया।

www.vinoba.in

दूसरा दिन

२३ अक्टूबर, ६९ : दूसरी बैठक दोपहर २ बजे

विषय प्रवेश का क्रम शुरू हुआ।

श्री सिद्धराज ढढ्ढा :

वर्तमान परिस्थिति और सर्वोदय आंदोलन का विषय प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा :

पिछले महीनों में भारत में कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं घटी हैं। उनके कारण देश के राजनैतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में कुछ नवीन संभावनाओं के लक्षण प्रगट हुए हैं। ये घटनाएं किस प्रकार के परिवर्तन की सूचक हैं, इस बारे में स्पष्टता होना बहुत जरूरी है। सर्वोदय कार्यकर्ताओं को इस नए संदर्भ में गंभीरता से विचार कर लेना चाहिए।

दूसरी ओर सर्वोदय आंदोलन की एक निश्चित स्टेज पर पहुँच रहा है। बिहार-दान के बाद ग्रामदान के आगे के काम का महत्व बढ़ जाता है। अब ग्राम-स्वराज्य की दिशा में निश्चित कदम बढ़ाने का अवसर आया है। देश की राजनीति और अर्थ-नीति में जो नए मोड़ आए हैं, उसका असर हमारे इन कामों पर भी पड़ने वाला है।

राजनैतिक क्षेत्र में राष्ट्रपति के चुनाव को लेकर जो घटनाएं घटी, वे महत्वपूर्ण हैं। काँग्रेस दल में अन्दर-ही-अन्दर सत्ता का जो संघर्ष चल रहा था, वह अब ऊपर आ गया है। काँग्रेस महा समिति के बंगलोर अधिवेशन के समय से अबतक जो घटनाएं घटी हैं, जिनकी सब से ज्यादा कड़ी श्री सुब्रहमण्यम् आदि के प्रश्न को लेकर खड़ा हुआ विवाद है, इस बात की पुष्टि करती है। हमारे लिए समझने की जो महत्व की बात है वह यह है कि इस सत्ता—संघर्ष में जनतांत्रिक तरीकों की खुले आम अवहेलना शुरू हुई है। सत्ता का यह संघर्ष एक तरह से काँग्रेस का आंतरिक मामला है और सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं को इधर या उधर किसी की हार और किसी की जीत में दिलचस्पी नहीं हो सकती। यह संघर्ष अगर नीति

संबंधी विवादों, संस्था के अंतर्गत बहस-मुबाहसों, मतों की गिनती या चुनाव से होनेवाले फैसलों तक सीमित होता और हार-जीत का निर्णय इन चीजों के आधार पर ही हुआ होता, जैसा कि वह जाहिरा में हुआ, तो कोई विशेष बात भी नहीं थी। पर समाचार-पत्रों में इस बात की खुले आम चर्चा थी कि राष्ट्रपति के चुनाव में वोट प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत दबाव और धमकियों का उपयोग तो किया ही गया, इसके अलावा संबंधित लोगों पर सीधे हिंसात्मक दबाव डालने का प्रयत्न भी किया गया। तारीख २० अगस्त को जिस दिन राष्ट्रपति के चुनाव का परिणाम घोषित होनेवाला था, और खासकर तारीख २५ अगस्त को जिस दिन काँग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में प्रधान मंत्री पर अनुशासन की कार्रवाई के बारे में विचार होनेवाला था, दिनोंदिन राजधानी में अमुक तत्वों द्वारा इस बात की पूरी तैयारी थी कि अगर इन बातों का फैसला उनकी इच्छा के खिलाफ जाय तो "हिंसात्मक उपद्रवों के जरिए दिल्ली पर तूफान बरपा कर दिया जाय।" तारीख २५ अगस्त को अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी के दफ्तर में जहाँ काँग्रेस कार्यकारिणी की बैठक हो रही थी, और प्रमुख काँग्रेस नेताओं के घरों पर मिलीटरी पुलिस का कड़ा बंदोबस्त करना पड़ा। उन दिनों कुछ प्रमुख व्यक्तियों की ओर से वक्तव्य निकले, उनसे भी तानाशाही मनोवृत्ति का संकेत मिलता है।

आर्थिक क्षेत्र में दो प्रमुख घटनाएं उल्लेखनीय हैं। बैंकों का राष्ट्रीयकरण प्रगतिशील कदम अवश्य है, लेकिन गरीबों के वास्तविक हित के लिए उतना पर्याप्त है या वह अपने आप में समाजवाद का कदम है, ऐसा मानना आत्मवंचना होगी।

मेरा मतलब इस बात से नहीं है कि सरकार द्वारा बैंकों के राष्ट्रीयकरण की पुष्टि में और दूसरे कदम उठाए बिना वह सफल नहीं होगा। यह तो वे भी कहते हैं कि केवल राजनैतिक कारणों से अर्थात् पार्टी के आन्तरिक विवाद में अमुक गुट का समर्थन करने की दृष्टि से राष्ट्रीयकरण का पक्ष लेते हैं। वे तो शायद इसलिए भी ऐसा करते हैं ताकि बैंक राष्ट्रीयकरण का जोश ठंढा पड़ जायगा व उसकी नवीनता समाप्त हो

जायगी और गरीब देखेंगे कि इस राष्ट्रीयकरण से भी कुछ नहीं हुआ तब उस असफलता के लिए कारण आसानी से बताया जा सके। मेरा आशय राष्ट्रीयकरण की पुष्टि के ऐसे किसी बाहरी कदम से नहीं है, बल्कि इस बात से है कि बैंकों के राष्ट्रीयकरण का लाभ गरीबों को तभी मिल सकेगा जब वे जागृत और संगठित होंगे। इसके अभाव में छोटे उद्योगों के या खेती के नाम पर भी पैसा उन लोगों के हाथ में जाएगा जिन्होंने आज तक गांवों के विकास के नाम पर बहाए गए करोड़ों रुपयों का लाभ उठाया है। बैंकों के संचालक मण्डलों में किसानों और छोटे उपभोक्ताओं के प्रतिनिधियों को लेने की बात है, पर लोगों में जागृति और संगठन नहीं हुआ तो उनके नाम पर फिर वही लोग वहाँ जाएंगे जिनका या तो पार्टियों के नेताओं के साथ या अफसरों के साथ गठबंधन है।

राष्ट्रीयकरण कोई नई चीज तो है नहीं। रेलों का राष्ट्रीयकरण तो बरसों पहले ही हो चुका है। प्रमुख मार्गों पर चलनेवाली बसों का राष्ट्रीयकरण भी हुआ है। पानी, बिजली आदि नागरिक सेवाएं भी बहुत जगह राज्य के संचालन में है और उनकी मालकी राष्ट्र की है पर क्या इन बातों से समाजवाद एक इंच भी नजदीक आया या जनता को उनका उचित लाभ मिलने लगा? इन बातों के संबंध में जनता के दुःख-दर्द की सुनवाई तो आज भी मुश्किल से हो पाती है। चंद विशिष्ट (प्रिविलेज्ड) वर्ग ही उनका फायदा ठीक-ठीक उठा पाते हैं। जनता का वास्तविक हित या उसकी हितरक्षा बाहरी किसी व्यवस्था पर उतनी निर्भर नहीं है जितनी उसकी अपनी शक्ति और संगठन पर।

अतः बैंकों के राष्ट्रीयकरण के संदर्भ में भी लोकशक्ति को जागृत करना मुख्य काम है। इस काम का महत्व और उसकी त्वरा पहले से भी अधिक महसूस होनी चाहिए अन्यथा समाजवाद और प्रगति के नाम पर गरीबों के गले का फंदा और भी मजबूत हो जायगा। इस खतरे की ओर सर्वोदय कार्यकर्ताओं का ध्यान जाना चाहिए।

आर्थिक क्षेत्र में दूसरी महत्वपूर्ण बात जो इन दिनों हो रही है, वह खेती की हरित् क्रान्ति है। इस हरित-क्रान्ति के दो पहलू हैं, जिनकी ओर

www.vinoba.in

सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं का ध्यान जाना चाहिए। पहली बात तो यह और जिसके बारे में पिछले दिनों देश के अन्य विचारकों ने भी आगाही की है कि खेती में नए बीज, रासायनिक खाद आदि के जरिए जो क्रान्ति हो रही है, उसका लाभ चंद सम्पन्न और बड़े किसानों को ही मिल रहा है। नतीजा यह हो रहा है कि बड़े किसानों की आर्थिक स्थिति उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है और छोटे उनके मुकाबले अधिक कमजोर होते जा रहे हैं। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में भी अमीर और गरीब के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है। अमीर ज्यादा अमीर हो रहे हैं, गरीब ज्यादा गरीब और कमजोर होते जा रहे हैं। बड़े किसानों की आमदनी बढ़ रही है पर उत्पादन वृद्धि का लाभ खेतीहर मजदूर को उचित अनुपात में नहीं मिल रहा है। तंजोर की परिस्थिति इसका स्पष्ट उदाहरण है। हरित-क्रान्ति वास्तव में प्रति-क्रान्ति साबित हो रही है।

हरित क्रान्ति का दूसरा पहलू इस देश के भविष्य की दृष्टि से और भी खतरनाक है। नए बीज रासायनिक खाद और कीटाणुनाशक दवाओं का उपयोग जैसा समझा जाता है, वैसा लाभदायक नहीं है। इसके विपरित दूसरे देशों का प्रत्यक्ष अनुभव यह बताता है कि इन चीजों का उपयोग एक ऐसे दुष्चक्र को जन्म देता है जिससे न केवल आगे जाकर जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाने का खतरा है, बल्कि प्रकृति के सारे चक्र के टूटने की संभावना और पशुओं तथा मनुष्यों की जान को भी सीधा खतरा है। अभी कुछ दिन पहले अमेरिका के कृषि विभाग के एक विशेषज्ञने इस बात की चेतावनी दी थी कि धान की तथा-कथित नए किस्मों से फसल में नई और घातक बीमारियां पैदा होने की आशंका है। रासायनिक खादों और दवाओं के उपयोग से अन्न, पानी तथा खाद्य पदार्थों में जहर की मात्रा बढ़ती जाने से मनुष्यों की जान को सीधा खतरा भी पैदा हो जाता है। अमेरिका के एक राज्य एरीजोना डी. डी. टी. का उपयोग वर्जित कर चुका है, मिशिगन राज्य वैसा करने जा रहा और विरकासीन में भी इसकी चर्चा शुरू हुई है। अमेरिका के प्रसिद्ध दैनिक "न्यूयार्क टाइम्स" ने कुछ दिन पहले पूरे राष्ट्र में डी. डी. टी. के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का आव्हान किया था। कीटाणुनाशक दवाओं के उपयोग से दूषित अन्न के कारण लोगों में

www.vinoba.in

तरह-तरह की बीमारियां बढ़ी हैं। रासायनिक खाद के उपयोग से दूषित अन्न के कारण लोगों में तरह-तरह की बीमारियां बढ़ी हैं। रासायनिक खाद के उपयोग से जमीन के "मित्र-किटाणु" भी नष्ट हो जाते हैं और फलःस्वरुप फसलों में तरह-तरह के रोग लग जाते हैं। फिर उन रोगों को दूर करने के लिए जहरीली दवाओं का उपयोग करना पड़ता है और इस प्रकार यह खतरनाक दुष्चक्र बढ़ता जाता है। खेती भी महंगी हो जाती है और सम्पन्न किसान ही फिर उसमें टिक सकता है।

'हरित-क्रान्ति" के इस पहलू की तरफ सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं को तुरंत ध्यान देना आवश्यक है। विज्ञान और प्रगतिशीलता के नाम पर चूंकि इन चीजों का प्रचार किया जा रहा है इसलिए इनका विरोध और भी कठिन है। रासायनिक खाद और कीटाणुनाशक दवाओं का संबंध हथियारों के, खासकर अणुशस्त्रों के निर्माण से जुड़ा हुआ है, पर इस पहलू के बारे में मैं इस समय ज्यादा कहने की स्थिति में नहीं हूँ। स्पष्ट है कि इस संबंध में जानकारी उपलब्ध होना बहुत कठिन है। पर इसके अलावा उपरोक्त दोनों पहलुओं के कारण भी हरित-क्रान्ति से न केवल शोषण और विषमता बढेगी बल्कि देश के आर्थिक जीवन में, खासकर खेती के क्षेत्र में कई जटिल समस्याएं खडी हो जायंगी।

देश की मौजूदा परिस्थिति में नक्सलवादियों का जो जोर बंगाल बिहार, आंध्र प्रदेशों मे खास तौर से बढता जा रहा है, वह भी एक ऐसा विषय है जिस पर सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं का ध्यान जाना चाहिए। अगर हम लोकशक्ति को जागृत करने में और उसके द्वारा अहिंसात्मक ढंग से अन्याय का प्रतिकार करने तथा देश की समस्याओं को सुलझाने में सफल नहीं हुए तो जैसा विनोबा कहते हैं सर्वोदय आंदोलन जनता द्वारा "राइट ऑफ" कर दिए जाने का खतरा है।

देश के राजनैतिक और आर्थिक जीवन में प्रगट होनेवाली उपरोक्त सारी परिस्थिति इस बात की ओर संकेत कर रही है कि सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं को अपने काम की गति और भी तेज करनीं चाहिए, उसकी त्वरा हमें महसूस होनी चाहिए और अन्य सब कामों की अपेक्षा ग्रामदान-

www.vinoba.in

ग्रामस्वराज्य का काम हमारे लिए सर्वोपरि होना चाहिए। ग्रामदान प्राप्ति को तेजी के साथ बढाने के साथ-साथ कुछ प्रखण्डों या क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य की शक्ति प्रगट करने की ओर भी अब ध्यान देना चाहिए।

श्री प्रेमभाई :

अब तक निर्माण काम के लिए ब्रायेबिल युनिट की बात हम करते थे लेकिन अब बिहार दान हो गया है। इसलिए निर्माण के लिए हमें गंभीरता से सोचना होगा और इसे महातूफान के रूप में करना होगा। कार्यकर्त्ताओं के द्वारा निर्माण काम हो, यह बिहारदान के बाद अब बिल्कुल ही शक्य नहीं रहा है। बिहार के लिए ६ हजार कार्यकर्त्ता चाहिए। ७५ कार्यकर्त्ता के पीछे दो हजार रुपए मानें तो १२ मिलियन रुपए चाहिए। यह तो केवल कार्यकर्त्ता पर खर्च होगा। फिर कार्यकर्त्ता और अर्थ आयगा भी कहाँ से! इतने बडे पैमाने पर हम काम नहीं कर सकेंगे। हमें निर्माण के लिए ग्रामसभा को मजबूत बनाना होगा। वह इस कामके लिए मध्यबिंदू है। एक गांव में औसतन एक हजार एकड़ जमीन होती है, इसे ५ रु. प्रति एकड़ के हिसाब से राजस्व से ५ हजार रुपए से अधिक इकट्ठा नहीं होता। ग्रामकोष की कल्पना से सोचें तो प्रति एकड़ ५ से १० मन उपज के हिसाब से १० सेर प्रति एकड़ यानी १० हजार सेर ग्राम कोष में आसानी से इकट्ठा होगा। यह संभावना इस आंदोलन से प्रकट हुई है। इसके अनुसार प्रखण्डस्तर पर योजना ग्रामसभाओं के द्वारा हो सकती है। देश में एक करोड एकड भूमि मिली है जिसे काश्त काबिल बनाई जा सकती है। गोविन्दपूर क्षेत्र में ग्रामसमाओं के मार्फत भूमि कटाव तथा भू-संरक्षण का काम सरकार से ठेकेपर बनाया गया है। इस मद में हर वर्ष सरकार के पास बजट सरप्लस रहता है, और पूरी रकम खर्च नहीं हो पाती। ग्रामसभाए सरकार से मांग करें कि उनके क्षेत्र की जमीन उनको तैयार करने के लिए दीजाय।

इसके बाद संघ के अध्यक्ष श्री काकासाहब कालेलकर से प्रार्थना की कि वे आज की देश की अशांत व्यवस्था और शांति सेना की आवश्यकता पर मार्गदर्शन करें।

श्री काका साहब कालेलकर :

देश में स्वराज्य होने के बाद जो चल रहा है, उसकी निंदा तो बहुत सुनी लेकिन पिछले २० वर्ष के अंदर देश में औद्योगिक उन्नति हुई है, इसे स्वीकार किए बिना टीका करना अन्याय होगा। लेकिन बहुतसी बातों में हम नीचे गए हैं। २० वर्ष में जितने दोष देखते हैं, वे पहले भी थे। देश में नैतिकता गिरी है घूंसखोरी बढी है। गांधीजी ने देश के जितने दोष थे, उनको दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने कहा कि जितने पुराने दोष थे, दूर नहीं हुए हैं बल्कि दब गए हैं। दोष दब गए इससे भी लाभ उठाकर स्वराज्य ले लिया। स्वराज्य मिलने के बाद गांधीजी ने कांग्रेस को 'लोक सेवक संघ' के रूप में परिवर्तित होने की सलाह दी थी। स्वराज्य मिलने के बाद मान लिया गया कि सत्ता-संपत्ति हाथ में आ गई है, उससे सब पूरा हो सकेगा। दोषों को पूर करने के गांधीजी के जितने उपाय थे, सबको इगनोर किया गया है।

भूदान-ग्रामदान के काम को मैं सत्ययुग का काम मानता हूँ। लेकिन जब तक सत्ययुग नहीं आये तबतक लोगों को कैसे बचाया जावे! दोष बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी हालत में हम लोगों को राष्ट्र सेवकों का संगठन करना चाहिए जैसा बादशाहखान ने "खुदाई खिदमतगार" के रूप में किया। गांधीजी ने अपने जीवन काल में बंगाल, उडीसा आदि में तीन बार शांति सेना स्थापना का प्रयास किया। अगर शांतिसेना के काम में हम देरी करेंगे तो हमारा सारा काम चौपट हो जायगा।

जब गांधीजी ने लोक सेवकों का बीड़ा उठाया तब उन्होंने कहा कि हर गांव से मुझे २० आदमी चाहिए। क्या २० आदमी एक गांव में नहीं मिल सकेंगे? हिन्दुस्तान में ५ लाख गांव हैं। हर गांव में २० आदमी होंगे तो एक करोड़ हो गए। एक करोड़ शांति सैनिक चाहिए। वह भारत के लिए ज्यादा नहीं है। एक गांव में १०-१० मिलेंगे तो भी ५० लाख हो सकते हैं। आप कमसे कम ५० लाख शांति सैनिकों का लक्ष्यांक रखेंगे तो इसके संगठन की जिम्मेवारी मैं लेने के लिए तैयार हूँ।

सरकार के पास सजा, कानून और पुलिस यह सब समाज पर अधिकार करने के तत्व हैं। हमें पुलिस बुलाने में शर्म आनी चाहिए। कहीं दंगा फिसाद हुआ तो कलेक्टर जानता है कि उसके पास पुलिस है मिलिट्री है। वह कभी भी उसे दबा सकता है। क्या चीन से हम शांतिसेना से मुकाबला कर सकते हैं? लेकिन आज नहीं। यदि हमारे पास ५० लाख शांतिसैनिक हों तो किसी की भी हिम्मत नहीं हो सकती कि वह उनका मुकाबला कर सके। यही बात आंतरिक शांति से संबंधित है। हमारी आज की ताकत पर सरकार कैसे भरोसा रखे। हमारे पास शान्ति सैनिकों का संगठन चाहिए, कार्यक्रम चाहिए और उस पर विश्वास होना चाहिए।

पिछले ५० वर्षों में नेताओं ने बडे-बड़े आश्रम देश में खोले हैं। लेकिन वे सब हिंदू-आश्रम हैं। वायुमण्डल हिंदू, सारे काम हिंदुओं के। हम अच्छे हैं और दूसरे खराब हैं लेकिन खराब लोगों में भी काम करने की हमारी जिम्मेवारी है या नहीं? धर्मभेद के कारण यह आज की परिस्थिती हुई है। यह एक दूसरे को न अपनाने से हुआ है। यह राजनैतिक दोष नहीं है, सांस्कृतिक दोष है। यह भावना हमको बदलनी होगी।

अध्यक्ष महोदय ने श्री विनोबाजी से प्रार्थना की कि वे मार्गदर्शन करें।

श्री विनोबा :

आज सुबह मैंने काफी कहा था। मेरी ओर से कुछ कहने का नहीं है। लेकिन आप लोगों ने यहाँ चर्चा की तो मैंने अध्यक्ष महोदय से पूछा कि कोई नई बात हो--प्रश्न हो तो चर्चा कर सकते हैं। उन्होंने मुझे लिखकर दिया कि निर्माण काम कैसा हो इसमें आपका मार्गदर्शन चाहिए। इसका जवाब तो वह दे सकता है जिसने कभी निर्माण-कार्य किया हो। एक बार एक भाई मेरे पास आए थे और बोले कि हम व्यक्तिगत प्रश्न पूछना चाहते हैं। मैंने कहा पूछो! उन्होंने कहा हमारा हमारी पत्नी से बनता नहीं तो क्या किया जाय? मैंने उसे कहा कि भाई, यह सवाल आपको ऐसे मनुष्य से पूछना चाहिए जिसको इस जीवन का अनुभव है।

लेकिन फिर भी मैं जवाब न दूं तो मेरी प्रतिष्ठा नहीं रहेगी। इसलिए मैं जवाब देता हूँ और कहा कि यह सवाल पति-पत्नि दोनों के बीच का है। तो दोनों रहेंगे तब कहूँगा। मेरा संकट टल गया क्योंकि वे दोनों मिलकर आनेवाले नहीं थे। वैसे ही निर्माण कार्य है।

मैंने कभी निर्माण कार्य नहीं किया। जिसने किया हो, उससे इसकी चर्चा कीजिए। बाबा निर्माण कार्य करने जायगा तो पूरा फेल्योर होगा। इसलिए मैंने कहा था कि बाबा फुलस्टाप नहीं है, क्वेश्चन मार्क है। एक प्रश्न हल हो रहा है। कार्यकर्त्ता को आराम मिल रहा है तो फौरन बाबा दूसरा प्रश्न खड़ा करेगा। हिंदुधर्म में ऐसा ही किया गया है। बेटा माता-पिता के पास है। उसे सुख है तो उसे वहाँ से हटाया और गुरू के पास भेजा। वहाँ बहुत मेहनत का काम करना पड़ा। लेकिन फिर आदत हो गई। गुरू का प्रेम भी प्राप्त हो गया तो फिर शास्त्र कहता है कि गुरू का घर छोड़ो, गृहस्था-श्रम लो। गृहस्था-श्रम में प्रवेश करता है तो चिंता शुरू होती है। फिर भी उसने बना लिया। उस जीवन की आदत हो गई। आराम हो गया। तुरंत शास्त्रकार ने कहा—वान प्रस्थ बनो। जंगल में जाओ। वानप्रस्थ बना। वहाँ के जीवन की आदत हो गई। आसपास के लोगों का प्रेम हासिल हुआ। आराम होने लगा तो शास्त्रकार ने कहा—उठो संन्यास लो। वैसे बाबा की खूबी है कि वह प्रश्न खड़ा करता रहता है। उत्तर आपको ढूंढना होगा।

निर्माण-कार्य में तो क्षितीश बाबू लगे हैं। एक परिवार का निर्माण करना हो तो भी इतनी झंझट होती है तो जिसने निर्माण के लिए एक गांव को लिया, उसे तो जीवन पूरेगा नहीं। इसलिए कहता हूँ तुम लोग झमेलों में मत पड़ो। ऐसे काम करना नहीं, कराना चाहिए। लोगों के द्वारा करवाना चाहिए। लोगों को उनकी व्यवस्था की जानकारी रहती है। उन्हें सलाह देना और प्रेरित करना चाहिए। आज एक भाई ने अपनी एक संस्था का परिचय दिया। खेती विकास के लिए संस्था बनाना चाहते हैं। वह रिपोर्ट पढी और सोचा कि यह तो झमेला है। झमेला में कार्यकर्त्ता फंसेगा तो उसका उद्धार भगवान् भी नहीं कर सकेगा। दूसरा जो गृहस्थ

www.vinoba.in

होता है उसे भगवान् मुक्ति प्रदान करता है क्योंकि उसको पश्चाताप होता है। यह तो सार्वजनिक कार्यकर्त्ता है, उसे पश्चाताप नहीं होता। वह कहता है मैं तो निष्काम कर्मयोग कर रहा हूँ। गृहस्थों को जो चिन्ता होती है, वह इसे नहीं होती। इसलिए भगवान् कहेगा तुम्हारा उद्धार करने की जरूरत नहीं और यह कार्यकर्त्ता आखिर तक काम से युक्त रहेगा।

ऐसा कहा गया है कि इन-हार्नेस (In-harness) मरना चाहिए। जंगल के घोड़े को पकड़कर लाते हैं और अस्तबल में रखते हैं। जंगल का जानवर घोड़ा हार्नेस में लगातार रहा, इसलिए वह कहेगा कि अस्तबल में मरने के बजाय हार्नेस में मरना अच्छा। और दोनों छोड़कर जंगल में मरना ज्यादा अच्छा। मरने के पहले मरना चाहिए। मरने के बाद तो सभी मरते हैं; लेकिन मरने के पहले मरना चाहिए। यह भारत की प्रतिभा है कि मरने के पहले ही मृत्यु का अनुभव हो। यह भारतीय संस्कृति है। इस वास्ते सारा छोडकर मरना हो सके तब रिवोल्यूशनरी स्प्रिट दाखिल होगी। इस प्रकार हमारे अनेक साथी झमेले में फंसे हैं। अनेकों ने झमेला उठा रखा है। क्षितीशबाबू मेरे सामने बैठे हैं, इसलिए उनका नाम लिया। ऐसे अनेक लोग हैं--वे जहाँ काम करते हैं वहीं दंगा इत्यादि होता है और इनके काम का असर नहीं होता। क्योंकि यह आदमी फंसा है। इसलिए कार्यकर्त्ता को अपने को गिरफ्तार होने नहीं देना चाहिए। अभी शंकररावजी ने एक सुन्दर शब्द इस्तेमाल किया--"मैं" हटना चाहिए। वह जब तक नहीं हटेगा, तब तक क्रान्तिकारी वस्तु नहीं आएगी। संसार बसाया तो निस्तार नहीं होता। ऐसे लोगों की जमात जहाँ-तहाँ है। रचनात्मक कार्य के पहलू बहुत हैं। यहाँ लक्ष्मीनारायण पुरी को मैंने ठोक-पीट आश्रम नाम दे रखा है। खादी को ठोक और पीट। इस झमेले से हम मुक्त नहीं होंगे तो कैसे चलेगा।

आज धीरेन्द्रभाई से मिलने गया तो उन्होंने पूछा--आपने लोगों के सामने चर्खे की बात रखी। वह तालीमी संघ का चर्खा है या चर्खा संघ का? तालीमी संघ का चर्खा यानी तालीम के तौर पर पहुँचा हुआ, ठोक-पीट आश्रम में तत्व-निष्ठा का सवाल नहीं। खादी का "पीटना"

www.vinoba.in

यानि हिंसा है। बेरहमी से पीटते हैं क्यों कि कपास से भी ज्यादा सफेदी चाहते हैं। वह जीर्ण शीर्ण हो जाती है। अगर पीटा न जाये तो खादी एक साल चलती है और पीटने के कारण आठ महीने टिकती है। यह ठोक-पीट आश्रम भयंकर मालूम होता है। इस तरह उलझन में फंसे रहेंगे तो हमारे पीछे संसार लगा रहेगा, मुक्ति का सवाल ही नहीं है। ये लोग कहते हैं कि हमें मुक्ति की जरूरत नहीं। हम तो कार्य करते रहेंगे। मैं पूछता हूँ कि आपको किसीने मुक्ति आफर की है क्या? ऐसे मस्त लोग है। ऐसों की संख्या मेरा खयाल है, गुजरात में ज्यादा है। इसमें सरकार की मदद भी होती है। इसलिए निर्माण काम कैसे किया जाय, इस प्रश्न का उत्तर यह है कि कार्य किया न जाय, कराया जाय।

निर्माण से मतलब प्रयोग हो तो जैसे सूत कातना। खेती के प्रयोग— ये तो ट्रेनिंग की बात है। अपने को ट्रेण्ड करने के लिए मनुष्य अनेक प्रकार के प्रयोग करता है। अपने को कसता है। मैं एक मिसाल दूं। गांधीजी को जरूरत महसूस हुई कि व्यक्तिगत सत्याग्रह में एक मनुष्य चाहिए। उन्होंने मुझे बुलाया। वे सेवाग्राम में रहते थे। मैं पवनार में था। अक्सर हमारा मिलना कम होता था। उन्होंने मुझे पूछा कि मुझे व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए एक मनुष्य चाहिए। क्या तुम तैयार हो? मैंने कहा कि मैं तैयार हूँ। उन्होंने पूछा कि तुम्हारे पीछे तो अनेक काम होंगे। मैंने कहा—मेरे पीछे काम नहीं है। अभी आप कहेंगे तो मैं वापिस नहीं जाऊँगा और यहीं से आगे जाऊँगा। मैंने निर्माण कार्य का संसार होने नही दिया, जिसका बंधन मुझे मानना पड़े। ऐसा होता तो मैं भूदान का निर्णय नहीं कर सकता था। संस्था के कारण मनुष्य के जीवन में बंधन आते हैं। उसके कारण उसके विकास की शक्ति क्षीण हो जाती है। गांधीजी में बनाने और तोड़ने दोनों ही शक्तियाँ थी। वे संस्था बनाते थे और क्षण में ही तोडते थे। बड़े-बड़े आंदोलन खड़े करते थे और पांच मिनिट में वापिस लेते थे। यह उनमें शक्ति थी। ऋगवेद में इसका उत्तम वर्णन आया है। सूर्य देव! तेरी महिमा महान् है। फैले हुए किरणों को तू एकदम खीच सकता है। यह जो शक्ति है, वह गांधीजी में थी। उन्होंने कई आश्रम बनाए और तोडे। कई आंदोलन

www.vinoba.in

चलाए और पीछे लिए। यह शक्ति हर एक में नही होती। इसलिए अपना कर्मजाल बनाना नही चाहिए।

श्री शंकरराव देव :

सेवापुरी सम्मेलन में २५ लाख एकड़ भूदान प्राप्ति का संकल्प किया गया था और आज हम बिहार दान तक पहुँचे है। इसमें कोई शक नहीं कि जो कुछ काम हुआ है, वह अभूतपूर्व हुआ। फिर भी मैं कहना चाहता हूँ कि जो कुछ हुआ है, उससे मेरा समाधान नहीं है।

कुछ वर्षों से ग्रामदान, जिलादान, राज्यदान के संकल्प और पूर्ति के आंकड़े और खबरें आती है लेकिन यह आत्मा को उबारने वाले हैं, ऐसा नहीं लगता है। बहुत दिन से मन को यह लगता है कि जो कुछ हुआ है, उससे कुछ अधिक होने की आवश्यकता है। जब हम चाहते हैं कि कुछ हो तो हमारे आंदोलन का स्वरूप ऐसा हो जो हम करना चाहते हैं। उसका प्रारंभ खुद अपने से ही होना चाहिए। वह दूसरा करेगा और उससे हम संतोष मान लें या लाभ उठाएं तो यह हमारे आंदोलन की प्रगति नहीं है, ऐसा मैं कम-से-कम समझता हूँ। क्योंकि हमारे आंदोलन का जो स्वरूप है, वह व्यापक है। यह एक नैतिक आंदोलन है। इसका अर्थ स्वर्ग या मोक्ष नहीं है। मतलब यह है कि ऐहिक जीवन सुन्दर बनाने के लिए नैतिक बातें होनी चाहिए। नैतिक आंदोलन होने का मतलब है कि इसका इम्फैसिस साध्य पर उतना नहीं है जितना साधन पर है। जो नैतिक आंदोलन है, उसमें जो कृति होगी, वह नैतिक होगी। उसमें मॉरल एक्शन होना चाहिए। इसलिए गांधीजी ने कहा था कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वह एक विकल्प है। समाज का परिवर्तन मैं सत्य और अहिंसा से करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि जो मैं पॉलिटिक्स चाहता हूँ वह पावर का नहीं सर्विस का होगा। इसलिए जो कुछ हम चाहते हैं, इस आंदोलन में भी वह दूसरों से हो या उनसे करवाएं, वह मैं समझता हूँ कि इस आंदोलन के पीछे जो भूमिका है, उसके खिलाफ वह चीज जाती है। आप विनोबाजी के सारे आंदोलन को ले लीजिए। भूदान से तूफान और अति तूफान तक आप कितना भी कहेंगे, यह एक व्यक्ति के ही संकल्प शक्ति से हुआ है।

विनोबाजी ने कई बार कहा है कि मेरे साथ जो पदयात्रा करते थे उनसे भी पूछता तो यह संभव नहीं था कि भूदान की गंगा का प्रारंभ होता। गांधीजी का कदम भी आप देखेंगे तो पाएंगे कि उन्होंने जो निर्णय लिए, वह हमें किसी को भी बुद्धि से जंचते नहीं थे। उन्होंने १९४० में कहा कि मैं पहला सत्याग्रही विनोबाजी को चुननेवाला हूँ तो मेरा विरोध था। "क्विट इण्डिया" उनका निर्णय था, "डांडी मार्च" उनका निर्णय था। जो भी निर्णय थे वह सारे उनके ही थे। जो उस आंदोलन में देखा, वह इसमें भी देखता हूँ। इसमें भी नैतिक होने की गारंटी है, ऐसा मैं मानता हूँ। बुद्धि से नैतिक कार्य का निर्णय नहीं हो सकता।

बुद्धि दो प्रकार की होती है--एक है व्यावहारिक बुद्धि और दूसरी है शुद्ध बुद्धि। व्यावहारिक बुद्धि से वह कभी भी जी नहीं सकता है। जो व्यापक है. जो शुद्ध है, उसको ही समझ सकते हैं। लोग कहते हैं कि यह बहुत ही अच्छी चीज है लेकिन क्या यह संभव है! संभव है यह जाननेवाली बुद्धि शुद्ध बुद्धि नहीं है, व्यावहारिक बुद्धि है। उनको नए समाज का निर्माण सत्य और अहिंसा के द्वारा करने की बुद्धि नहीं आ सकती है। गांधीजी ने कहा था कि--"फर्स्ट आई एक्ट देन आई थिंक" इसलिए कि सत्य मुझे कहता है कि परिस्थिति में क्या करना चाहिए। जब मैं एक्शन लेता हूँ तो मेरा भरोसा ईश्वर पर होता है। एक्शन जब मुझसे होता है तो मैं सोच विचार कर के आर्ग्यूमेन्ट कर के नहीं करता हूँ। जो शुद्ध चित्त मुझे कहता है वह कर डालता हूं। हमें इतिहास से यह समझना चाहिए कि १९२० से ६९ तक सारा आन्दोलन अहिंसा और सत्य के आधार पर शुद्ध बुद्धि और शुद्ध चित्त से हुआ और उस पर से यह सारी इमारत खड़ी हुई है।

गांधीजी के समय जो अहिंसा थी, वह बलवानों की नहीं दुर्बलों की थी। बलवान की अहिंसा नहीं होने से जो स्वराज्य में चाहिए था, वह नहीं रहा। गांधीजी ने कहा था--"गो टू दी विलेजेज।" सब रचनात्मक संस्थाओं को भी कहा था। तीनों को भी उन्होंने विसर्जित किया था--राजनीतिक, रचनात्मक संस्थाओं और आश्रमों को भी। कोई चीज ऐसी न

बने जो वैयक्तिक बने। और आखिर की चीज यह है कि यह जो प्रोसेस बनी, उसमें मुझे लगता है कि रिवोल्यूशनरी चीज नहीं बनी है। प्राप्ति पुष्टि और निर्माण। हम निर्माण करेंगे। इसमें यदि "हम" नहीं जाता है तो यद्यपि वह बड़ी चीज होगी लेकिन जो हम चाहते हैं वह नहीं होगा जबतक "हम" को नहीं खतम करेंगे। इस काम को क्रान्तिकारी आशय आना चाहिए था। वह नहीं आया है। आपने एक बहुत बड़ी चीज की, इसमें कोई शक नहीं। आपने स्वामित्व विसर्जन किया। लेकिन आज का जमाना है कि मालकियत से अधिक उसके उपयोग पर बल देता है। जो हम चाहते हैं वह इसमें से नहीं निकलेगा। जिसका विसर्जन हुआ, उसका उपयोग कैसे होगा, इस पर यह निर्भर करेगा। गांव के लोगों की जो आवश्यकताएं हैं, वह पूरी करने के लिए जितना सामान उनके पास होना चाहिए वह आप नहीं दे सकते हैं। "एण्डस् एण्ड मीन्स्" में आप "मीन्स" का तय करते हैं लेकिन "एण्डस्" तय नहीं कर सकते हैं। अगर ग्रामसभा इसका जवाब नहीं देगी तो वह रिवोल्यूशनरी नहीं होगी। वह एक सामाजिक विकास का काम होगा। आज जो निर्माण का काम हो रहा है वह रिवोल्यूशनरी चेंज का नहीं बल्कि सोशल डेवलपमेन्ट का हो रहा है, ऐसा हम समझते हैं। क्योंकि रिवोल्यूशनरी काम का मतलब है कि संबंधों में परिवर्तन। आज के जो कार्यक्रम हैं उसकी नीति में भी हम कुछ बुनियादी फर्क नहीं कर सकेंगे। इसलिए आजतक जो कुछ पाया है, उससे हम आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक बदल नहीं कर सकते हैं। डेमोक्रेटिक सोशलिज्म में भी वह क्रान्तिकारिता नहीं रही है। हमको सोचना होगा कि इन परिवर्तनों को सीमित रखकर कोई कदम नहीं उठाते हैं तो गांव की गरीब जनता में उत्साह और कष्ट उठाने की तैयारी नहीं पैदा कर सकेंगे। आजतक जो ग्रामदान प्राप्ति और पुष्टि का काम हुआ है यह सही माने में क्रान्तिकारी रूप में नहीं हुआ है। हमें एक नया समाज खड़ा करना है। कोई एक टेकनिक बनाकर जाएंगे तो वह बाह्य रंग नहीं रहेगा। उसमें कोई अंतरंग नहीं होगा। असमान्य पुरुष जो होते हैं वह एक शब्द लेकर कुछ परिवर्तन कर देते हैं।

www.vinoba.in

दूसरा दिन

(२४ अक्टुबर, ६९ तीसरी बैठक प्रात. ९ से १२ बजे)

विषयवार चर्चा का क्रम जारी रहा। यह तय किया गया कि विभिन्न विषयों पर अलग-अलग गोष्ठी-टोलिया बैठें, विचार करें और उसकी रिपोर्ट अधिवेशन में प्रस्तुत करें। तदनुसार पांच विषय निर्धारित किए गए और उन पर टोलियों में विचार हुआ। गोष्ठियो के संयोजक तथा विषय निम्न-प्रकार से रहे :

१. ग्रामदान अभियान और संगठन का स्वरूप	संयोजक–	श्री एस. जगन्नाथन्
२. पुष्टि	,,	श्री राममूर्ति
३. हिंसाकी समस्या और शांतिसेना कार्य	,,	श्री क्षितिशराय चौधरी
४. राष्ट्रीय परिस्थिति और हमारी भूमिका	,,	श्री सिद्धराज ढढ्ढा
५. खादी-ग्रामोद्योग	,,	श्री वी. रामचन्द्रन्

गोष्ठी के संयोजकों ने अपनी-अपनी गोष्ठी के निष्कर्षों को रिपोर्ट पढी.

१. ग्रामदान प्राप्ति की दिशा और संगठन का स्वरूप .

१. ग्रामदान प्राप्ति का काम सर्वोदय मण्डलों द्वारा ही हो। इस विषय पर विस्तार से चर्चा होकर आम राय रही कि ग्रामदान प्राप्ति के लिए स्थानीय प्राप्ति समितियां बनाकर सभी राजनैतिक दलों, विद्यार्थियों और अध्यापकों से भी सहयोग लेना चाहिए पर साथ ही सर्वोदय विचार में रुचि रखने वाले लोगों से विशेष सम्पर्क करके उन्हें सर्वोदय मित्र शांतिसैनिक या तरुण शांतिसैनिक आदि के रुप में स्थानीय सर्वोदय संगठन की आधारशिला रखनी चाहिए। इसलिए हमारे कार्यकर्त्ताओं को सर्वोदयपात्र रखने या शांतिसैनिकों में नाम लिखाने की अनिवार्य आवश्यकता है।

२. हमारे स्थानीय सर्वोदय संगठन जबतक मजबूत न हों तब तक कार्य का संयोजन राज्यस्तर के सर्वोदय मण्डलों या ग्रामदान प्राप्ति समितियों को करना चाहिए।

३. सर्वोदय मण्डलों के गठन एवम् संचालन में सत्ता और सम्पत्ति का संघर्ष न होने पाए इस दृष्टि से काम का इस तरह बंटवारा हो कि ऊंच-नीच का भेद न पनपने पावे।

४. सर्वोदय संगठनों में भूदान के आदाता, दाता एवम् अध्यापकों, विद्यार्थियों आदि को भी लेना चाहिए। वे लोक-सेवक के निष्ठापत्र भरें, यह जरूरी नहीं मानना चाहिए। ग्रामदान प्राप्ति के लिए ग्रामस्वराज्य की कल्पना उनके सामने रखनी चाहिए और उसके बाद कार्यकर्त्ताओं के बजाय गांव की जनता के द्वारा ही करवाने का प्रयत्न होना चाहिए ताकि गांववाले यह महसूस कर सकें कि उनके यहाँ ग्रामदान हुआ है और उन्होंने करवाया है। वहाँ अहिंसक क्रान्ति का ठोस आधार कायम हो सके इस दृष्टि से ग्रामदान के बाद प्रखण्ड ग्राम स्वराज्य समितियों का गठन करना आवश्यक है जिनमें ग्रामसभाओं के प्रतिनिधि एवम् सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं का सहयोग हो।

५. राज्यदान के संकल्पों की पूर्ति के लिए जिलों में सघन कार्य करने के साथ-साथ जहाँ जैसी स्थिति हो, प्रान्तीय स्तर की पदयात्राएं भी आयोजित की जांय तो राज्यभर में ग्रामदान का वातावरण बन सकेगा।

६. ग्रामदान की पुष्टि के कार्यक्रम में सरकारी कानून की बाट न देखकर ग्रामसभाओं द्वारा अपनी जिम्मेदारी ग्रहण करने की तारीख की घोषणा करके आगे बढने का एक सुझाव आया पर इस बारे में यह महसूस किया गया कि अभी शायद इस प्रकार के कार्यक्रम के लिए समय नहीं आया है।

७. केरल में जो राजनैतिक दृष्टि से जनमानस की विस्फोटक स्थिति चल रही है, उसमें सर्वोदय और ग्रामदान का क्या स्थान है, उसका अध्ययन करने के लिए एक अध्ययन टीम वहाँ जानी चाहिए।

www.vinoba.in

८. उडीसा में ग्रामदान प्राप्ति के काम मे गति लाने के लिए यह आवश्यक है कि वहाँ के बे-जमीन लोगों को तुरंत ग्रामदान की या सरकारी जमीन दिलाई जाय ताकि वे नक्सलवादियों के प्रभाव में न आ सकें। जमीन का बटवारा शीघ्रातिशीघ्र कैसे सम्पन्न हो सके, इसकी पद्धति खोज निकालनी है।

९. अब बिहार दान के बाद देश के राजनैतिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए येलवाल ग्रामदान परिषद की तरह एक सर्वदलीय कांफ्रेंस का आयोजन किया जाना चाहिए।

१०. ग्रामदान प्राप्ति में लगे कार्यकर्त्ताओं के मनोबल को ऊंचा उठाए रखने की अत्यंत आवश्यकता है। अतः उन्हें अपने विचार प्रकट करने का पूरा मौका मिलना जाहिए।

२. पुष्टि :

तीन मुद्दों पर विचार किया गया :

१. ग्रामसभा का संगठन

२. बीघा-कट्ठा बांटना

३. मिलकियत-विसर्जन

१. ग्रामसभा का संगठन :

१. शीघ्र किया जाय-अभियान या अतितूफान की प्रणाली से। नवम्बर से अप्रैल तक सघन अभियान बिहार में चलेगा। श्री धीरेन्द्रभाई और श्री जयप्रकाश नारायण के दौरे करवाए जांय। शिक्षण-शिविर हों। ग्रामसभा के संगठन से स्थानीय नेतृत्व प्रकट होगा।

२. ग्रामसभा को सक्रिय कैसे बनाया जाय :

१. वह समस्याएं ली जाय जो गाववालों की नित्य की चिंता के विषय हों।

२. ऋणमुक्ति का कार्य उठाया जाय-इससे ग्राम सभा का अभिक्रम भी प्रकट होगा और वह जनप्रिय भी बनेगी।

३. महिला लोकयात्रा का आयोजन किया जाय।

४. ग्रामस्वराज्यमूलक सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यालयों के मार्फत से चलाया जाय।

५. पत्रिका हर गांव में पहुँचे और उसे पढ़कर सुनाने का प्रबन्ध किया जाय।

३. मिलकियत विसर्जन :

१. ग्राम-सभा की इजाजत के बिना जमीन की बिक्री न हो।

२. ग्राम-सभा के नाम पूरे गांव के रेवेन्यू की एक रसीद कटे तो इसका बहुत प्रभाव पड़ेगा क्योंकि तब ग्रामसभा का महत्व गांववालों की नजर में बढ़ेगा। बिहार में 'मारफती-रसीद' का नियम है—कानूनी पुष्टि के पहले मारफती-रसीद से काम चलेगा।

३. कानूनी पुष्टि को जहां तक संभव हो, सरल बनाया जाय। किन्तु कानूनी पुष्टि की प्रतीक्षा किए बिना ग्राम-सभाएं मिलकियत विसर्जन और भूमि वितरण का काम प्रारंभ कर दें।

४. पुष्टि के सिलसिले में यह चर्चा हुई कि क्या ५१ प्रतिशत जमीन की शर्त का कानूनी अमल करने में कठिनाई हो तो क्या उसे छोड़ दिया जाय ?

(अ) कुछ लोगों की राय हुई कि छोड़ देना ठीक होगा क्योंकि 'मिलकियत विसर्जन' बिना विस्तृत वितरण दिए हो सकता है।

(ब) परन्तु अन्य लोगों ने कहा कि कानूनी हस्तांतरण तो तभी होगा जब व्यक्तिगत किसान का नाम काटकर उसकी जगह ग्रामसभा का नाम चढ़ जाय।

(स) लेकिन ऐसा होने में अगर ग्रामदानी गांव में भूमि ५१ प्रतिशत से कम निकली तो ग्रामदान टूट जायगा और ग्रामसभा का विघटन भी हो जायगा। इसके लिए यह विकल्प सामने आया कि दो प्रकार की ग्राम-सभाएं बनें। कानूनी पुष्टि को सरल बनाने के लिए यह सुझाव सामने आया कि व्यक्तिगत पुष्टिकरण की आव-

यकता नहीं है । केवल यह गजट किया जाय कि जिन्हें एतराज आपत्ति--हो केवल उन्हीं से पूछा जाय ।

३. भूमिवितरण-बीघा-कठ्ठा बांटना--

१. बीघा-कठ्ठा बांटने में डिफेक्टो और 'डिजूरे' साथ-साथ चलना चाहिए क्योंकि हम जो कुछ डिफेक्टो वितरित करेंगे संभव है 'डिजूरे' से वह टूट जाय । 'डिजूरे' (कानूनी पुष्टि) को अधिकाधिक आसान बनाया जाय ।

२. बीघा-कठ्ठा किस प्रकार निकाला जाय, इसके विषय में यह आम राय प्रकट हुई कि व्यक्तिगत भूमि न बांटकर पूरे गांव की कुल बीघा-कठ्ठा २० वां हिस्सा निकालने के बाद बांटा जाय । इसके लिए चकबंदी की आवश्यकता होगी ।

३. वर्तमान पंचायत कानून में ग्रामसभा के मुद्दों को नजर रखते हुए परिवर्तन किया जाय ।

४. हिंसा की समस्या और शांतिसेना कार्य--

१. ग्रामदानी ग्राम-सभाओं को ग्राम-शांतिसेना के साथ जोड़ा जाय ।

२. सर्व सेवा संघ द्वारा सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया जाय ।

३. अभयमुक्ति के लिए यात्राएं हों ।

४. दंगों के क्षेत्र में शांति केन्द्रों द्वारा लोक मानस पर प्रभाव हो ।

५. अंतर-प्रान्तीय सद्भावना यात्राओं का आयोजन किया जाय ।

६. व्यापक शिक्षा का प्रचार किया जाय ।

७ सर्वोदय शाखाएं सभी शाखाएं शान्ति सैनिक हैं ।

८. चुनाव-पद्धति का पर्याय--आर्थिक पद्धति का पर्याय ।

९. अफवाहों का खण्डन; सही जानकारी देना ।

१०. विद्यार्थियों में शान्ति सेना प्रशिक्षण अनिवार्य हो ।

११. मुसलमानों में हमारा काम बढ़े--सम्पर्क, मैत्री से ।

१२. हिन्दू 'कुरानसार' पढ़े और मुसलमान 'गीता-भागवत्' पढ़े ।

१३. कार्यकर्ता धर्म-निरपेक्ष बने ।

१४. अवांछित तत्वों का भी सहकार लें ।

१५. सर्वोदय-पात्र द्वारा घर-घर से स्नेह संबंध ।

१६. सर्वोदय साहित्य स्कूल-कालेज में अनिवार्य हो ।

१७. मोहल्ला समितियां बनें ।

१८. हिंदू-मुसलमान तथा अन्य जाति में परस्पर शादियां हो ।

१९. अखबार साम्प्रदायिकता रोकने में सहकार करें ।

२०. शिक्षितों में से बेकारी हटाना ।

५. राष्ट्रीय परिस्थिति और हमारी भूमिका—

१. गोष्टी यह अनुभव करती है कि यद्यपि ग्रामदान और ग्राम-स्वराज्य के कार्यक्रमों के द्वारा इस समाज और राष्ट्र की आधार भूत समस्याओं से संबंध है । फिर भी आंदोलन की व्यूह-रचना में देश की तत्कालीन परिस्थिति से इस आंदोलन का एक अलगाव प्रकट हुआ है । हम अनुभव करते हैं कि हमारे आंदोलन में राष्ट्र की समग्र दृष्टि का अभाव रहा है, जिसके कारण हम अन्तर्राष्ट्रीय, शैक्षिक शहरी और औद्योगिक तत्त्व ज्वलंत राजनैतिक समस्याओं के प्रति अपेक्षाकृत उदासीन रहे हैं। अतः इन सभी मोर्चों के बारे में भी हमें सजग एवम् सक्रिय रहकर आवश्यक जन-शिक्षण करना चाहिए और ऐसे प्रश्नों के बारे में सर्वोदय की दृष्टि भी पेश करनी चाहिए ।

२. उपर्युक्त जन शिक्षण एवम् कार्यक्रम प्रसार के हेतु सर्व सेवा संघ के अंतर्गत इन समस्याओं पर विचार-विमर्श करने तथा अध्ययन-सामग्री प्रस्तुत करने के लिए एक विशेष विभाग का संगठन आवश्यक है । साथ-साथ सर्व सेवा संघ को भी देशकी इन समस्याओं के संबंध में अपनी राय समय-समय पर जाहिर करनी चाहिए और यथा संभव उसके कार्यान्वयन के लिए प्रयास करना चाहिए ।

३. विशेष क्षेत्रों जैसे सीमावर्ती, आदिवासी, मजदूर, छात्र आदि क्षेत्रों में सर्वोदय कार्य के कुछ केन्द्र स्थापित होने चाहिए ।

www.vinoba.in

४. विभिन्न मोर्चों पर काम करने के लिए सर्व सेवा संघ समर्थ संगठन बन सके, इसकी अत्यंत आवश्यकता अनुभव की गई।

५. देश जिस स्थिति में आया है, उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि श्री विनोबाजी के मार्ग-दर्शन में सर्व-सेवा संघ देश के प्रमुख क्षेत्रों की एक परिषद तुरन्त बुलाने और देश को टूटने से बचाने के लिए जिन प्रवृत्तियों को रोका जाना सर्व सम्मत हो उन सब पर अमल करें। राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं में नेशनल कन्सेन्सस प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय एवम् राज्यस्तरीय प्रभावकारी कन्वेशन्स के आयोजन होने चाहिएं।

३. देश में बढती हुई हिंसा के प्रति श्रद्धा और अहिंसा के प्रति अश्रद्धा निराकरण करने के लिए हमें शब्द और विचार लेकर नहीं बल्कि सेवकों के रूप में प्रश्नों का अहिंसा द्वारा निराकरण का कार्यक्रम लेकर जनता के बीच पहुँचे।

७. यह ठीक है कि ग्रामदान ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रमों के द्वारा हम राष्ट्र के प्रमुख प्रवाह के साथ हैं किन्तु इस मोर्चे के अलावा दूसरे मोर्चों पर भी अन्याय के प्रतिकार के लिए हमें अहिंसक रीति से सनद्ध होना होगा।

श्री विनोबाजी :

श्री विनोबाजीने गोष्ठियों की रिपोर्ट पढ ली थी और उस पर वे कुछ ध्यान से सोचते भी रहे। उन्होंने कहा :

अभी मैंने यहाँ पर गोष्ठियों के निष्कर्षों की रिपोर्ट पढी। उसका सार पढकर मुझे लगा कि कुछ लोग भ्रम में हैं। हम पिछले १६-१७ सालों से हृदयपरिवर्तन के काम में लगे हुए हैं। हमको हमारे चिंतन में व्यापकता रखनी चाहिए। हम यदि संकुचित बनेंगे तो अपना कार्य सही ढंग से नहीं कर पाएंगे। हमने पहले अखिल भारत सर्व सेवा संघ बनाया था उसमें से 'अखिल भारत' शब्द बाद में हटा दिया। यह हटाना अपने में एक संकेत लिए हुए है। यह बात सही है कि कल्पना में हमने व्यापक बनने का तय किया। अब हमको उसे अपने व्यवहार में लाना है।

संस्कृत में एक शब्द है विश्वमानुषः तो हमें विश्वमानुषः वृत्ति से काम करना है।

आजकल दुनिया में क्या चलता है। हम लोग रोज अखबार पढते हैं। मैंने तो इन दिनों अखबार पढ़ना बंद कर दिया है। फिर भी मेरे साथी मुझे खास-खास खबरें लिखकर बता देते हैं तो मैं देखता हूँ कि आज बडे-बडे देश एक-दूसरे के खिलाफ राजनीति चला रहे हैं। यह दुनियां भर में घूमनेवाले लोग भी अपने व्यवहार और अपनी वृत्ति से व्यापक नहीं बने हैं। तो अधिक घूमना व्यक्ति को व्यापक नहीं बनाता है। गौतम बुद्ध कितने घूमे थे। मुश्किल से चार-पांच जिले में घूमे होंगे। ईसा मसीह भी बहुत थोड़े घूमे थे। फिर भी आज उनका दर्शन सारे विश्व में फैला हुआ है तो हम लोग जो कभी-कभी सारी दुनियां में विचार-प्रचार के लिए जाने की सोचते रहते हैं तो उसके बजाय जहाँ हम जिस क्षेत्र में हैं और जितना सहज रुप से जा सकते हैं, उतना अगर निष्ठापूर्वक जावें तो उसका असर दुनियां के देशों में बिना जाये भी पड़ेगा।

सेवा के मामले में एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि अहंकार है तो दो सौ तोले अहकांर में पचास तोले सेवा का परिणाम एक चौथाई आनेवाला है। यदि अहकांर शुन्य है और सेवा एक तोला ही है तो उसका परिणाम उस पचास तोले सेवा से चौगुना होगा। यह तो आप जानते ही हैं कि शुन्य से गुणा करने का परिणाम अनंत है। तो हमें अहंकार शून्य होकर अपना कार्य करना चाहिए। यह अहंकार शून्य वृत्ति ही हमें व्यापक बनाती है। भाषा तो चन्द लोगों को एकत्र करती है तो बहुतों को तोडती भी है। हम अपने संतो को देखें तो ज्ञानेश्वर का स्मरण आता है जिन्होंने छोटे से क्षेत्र में रहकर व्यापक रुप से काम किया। यह समर्पण भावना से कार्य व्यापक बनता है।

मैंने अभी एक जगह रिपोर्ट में पढ़ा कि हम मेनस्ट्रीम से कट गए हैं। आजकल हिंदुस्तान में दो दुनियां हैं एक जनप्रवाह और दुसरी अखबारी दुनियां। तो अखबारों में चाहे भले हमारी खबरें कम आती हों लेकिन जनप्रवाह से कटे नहीं हैं। अखबरों में तो रामनवमी के दिन राजा रामका

नाम नहीं आएगा बल्कि राजारामगढ़ की चर्चा पढने को मिलेगी। अखबारी दुनियां में राजाराम से राजा रामगढ़ बडा है। और फिर अखबारों की कीमत ही कितनी है। एक दिन पुराना अखबार कोई पढ़ने को तैयार नहीं। अगर शाम को दूसरा संस्करण निकलता है तो सुबह का पढने के लिए लोग तैयार नहीं हैं।

अखबारी दुनियां के अलावा अगर जनप्रवाह की दुनियां में देखें तो हम पाएंगे कि बाईबिल, कुरान, गीता, रामायण यह ज्यादा पढे जाते हैं। इसलिए मेरी सलाह है कि हम अखबारी दुनियां में ज्यादा न फंसें। उसमें खबरें न छपना हमारे लिए व्रज कवच की तरह है। नहीं तो जो उसमें खबरें देते हैं तो उनको कभी-कभी कहना पड़ता है कि यह गलत छप गया वह गलत छप गया। रामकृष्ण परमहंस तो अखबार छुते ही नहीं थे। गांधीजी के जमाने में दस-पांच बड़े शहरों में व्याख्यान हो गया तो बड़ा हो-हल्ला मच जाता था। अब आज तो वह भी नहीं होता।

हम को तो जन प्रवाह का ध्यान रखकर देश की जनता के साथ ज्यादा-से-ज्यादा एक रूप होना चाहिए। हमें शंकर, रामानुज आदि के अनुभवों से सीखना चाहिए। बाबा का भी ऐसा ही अनुभव है कि वह पैदल गांव-गांव घूमा तो उसे लाखों एकड़ का भूदान मिला, ग्रामदान मिला। जिलादान और प्रदेशदान तक हम आ पहुँचे हैं। अगर मैं हवाई जहाज में घूमता तो बस हवादान मिलता। मैं जितना घूमा उससे दस गुनी कार्यकर्ताओं की यात्रा रही होगी।

हमारे अपने अखबार भी ऐसे विलक्षण हैं कि वे बहुत-सी जानकारी छिपाते हैं और मर जाने के बाद लोगों के चरित्र और गौरव की बात की जाती है। मद्रास में जो सर्वोदयपात्र चल रहे हैं उनके साथ जब कांची-पीठ के शंकराचार्य के पात्र का सवाल आया तो शंकराचार्य ने कहा कि सर्वोदय का ही पात्र रखा जाये, उनका नहीं। यह एक बहुत बड़ी बात है और हमारा काम जैसे-जैसे बढेगा, वैसे-वैसे हम लोगों का विश्वास पा सकेंगे। जहाँ तक जानकारी देने और छपाने का सवाल है तो सिपाही लोग अपनी जानकारी कभी नहीं देते। जिनको जानकारी करनी होती है वे

फ्रण्ट पर जाकर संकलन करते हैं। महाभारत का एक प्रसंग है कि भीम चावल खा रहा था, बकासुर उसको मुक्के मारता रहा पर भीम खाता ही रहा। जब वह खा चुका तो उसने एक ही प्रहार में बकासुर को खत्म कर दिया। यदि वह अपना खाना छोड़ देता और उससे लड़ने लगता तो शायद कमजोरी में खुद मार खा जाता। तो आजकल अनेक समस्याएं ठोकी-पीटी जा रही हैं। इसमें हमारा तरीका भीम वाला होना चाहिए कि पहले काम कर लेने दो। इसे आप अत्यंत मूढ़ एकाग्रता भी कह सकते हैं। अर्जुन ने कहा कि आँख दीखती है दूसरों ने कहा डाली। युधिष्ठर ने कहा कि गुरूजी भी दिखते हैं और कौआ भी। तो ऐसी स्थिति में द्रौणाचार्य यह सुनकर खुश नहीं हुए कि वह भी दिखते हैं बल्कि उन्होंने अर्जुन को कौए की आंख में बाण मारने को कहा। तो यह मैंने एक सहज भाव से आपके सामने रखा। संभव है इसका स्पर्श हमारे दूसरे साथियों को हुआ होगा। लेकिन ऐसे अधिवेशन में जब कि हम एक हद तक पहुँच गए तो उसके बाद दो-चार बाजू लेकर ध्यान करना गलत नहीं होगा। इसलिए आप समग्र चिंतन के लिए दूसरी चीजें जोड़ना चाहें तो जोड़ सकते हैं और अब समय आया है कि वह जोड़ी जाय।

दूसरा दिन

२४ अक्टुबर, ६९ : चौथी बैठक दोपहर ३ बजे से ६ बजे सायं :

प्रातः की ग्रामदान विषयक चर्चाओं को ही मुक्त चर्चा के रूप में शुरू किया गया जिसमें देशभर से आए हुए प्रतिनिधियों ने अपने-अपने विचार संक्षेप में रखे।

श्री शेंदुर्णीकर (महाराष्ट्र) :

हमें जिला परिषदों पर ध्यान केन्द्रित कर के ग्रामस्वराज्य कराना चाहिए। ग्रामदान-ग्राम-स्वराज्य का कार्यक्रम ही आज की समस्याओं का एकमात्र हल है।

www.vinoba.in

श्री जेठालाल (गुजरात) :

खादी के कार्यकर्ता ग्रामाभिमुख हों तो एक रुपए की खादी ७० पैसे की हो सकती है। इस काम के लिए समर्थ व्यक्तियों को जिम्मेवारी लेनी होगी।

श्री विठ्ठलदास बोदाणी (गुजरात) :

अपने आंदोलन के साथ साहित्य-प्रचार की बहुत आवश्यकता है। अभी कुछ सैट निकले हैं, उनका हमें अधिक-से-अधिक प्रचार करना चाहिए नहीं तो जैसी हालत खादी की आज हो गई है, वैसी ही कल सर्वोदय-साहित्य की हो सकती है।

श्री रामेश्वरदास तोतला (मध्यप्रदेश) :

देश को विघठन से बचाने के लिए सर्व सेवा संघ को राजनीतिक दृष्टि से प्रयास करना चाहिए। वह जल्द-से-जल्द विभिन्न राजनैतिक दलों को इकठ्ठा करे और रास्ता निकालने की कोशिश करे।

श्री व्येंकट रामाराव (आंध्र) :

दक्षिण में ग्रामदान आंदोलन दिनोंदिन प्रगति कर रहा है। हमें तेलंगाना पर विशेष ध्यान देना होगा और साथ ही साथ एक बात और है कि जबतक देश में पूर्ण नशाबंदी नहीं हो जाती, तबतक हमारा काम पूरा असर नहीं ला सकता।

श्री प्यारेलाल शर्मा (पंजाब) :

हमें यहाँ वही बातें करनी चाहिए जो कि हम करें। हम अपने को राजनीति से दूर कहते हैं फिर भी वेश बदलते रहते हैं। क्रान्ति तो दरवाजे पर खड़ी है, हमें उसे स्वीकार करने की तैयारी होनी चाहिए।

श्री सत्यन्भाई (केरल) :

सभी रचनात्मक संस्थाओं का एक-एक प्रतिनिधि लेकर सर्व सेवा संघ बनाना चाहिए। अमीरों ने जमीन बेचकर बड़े-बड़े व्यापार शुरू कर दिए हैं। आगे जाकर खेती कौन करेगा यह हमारे सामने एक सवाल है।

श्री शंकरलाल मण्डलाई (मध्यप्रदेश) :

अगर आत्मबल हो तो कमजोर भी सफलता प्राप्त कर सकता है। हर कार्यकर्ता को सत्याग्रही बनना चाहिए। अभी हमने ३४ दिन का सत्याग्रह चलाया और उसमें सफल रहे।

श्री रामवतार (दिल्ली) :

हम ग्रामदान पर बार-बार हस्ताक्षर कराने पर जोर देते रहते हैं लेकिन जरूरत इस बात की है कि ग्रामदानी गांव के स्वरूप की जो हमारी कल्पना है, उसे हम साकार करने की कोशिश करें। यह करो और मरो—केवल कहने की बात नहीं होनी चाहिए।

श्री मणिलाल ठोकरसी (मणिपुर) :

आजकल मणिपुर में राष्ट्रपति का शासन है। वहाँ सर्वोदय मण्डल भी बना है। भूदान-ग्रामदान आंदोलन वहाँ भी पूरी तरह सफल हो सकता है। आप लोगों को वहाँ के काम की ओर ध्यान देना चाहिए।

श्री बद्रीनारायण गाडोदिया (महाराष्ट्र) :

शांतिसेना के साथ सर्वोदय-पात्र का विचार जोड़ा जावे। अहमदाबाद की घटना हमारे लिए एक बहुत बड़ा सबक है। अशांति के समय काम करने के साथ-साथ इस ओर आए कि अशांति हो ही नहीं पाए। इसके लिए अधिक-से-अधिक युवक-वर्ग के बीच में काम किया जावे और चुनावों के समय जो साम्प्रदायिकता फैलती है, उसे रोका जावे।

प्रातः ४ गोष्ठियों की रिपोर्ट पढ़ी गयी थी। पांचवी गोष्ठी की रिपोर्ट "खादी का भविष्य" विषय पर श्री वी. रामचंद्रन् ने पढ़ी, जो निम्न प्रकार है :-

देश की शांतिपूर्ण तथा न्यायोचित आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन में खादी और ग्रामोद्योग का स्थान मौलिक है। चर्चा में यह भी सामने आया कि देश में भूदान ग्रामदान का जो काम हुआ, खासकर के बिहार में, उसमें खादी ग्रामोद्योग के संगठन से काफी मदद पहुंची है। फिर भी यह

महसूस किया कि ग्रामदानी गांवों में सामाजिक और आर्थिक पुनर्जीवन में खादी ग्रामोद्योग को यदि प्रभावी रूप से मददगार होना हो तो खादी-कार्य के आज संगठन में कुछ मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है। गांव में एक ओर हर बात के लिए शासन की ओर देखने की लाचार की प्रवृत्ति बढ़ रही है और दूसरी ओर देश की बाजारू यंत्रणा का उनपर असर हो रहा है। इसका इलाज भी खादी ग्रामोद्योग के पुनर्गठन से निकालना चाहिए, ऐसी गोष्ठी की राय रही है। इस विषय में भी सभी निश्चित निर्णय पर पहुंचे कि जो भी मौलिक परिवर्तन खादी-ग्रामोद्योग के मौजूदा संगठन में करना होगा, यह अविलंब होना चाहिए।

पहली बात यह ध्यान में रखनी होगी कि गांधीजी ने खादी की बात भारतीय देहातों की दरिद्रता, बेकारी और अर्द्ध बेकारी के इलाज के रूप में सोची थी। भारत में कृषि-विकास की नितांत आवश्यकता को मान्य रखते हुए भी यह कहना होगा कि जनसंख्या का और जमीन का जो अनुपात हमारे देश में है उसके कारण गांव की गरीबी और बेकारी की समस्या का उचित हल केवल अकेले कृषि के विकास से नहीं निकलेगा। यह तो गांधीजी की दूर-दृष्टि थी कि भारत की मूलभूत समस्या को उन्होंने पहचान लिया और उसके लिए इलाज भी सुझाया। इलाज यह सुझाया कि भारत में विकेन्द्रित ग्रामोद्योगों का सिलसिला खास कर के कच्ची चीजों का पक्का माल बनाने का और रोजमर्रा की वस्तुओं का निर्माण गांवों में ही हो। यही हमारे कृषि प्रधान देश के सफल आर्थिक ढांचे का खेती और गोपालन के विकास के साथ-साथ अनिवार्य अंग होगा।

खादी और ग्रामोद्योग की संस्थाओं ने विकेन्द्रित ग्रामोद्योगों पर आज तक जोर दिया है और सरकार की सहायता इन उद्योगों को देहातों में सुस्थिर करने के लिए प्राप्त करने की भी कोशिश की है। भारत सरकार, योजना आयोग और खादी ग्रामोद्योग की संस्थाओं ने इसके लिए विभिन्न पर्याय आजमाकर देखे हैं। सरकार ने पहली बात यह की कि मिलों पर अतिरिक्त कर (सेस) बिठाया। लेकिन जल्दी ही उसे समाप्त कर के इन उद्योगों को सीधे सब-सिडी देने का फैसला किया। अनुभव यह आया कि

इस तरह से सीधी सहायता कुछ मर्यादा तक ही देना संभव है। इसलिए योजना आयोग के सुझाव पर सरकारने 'कामन प्रोडक्शन प्रोग्राम' की दिशा में सोचना शुरू किया। लेकिन जो तीन पंचवर्षीय योजनाएं बनीं उनपर से यह साफ दिखाई दिया कि यह नीति बहुत ही अपर्याप्त थी। इस मर्यादा के कारण खादी-ग्रामोद्योग की संस्थाओं को कुछ अंश तक ही काम करने का मौका मिला। वस्त्र के उद्योग में मिलों की तुलना में खादी २% से खादी कभी भी आगे नहीं बढ़ी। और अन्य उद्योगों में ग्रामोद्योग ५% से आगे नहीं बढ़े। खादी-ग्रामोद्योग केवल राहत पहुँचाने का काम करनेवाले हैं। इतना ही यदि माना गया होता तो जो काम हुआ उससे इन संस्थाओं को संतोष भी होता। लेकिन खादी-ग्रामोद्योग का दावा तो यह रहा है कि ग्रामीण विभागों में जो बेकारी और गरीबी है (और जिसे सभी अर्थ-शास्त्रज्ञों ने स्वीकार किया है) वह बड़े केन्द्रित उद्योगों से या केन्द्रित कृषि विकास से कभी दूर होनेवाली नहीं है।

गोष्ठी की यह राय रही कि सरकार से सबसिड़ी के रूप में जो सहायता मिलती रही उसकी अपेक्षा खादी और ग्रामोद्योग को संरक्षण मिलना चाहिए और सरकार से मांग करनी चाहिए कि उत्पादन के क्षेत्र में खादी-ग्रामोद्योग के लिए कुछ क्षेत्र सुरक्षित रखे जांय। यह होगा तभी खादी-ग्रामोद्योग की असली शक्ति प्रकट होगी। इन उद्योगों को कृत्रिम सहायता देकर खड़ा रखने की जिम्मेवारी से सरकार मुक्त होगी और इस काम में लगे कार्यकर्ता भी किसी-न-किसी आधार पर अवलंबित रहने की लाचारी की भावना से मुक्त हो जायेंगे।

गोष्ठी की यह भी राय रही कि खादी-ग्रामोद्योग को ऐसा संरक्षण मिलने के लिए किसी-न-किसी प्रकार का शान्तिपूर्ण दबाव भी देश में निर्माण होना चाहिए। ऐसा दबाव तभी निर्माण होगा जब संस्थाएं उद्योगों की तरफ मुड़ेंगी। इसका मतलब यह हुआ कि लोकाधार के सिवा अन्य दूसरे आधारों से संस्थाओं को धीरे धीरे मुक्त होना चाहिए।

गोष्ठी ने सुझाव दिया कि विनोबाजी के मार्ग-दर्शन में सर्व सेवा संघ की खादी समिति इसे दिशा में कोई प्रत्यक्ष कृति की योजना बनावे।

www.vinoba.in

उपरोक्त नीति को स्वीकार करने का मतलब यह होगा कि कार्यकर्ताओं और लोगों को आज की मनो-भूमिका में नयी दिशा अपनानी होगी। बिहार राज्यदान के बाद ग्रामदान आंदोलन के जरिये जो प्रचण्ड संभावनाएं उपस्थित हो रही हैं उनका उपयोग करके कार्यकर्त्ताओं को चाहिए कि वे ग्राम-सभाओं का गठन कर के उनके क्षेत्र में चलने वाले खादी-ग्रामोद्योगों का संचालन इसके आगे भी यही करें। यह स्वाभाविक है कि ग्राम-सभाएं कृषि-विकास की ओर पहले ध्यान देंगी। उसमें उनको पूरी मदद भी देनी चाहिए। लेकिन गांव में भूमिहीन किसानों की बेरोजगारी और गरीबी की जो भयानक समस्या चुनौती के रूप में आज खड़ी है, उसका मुकाबला करना ही होगा। सर्वोदय का लक्ष्य समाज का नीचे से गठन यानी समाज की अंतिम सीढ़ी के अंग को ऊपर उठाना है। इसलिए ग्रामीण बेकारी और गरीबी के प्रश्न को हम नजर-अंदाज नहीं कर सकते। भारत की सामाजिक व्यवस्था में न्यायोचित और शान्तिपूर्ण ढंग से परिवर्तन लाना हो तो कार्यकर्ताओं को और समाज को इस चुनौती को स्वीकार करना होगा और गो-पालन तथा विकेन्द्रित ग्रामोद्योग का व्यापक पैमाने पर गांवों में विस्तार करने का कार्यक्रम जल्द-से-जल्द हाथ में लेना होगा।

संक्षेप में गोष्ठी के निर्णय निम्न-प्रकार हैं :

(१) प्रचण्ड बेकारी और दारिद्र्य के रूप में आज देश में सामाजिक और आर्थिक संकट खड़ा है।

(२) शान्तिपूर्ण परिवर्तन में विश्वास रखने वालों को इसका जल्द-से-जल्द हल ढूढ़ने की चुनौती का सामना करना है।

(३) खादी और ग्रामोद्योग व्यापक प्रमाण में गांवों में शुरू करने से ही नयी क्रान्ति का प्रारंभ होनेवाला है।

(४) उत्पादन में कुछ क्षेत्र खादी-ग्रामोद्योग के लिए सुरक्षित रखने से ही देश के अर्थ-शास्त्र में सफल सहयोग में उद्योग दे सकेंगे।

(५) इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए खादी-ग्रामोद्योग का पुनर्गठन इस प्रकार होना जरूरी है जिससे शासन या तत्सम आधार पर अवलंबित न रहकर इस उद्योग को लोक-आधार प्राप्त हो।

सीमांत गांधी स्वागत प्रस्ताव :

संघ अध्यक्ष श्री एस. जगन्नाथन् ने सीमांत गांधी बादशाह खांन के बारे में सूचना दी कि वे सम्मेलन में आने वाले थे पर अहमदाबाद की स्थिति के कारण वहाँ गए हैं और शांति सेना के एक जनरल के नाते फ्रण्ट पर हैं, ऐसा उनका मानना है। आजकल वे बापू की आवाज ही उठा रहे हैं। सर्वोदय परिवार इसमें उनके साथ है। उन्होंने सद्भावना प्रकट करने के लिए एक प्रस्ताव अधिवेशन के समक्ष प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति से निम्न-प्रकार से स्वीकृत किया गया :

"सर्व सेवा संघ की यह सभा २२ वर्ष की जुदाई, कष्ट और कठिनाई की अवधि के बाद बादशाह खांन के भारत आगमन पर उनका हार्दिक स्वागत करती है, तथा उनके प्रति सम्मान व स्नेहभरी शुभाकांक्षा अर्पित करती है। इस अवसर पर आजादी, मानव-बंधुत्व और परस्पर प्रेम के लिए उनकी सेवाओं का सहज स्मरण हो आता है।

बादशाह खांन ने हमें तथा देश के सम्पूर्ण जन-समुदाय को हृदय-स्पर्शी संदेश दिया है, जैसा कि पिछले कई वर्षों में हमें नहीं मिला। उन जैसे साधुमना की उपस्थिति और सामान्य सच्चाई को सहज सरलता के साथ प्रकट करनेवाले उनके उद्गारों ने महात्मा गांधी की याद को पुनर्जीवित कर दिया है। इसके फलस्वरुप शताब्दी कार्यक्रम को एक गहराई और दिशा प्राप्त हुई है, जो कमी बराबर अनुभव की जा रही थी।

सर्व सेवा संघ और पूरा सर्वोदय आंदोलन देश निवासियों को घृणा, हिंसा और सर्वनाश के रास्ते से विरत करने के बादशाह खांन के कठिन प्रयास-कार्य के पूर्ण समर्थन का अपना संकल्प प्रकट करता है।"

श्री विनोबाजी :

सीमांत गांधी का भारत आगमन, गांधीजी का ही आगमन है। उनके सम्मान में स्वीकृत प्रस्ताव में जो भावना व्यक्त हुई है, वह हमारी न्यूनतम जिम्मेवारी है। हमें इससे बहुत अधिक करना है। गांधीजी को जिन परिस्थितियों का मुकाबला करना पड़ रहा था, लगभग वही परिस्थितियां

आज भारत में हैं। और ऐसे समय में सीमांत गांधी के रुप में गांधीजी का ही अवतरण हुआ है, ऐसा महसूस होता है।

खादी-ग्रामोद्योग गोष्ठी की चर्चा के निष्कर्षों को सुनने के बाद विनोबाजी ने कहा कि खेती के साथ ग्रामोद्योगों को जोड़ना होगा। पक्का माल गांव बनाना चाहिए। इन उद्योगों के बारे में सोचना होगा कि गांव की सत्ता बाजार पर कैसे जाय! ग्रामीण वस्तुओं के बाजार भाव गांववालों के हाथ में होने चाहिए। मक्खन बेचकर कपड़ा नहीं खरीदना है बल्कि मक्खन खाओ और कपडा बनाओ यह स्थिति आनी चाहिए। केरल के लोग काजू खाते नहीं। डालर के लिए अमेरिका भेजते हैं। गांव के लोग खाना खाकर बचा हुआ बेचेंगे तो बाजार भाव उनके हाथ में आएगा।

श्री जयप्रकाश नारायण :

अहमदाबाद में हुए साम्प्रदायिक दंगों के पीछे पाकिस्तान का हाथ हो सकता है, ऐसी शंका मैंने जाहिर की थी। इस बात को लेकर काफी चर्चा हुई है, हांलाकि यह एक अनुमान ही था। मेरा कोई निश्चित मत था, ऐसा नहीं है। मैं इस प्रश्न पर विचार करता रहा तो एक बात ध्यान में आई कि पिछले दिनों यह जो साम्प्रदायिक दंगे हुए, उनमें से अधिकांश में पहल मुसलमानों की तरफ से हुई। मैं सोचता रहा कि इसका क्या रहस्य हो सकता है? यहाँ के मुसलमान इतना तो जानते ही हैं कि हम दंगे शुरू करेंगे तो आखिरकार उसका नतीजा उन्हीं को भोगना पड़ेगा। इसलिए सामान्य तौर पर वे पहल नहीं करेंगे।

लेकिन इस देश में दंगे हों इसमें सबसे अधिक दिलचस्पी पाकिस्तान को है। वहाँ के शासक जिस तरह सोचते हैं, उससे उन लोगों को लगता है कि यहाँ दंगे होने में पाकिस्तान को फायदा है। इस बार भी अहमदाबाद की घटनाओं का लाभ रबात सम्मेलन में याहिया खां ने उठाने का प्रयत्न किया। इसलिए अगर दंगों में मुसलमानों की ओर से पहल होती है तो वे मुसलमान पाकिस्तान के एजेंट होने चाहिए या ऐसे उग्रवादी लोग जो "हंसकर लिया पाकिस्तान-लड़कर लेंगे हिंदुस्तान" ऐसे नारों में मजा

लेते हैं। इस प्रकार मैं इस अनुमान पर आया कि इन दंगों के पीछे पाकिस्तान का हाथ होगा।

जो भी हो, लेकिन यह आग इसलिए झफक उठती है कि सामुदायिक मनोवृत्तिवाले हिंदू लोग ऐसे लोगों के हाथ में खेल जाते हैं। इस कारण अंततोगत्वा तो अपने देश को ही नुकसान होता है। कहा जाता है कि अहमदाबाद में दंगे हुए उसके कारण मील-कारखाने बंद रहे, सारा जीवन-व्यवहार अस्त-व्यस्त हो गया और परिणाम-स्वरुप करीब एक सौ करोड़ का नुकसान देश को हुआ। हिंदू-सम्प्रदायवाद से अंधे बने हुए लोग क्या इस पर विचार नहीं करेंगे ?

कहा जाता है कि मुसलमान देश-द्रोही हैं। यह एक गैर-समझदारी का नारा है। इस देश में जिस तरह कुछ लोग अमेरिका के हिमायती हैं, कुछ चीन के, कुछ रूस के, उसी तरह कुछ पाकिस्तान के भी होंगे। लेकिन इस पर से सभी मुसलमानों पर यह लांछन लगा देना ठीक नहीं है।

मैं कहना चाहता हूँ कि दोनों कौमों के बीच तिरस्कार की भावना फैलानेवाले लोग देश का बहुत अहित कर रहे हैं। वे समझते नहीं हैं कि अगर यह चीज इसी प्रकार चलती रही तो इस देश के मुसलमान एक दिन यह कहेंगे कि आप लोग हमारी जान-माल की रक्षा नहीं कर सकते हैं और हम हमेशा के लिए आपकी ऐडी के नीचे पिसते नहीं रह सकते। आखिर में वे ६ करोड़ हो गए हैं। याद रखिए कि अगर आप ऐसी दो कोमों के बीच तिरस्कार की भावना फैलाते रहेंगे तो देश खतम हो जायगा और आखिरकार दुबारा इस देश के टुकड़े होंगे। इस सब पर शांति से विचारना चाहिए।

मैं ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ त्यों-त्यों मुझे लगता है कि हमारे लोग बेवकूफ हैं। इस देश के लोग धर्म, विज्ञान, कला इत्यादि में काफी आगे रहे हैं लेकिन शासनकला-स्टेट क्राफ्ट में हमेशा पीछे रहे हैं। इसलिए आज भी हम इस सामुदायिक विविध पहलुओं को समग्ररूप से नहीं देख सकते। जिस डाल पर बैठे हैं, उसी डाल को काटने का काम कर रहे हैं। ऐसा

कर के वे लोग अपना अहित करते हैं, हिंदु-समाज का अहित करते हैं और देश का अहित करते हैं।

देखिए ! इस प्रकार की तंग दिली चालू रहती है इसलिए फिर मुसलमानों की तरफ से मांग उठती है कि हमारे लिए अलग क्षेत्र कर दीजिए, शहरों में भी हमें अलग-अलग मोहल्लों में बसाइए। जिन्ना ने गांधीजी से कहा था कि पाकिस्तान तो देश के गांव-गांव में पड़ा हुआ है। ऐसी परिस्थिति में सामुदायिक भावना फैलाने से देश के टुकड़े-टुकडे हो जाएंगे।

आज एक तरफ हिंदु-सम्प्रदाय वाद का तथा दूसरी तरफ मुसलमान सम्प्रदायवाद का जोरों से चल रहा है। राजनैतिक पार्टियां बात तो सभी अ-सम्प्रदायिकता की करती हैं लेकिन क्या कोई भी पार्टी ऐसी है जो कभी भी जनता के बीच जाकर सम्प्रदाय निरिपेक्षता की बात करती हो ! और आखिरकार इस सारे का नतीजा तो गरीबों को ही सहन करना पड़ता है। आप देखेंगे कि इन दंगों में सब से ज्यादा बर्बादी मजदूरों के और गरीबों के मोहल्लों में होती है। इन बेचारों का बलिदान होता है। उभाड़नेवाले उभाड़ते हैं और इन गरीबों की बलि चाहते हैं।

राष्ट्रीय स्वयम्सेवक संघ के संगठन तथा उसके अनुशासन के लिए मेरे दिल में बहुत इज्जत है। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि जो सच्चे माने में उसे "सच्चे राष्ट्रीय स्वयम्सेवक संघ" बनाना हो तो, गोलवालकरजी का कर्तव्य है कि उसके दरवाजे हिंदू, मुसलमान सब के लिए खोल दें। नहीं तो वह नाम का ही "राष्ट्रीय" संघ रहेगा, वास्तव में वह हिंदू स्वरूप सेवक संघ ही है।

खैर, साम्प्रदायवादियों की तरफ से जो प्रचार जोरों से चल रहा है, उसके खिलाफ किसी-न-किसी को तो समुदाय-निरपेक्षता की बात रखनी पड़ेगी। शांति-सेना को यह काम उठा लेना होगा। मैंने दिवाकरजी से कहा था कि पैसों के अभाव में हमारे काम में बहुत मुश्किल आती है। गांधी शांति-प्रतिष्ठान के पास एक करोड़ का फण्ड है। वह तत्व प्रचार के काम में हो रहा है। पर यह भी एक बहुत महत्व का काम है—आप उसकी

आर्थिक जिम्मेवारी उठालें तो बहुत काम हो सकता है। इस प्रकार बहुत-सी संस्थाओं और संगठनों की मदद इस काम में ली जा सकती है परन्तु यह काम योजना पूर्वक और सु-व्यवस्थित तरीके से करना पड़ेगा।

पांचवी और आखिरी बैठक

२४ अक्टूबर, ६९ : रात्रि ७–३० से ९–३० बजे :

जन-आंदोलन के बारे में चर्चा प्रारंभ हुई।

श्री रा. कृ. पाटील :

आज आरोहण ऐसी मंजिल पर आ गया है जहाँ विचारों की सफाई बहुत जरूरी है। हमें देखना चाहिए कि यह हमारा संकल्प होकर न रह जावे बल्कि वह जनता का संकल्प बने। हमें कितनी ही मंजिलें और जाना है। बिहार पर निर्भर होने की बात बार-बार कही जाती है। कभी-कभी हमारे नेताओं के कथन से भी थोड़ी भ्रान्ति फैलती है। जैसा श्री धीरेन्द्रभाई कहते हैं कि अभी आंदोलन का छोर नहीं मिला है। बार-बार यह सवाल उठाया जाता है कि यह क्रान्ति का आंदोलन है या सुधार का आंदोलन। कुछ पहले ग्रामदान को क्रान्तिकारी कहते हैं और इसे सुलभ कहकर इसकी उपेक्षा करते हैं। इन सब बातों में पड़ने के बजाय हमें ग्रामदान के बाद ग्रामसभा को सक्रिय करने पर जोर लगाना चाहिए।

श्री मनमोहन चौधरी :

बिहार में राज्यदान तक हम पहुँचे पर क्या हुआ ? अब राज्यदान के बाद क्या होगा यह लोग बार-बार पूछते हैं--कहते हैं। श्री शंकररावजी की शंकाएं भी हमारे सामने हैं। इन सब में एक ही बात है कि अगर हमने बीसवां भाग दान कर दिया तो जो १९ भाग हमारे पास रहते हैं, फिर मालकियत विसर्जन उसे कैसे कहा जा सकता है। तो इन सब के उत्तर में मैं केवल इतना ही कहना काफी समझता हूँ कि ग्रामदान की प्रक्रिया की संभावनाओं का अभी अंत नहीं हुआ है।

www.vinoba.in

श्री गोकुलभाई भट्ट :

बजूर्गों में अगर मतभेद है तो भाई नौजवानों में नहीं रहना चाहिए। यह सब चाहते हैं कि कार्यकर्ता का आंदोलन न होकर जनता का आंदोलन बने। मैं गांव का आदमी हूँ और कार्यकर्ता भी हूँ। ग्रामदान एक सही प्रक्रिया है। ग्रामसभा जैसे-जैसे कार्य करती जाएगी वैसे-वैसे सारी संभावनाएं प्रकट होती जाएंगी। सुलभ ग्रामदान तो हमारी क्रान्ति का एक चरण है। अभी हमें बहुत दूर तक चलना है।

श्री नरेन्द्र दुबे :

बड़े लोगों में जो कन्फ्युजन्स है, वे सब उनको एक बंद कमरे में बैठकर तय कर डालना चाहिए।

श्री शंकरराव देव :

वायुमण्डल खुले दिल से बहस के अनुकूल नहीं है। वाद ढूंढ़ने पर संवाद सामने आता है और जब वाद बढ़ने का खतरा होता है तो वहाँ संवाद नहीं बन पाता। जवाब-सवाल से कुछ हासिल होनेवाला नहीं है।

मेरा तो इतना ही कहना है कि देशकाल और स्थान को ध्यान में लेकर आगे बढ़ना है। सर्व सेवा संघ को क्लास-लेस बनना है। हिंसा निवारण का तरीका भी पीसफुल-शान्तिपूर्ण होना चाहिए! कम्युनिस्टों में और हमारे में यही बुनियादी फर्क है। आज वर्ग-विरोध है, इसे आप भूल नहीं सकते। अब करना यह है कि पाश्विक बल के बजाय नैतिक बल की ओर लोग अभिमुख हों। गरीबों का तैयार होना ही उनका उत्थान होना मानना होगा।

श्री राममूर्ति :

यह आंदोलन आज दो प्रश्नों के उत्तर में सिमट गया है। एक बिहारवालों को कि विहारदान के बाद क्या होगा और दूसरे प्रान्तों को कि राज्यदान कब होगा। राज्यदान से आज एक मनोवैज्ञानिक परिस्थिति उत्पन्न हुई है। वर्णवाद, वर्गवाद और संख्यावाद का त्रिभूज

टूट रहा है। लेकिन समाज को आज उसकी कोई गारण्टी नहीं है कि उसके जगह पर कोई अच्छी नई व्यवस्था कायम होगी। समाज सत्य को मानता भी नहीं और उस पर चलने को तैयार भी नहीं। गरीबों के मन में आज शंका है और अमीरों के मन में आशंका है। गरीबों की संख्या से अमीरों के मन में भय है। आज आंदोलन में दो विचारधारा है सेंक्शन और एक्शन। बिहारदान के रुप में आंदोलन को समाज का सेंक्शन मिल गया है। लेकिन अब केवल आंकड़ों और श्रद्धा से काम नहीं चलेगा। एक्शन प्रोग्राम लेना होगा– उस में अन्याय का प्रतिकार, सत्याग्रह, ग्रामसभा का गठन, बीघा कट्ठा का वितरण और भूमि का स्वामित्व ग्रामसभा को समर्पित करना। सर्व का मूल्य और मुक्ति का उद्देश्य ग्रामसभा के सामने रखना होगा। बैशाली की ग्रामस्वराज्य गोष्ठी में इस पर विस्तार से विचार हुआ है और उसकी रिपोर्ट आपके सामने है।

सर्व सेवा संघ की रचना में फेर बदल होना चाहिए। राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर संगठन तथा पूरे आंदोलन के स्वरुप के बारे में ही अब नये सिरे से विचार विनिमय होने की आवश्यकता है। सर्व सेवा संघ का दफ्तर गोपुरी जारहा है। संगठन के दफ्तर को कार्यक्षेत्र के नजदीक होना चाहिए। जिस आंदोलन में हम लगे हैं उसमें संगठन से उसका हित सधना चाहिए। पूर्वांचल में आंदोलन बढरहा है और क्रान्ति का सघन प्रयोग क्षेत्र विकसित हो रहा है, इसलिए प्रधान कार्यालय आज है, वैसा रहे और आवश्यक्तानुसार उसके क्षेत्रीय कार्यालय हों। वर्तमान परिस्थिति में संघ का क्या रोल रहेगा, इस पर भी गहराई से विचार करना चाहिये।

संघ के प्रधान कार्यालय का वर्धा स्थानान्तरण:

संघ के अध्यक्ष श्री जगन्नाथन् ने कहा कि कुछ महीनों पहले यह बात सामने आई थी कि मंत्री के साथ कैम्प कार्यालय रहे ताकि वे क्षेत्र में भी रहें और कार्यालय का काम भी देख सकें और तदानुसार आज गोपुरी, वर्धा में कैम्प कार्यालय है।

लेकिन अनुभव ऐसा आरहा है कि बारबार वाराणसी आने से उनके क्षेत्र के काम में बाधा आती है। चूंकि वर्धा देश के मध्य में पड़ता है, इसलिए संघ का प्रधान कार्यालय वाराणसी से वर्धा स्थानान्तरित कियाजाय, इसका प्रस्ताव अधिवेशन के समक्ष प्रस्तुत है। वैसे कार्यालय भारत में किसी भी जगह रहे, इसमें कोई आपत्ति का सवाल नहीं होना चाहिए। दृष्टि यही हो कि जिस आंदोलन में लगे हैं, उसका हित सदता हो। प्रबंध समिति की पिछली बैठक में संघ का प्रधान कार्यालय वर्धा में लेजाने का जब तय हुआ तो श्री राममूर्तिजी भी उस बैठक में थे ही। लेकिन अब फिर से यह बात निकली है तो यह विषय संघ अधिवेशन के समक्ष मैं प्रस्तुत कररहा हूँ।

अधिवेशन में इस विषय पर चर्चा होकर यह तय हुआ कि यह विषय संघ की प्रबंध समिति को फिर से सौंपा जाय और वह इस पर विचार कर योग्य निर्णय ले।

इसके बाद संघ के अध्यक्ष महोदय ने अधिवेशन का समारोप किया।

श्री. एस. जगन्नाथन् :

दो दिन का यह संघ अधिवेशन अच्छा रहा। बाबा की उपस्थिति हमारे बीच बराबर रही और उनका मार्गदर्शन हमें मिला। यद्यपि बादशाह खान के हमारे बीच न आने का हमें दुःख है पर शांतिसेना के जनरल के तौर पर वे अहमदाबाद में काम कर रहे हैं। हम सब उनके साथ हैं।

श्री विनोबाजी का सूक्ष्म में जाने का निर्णय आप सबने सुना ही होगा। हमारी उन्नति के लिए भी वे सूक्ष्म और अतिसूक्ष्म प्रवेश में जाना चाहते हैं। वैसे वे तो हमेशा भगवान् के पास ही रहते हैं परन्तु उनकी इस वृत्ति का हम सबको हमारे काम में स्पर्श हो, ऐसी भगवान् से मंगल कामना है।

www.vinoba.in

अब कलेक्टिव लीडरशिप का जमाना है। विनोबाजी सूक्ष्म प्रवेश में जाकर हमें रास्ता चलानेवाले हैं। हम सब एक होकर काम करें, यही सबके लिए अच्छा होगा। बिहारदान के बाद महत्व का काम होनेवाला है। इस काम का दूसरे प्रदेशों पर भी असर पड़ेगा।

गांधी-जन्म-शताब्दि के अन्दर अधिक प्रदेशों का दान हो सकता है, इसकी हमें कोशिश करनी चाहिए। तमिलनाडुदान फरवरी, ७० तक हो जायगा, ऐसी आशा है। उत्तरप्रदेश भी होने के समीप ही है। और भी प्रदेश हों तो आन्दोलन को ताकत मिल सकती है। हम सब यहाँ से ऐसा निश्चय लेकर जावें। अपने-अपने क्षेत्र में पूरी ताकत लगावें तो हम अपने आंदोलन को जन-आंदोलन अधिक से-अधिक बना सकते हैं। हम आर्थिक समता कायम करने की चेष्ठा करें। समाज में से हिंसा के बीज निकालने की कौशिश करें। श्री शंकररावजी ने कहा कि लोग बहुत जागृत हैं तो हमें उनकी जागृति का लाभ उठाकर अपने बीज बोने चाहिए। नए रास्ते की हम तलाश में हैं। अहिंसा हमारा जीवन है। विषमता हमें मिटानी है, बस इसके लिए तीव्रता जरूरी है।

अंत मे एक बात के लिए आप सबसे माफी मांगनी है कि हमारे पास समय कम था, इसलिए बोलने का समय सबको नहीं मिल सका। अगर दे पाते तो और भी अच्छा रहता। आप सब लोग देश के कौने-कौने से आए। आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद। सबको प्रणाम्- जयजगत्!

संघ अधिवेशन की कार्यवाही रात्रि ९·३० बजे समाप्त हुई।

★★★

www.vinoba.in

राजगीर (बिहार) संघ अधिवेशन में उपस्थित लोकसेवकों, सदस्यों तथा आमंत्रितों की सूची

(संकलित)

प्रदेश	लोक-सेवक	संघ-सदस्य	आमंत्रित
१. उत्तर-प्रदेश	२८	११	५
२. आन्ध्र	१	१	१
३. उत्कल	१	२	१
४. मध्य-प्रदेश	१२	४	८
५. बंगाल	२	२	५
६. बिहार	१७	१३	२
७. केरल	२	२	१
८. दिल्ली	१	२	१
९. कर्नाटक	२	३	२
१०. गुजरात	८	४	२
११. महाराष्ट्र	९	८	१०
१२. हरियाणा	१	१	२
१३. पंजाब	—	१	३
१४. राजस्थान	४	४	१
१५. तमिलनाडु	—	३	—
१६. मणिपुर	—	—	१

www.vinoba.in

प्रदेशवार नामावलि

क्रमांक	नाम	प्रदेश	जिला	लोक-सेवक संघ-सदस्य	आमंत्रित
१.	श्री प्रेमभाई	उत्तर-प्रदेश	मिर्जापुर	,,	
२.	श्री कृष्णकुमार	,,	वाराणसी		,,
३.	श्री रामचंद्र राही	,,	,,		,,
४.	श्री बंशीधर श्रीवास्तव	,,	,,		,,
५.	श्री महेश्वर प्रसाद	,,	,,		,,
६.	श्री कृष्णराज मेहता	,,	,,	,,	
७.	श्री अलखनारायण	,,	,,	,,	
८.	श्री अशोक कुमार	,,	,,	,,	
९.	श्री करणभाई	,,	,,	,,	
१०.	श्री कपिलभाई	,,	गोरखपुर	,,	
११.	श्री विनीत फोजदार	,,	,,	,,	
१२.	श्री रामगोपाल आजाद	,,	अलीगढ़	,,	
१३.	श्री निरंजन प्रसाद	,,	,,	,,	
१४.	श्री कन्हैयालाल शर्मा	,,	,,	,,	
१५.	श्री पंचदेव तिवारी	,,	बलिया	,,	
१६.	श्री रामकृष्ण शास्त्री	,,	,,	,,	
१७.	श्री कपिल अवस्थी	,,	रायबरेली	,,	
१८.	श्री भागीरथ	,,	मेरठ	,,	
१९.	श्री यमुनाप्रसाद शर्मा	,,	,,	,,	
२०.	श्री नथूसिंह	,,	,,	,,	
२१.	श्री तेजसिंह	,,	,,	,,	
२२.	श्री किंकर प्रसाद	,,	,,	,,	
२३.	श्री किशोरप्रसाद शर्मा	,,	,,	,,	
२४.	श्री विश्रामभाई	,,	बस्ती	,,	
२५.	श्री हीरालाल	,,	झांसी	,,	
२६.	श्री लोकेशचन्द्र	,,	,,	,,	

www.vinoba.in

२७. श्री भीवालाल ,, फरुखाबाद ,,
२८. श्री रामचन्द्र गुप्ता ,, ,, ,,
२९. श्री अशोक कुमार ,, ,, ,,
३०. श्री राघवप्रसाद शुक्ल ,, ,, ,,
३१. श्री धर्मप्रसाद ,, मुरादाबाद ,,
३२. श्री उत्तम प्रसाद ,, ,, ,,
३३. श्री बृजेन्द्र केशौरिया ,, मथुरा ,,
३४. श्री रामगोपाल शर्मा ,, ,, ,,
३५. श्री रामपालसिंह यादव ,, ,, ,,
३६. श्री दरबसिंह ,, आगरा ,,
३७. श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ,, ,, ,,
३८. श्री बालमुकंद ,, ,, ,,
३९. श्री पदमसेन गोपाल ,, मैनपुरी ,,
४०. श्री नोमोकसिंह ,, ,, ,,
४१. श्री श्रीनिवासराय ,, आजमगढ़ ,,
४२. श्री रामसबल ,, ,, ,,
४३. श्री मेवालाल गोस्वामी ,, ,, ,,
४४. श्री रामनारायणसिंह ,, देवरिया ,,
४५. श्री बी. बेंकटराव आन्ध्र करीमनगर ,,
४६. श्री बिरधीचंद्र चौधरी ,, हैदराबाद ,,
४७. श्री लोचनदास ,, ,, ,,
४८. श्री मनमोहन चौधरी उत्कल कटक ,,
४९. श्री बाबूलाल मीतल ,, भुवनेश्वर ,,
५०. श्री तुलसी मुंडा ,, ढेंकानाल ,,
५१. श्री मालती चौधरी ,, ,, ,,
५२. श्री शंकरलाल मंडलोई मध्यप्रदेश इंदौर ,,
५३. श्री निर्मला मजूमदार ,, ,, ,,
५४. श्री रामपाल अग्रवाल ,, ,, ,,
५५. ,, नादिर हुसैन ,, ,, ,,

www.vinoba.in

५६. श्री शंकरलाल चौधरी ,, ,, ,,
५७. ,, रामेश्वरदयाल तोतला ,, ,, ,,
५८. ,, पुजारीलाल ,, ,, ,,
५९. ,, जानवन ,, ,, ,,
६०. ,, मुमताज बेगम ,, ,, ,,
६१. ,, अल्ताफ हुसैन ,, ,, ,,
६२. ,, नरेन्द्र दुबे ,, ,, ,,
६३. ,, रामदयालसिंह ,, टीकमगढ़ ,,
६४. ,, दयाराम नामदेव ,, ,, ,,
६५. ,, जयराम प्रसाद ,, ,, ,,
६६. ,, रामचरण बैद ,, ,, ,,
६७. ,, सुनिता शर्मा ,, ,, ,,
६८. ,, शकीशरण तिवारी ,, ,, ,,
६९. ,, रामप्रसाद साहू ,, ,, ,,
७०. ,, जगजीवनप्रसाद शुक्ला ,, ,, ,,
७१. ,, लल्लूप्रसाद दादा ,, भीण्ड ,,
७२. ,, मानवमुनि ,, रतलाम ,,
७३. ,, हेमदेव शर्मा ,, ग्वालियर ,,
७४. ,, विश्वनाथ शर्मा ,, मंदसौर ,,
७५. ,, पुरुषोत्तमदास पुरोहित ,, छतरपुर ,,
७६. ,, क्षितिशराय चौधरी बंगाल मिदनापुर ,,
७७. ,, अन्ना मिकाराम चौधरी ,, ,, ,,
७८. ,, अंबिकाराम चौधरी ,, ,, ,,
७९. ,, जगमोहनदास ,, कलकत्ता ,,
८०. ,, दुर्गाप्रसाद शास्त्री ,, ,, ,,
८१. ,, बृजदास संघल ,, ,, ,,
८२. ,, श्रीकृष्णकांत चक्रवर्ती ,, २४ परगना ,,
८३. ,, दीनेशचंद्र मुखर्जी ,, हुगली ,,
८४. ,, अनंगविजय मुखर्जी ,, ,, ,,
८५. ,, गणेशसिंह बिहार मूंगेर ,,
८६. ,, राममूर्ति ,, ,, ,,
८७. ,, हेमनाथसिंह ,, ,, ,,
८८. ,, पारसभाई ,, ,, ,,
८९. ,, बृजमोहन शर्मा ,, ,, ,,

www.vinoba.in

९०. श्री अभयवर दीक्षित ,, सारण ,,
९१. ,, विश्वनाथ प्रसाद ,, ,, ,,
९२. ,, सीतारामसिंह ,, मुज्जफरपुर ,,
९३. ,, बनारसीदास ,, ,, ,,
९४. ,, महेन्द्र मेहतो ,, ,, ,,
९५. ,, महेन्द्र यादव ,, ,, ,,
९६. ,, विश्वनाथराय ,, ,, ,,
९७. ,, गोपालजी झा ,, दरभंगा ,,
९८. ,, घूरन झा ,, ,, ,,
९९. ,, गीता प्रसादसिंह ,, गया ,,
१००. ,, द्वारको सुन्दरानी ,, ,, ,,
१०१. ,, गरुणरामी ,, ,, ,,
१०२. ,, विजयकुमार ,, ,, ,,
१०३. ,, अयोध्याप्रसाद ,, पटना ,,
१०४. ,, निर्मलचंद्र चौधरी ,, ,, ,,
१०५. ,, कैलाशप्रसाद शर्मा ,, ,, ,,
१०६ ,, विद्यासागर शर्मा ,, ,, ,,
१०७. ,, रामानन्दसिंह ,, ,, ,,
१०८. ,, वैद्यनाथप्रसाद चौधरी ,, पूर्णिया ,,
१०९. ,, प्रेमलता माधव ,, ,, ,,
११० ,, शुक्लचन्द्रसिंह ,, शाहाबद ,,
१११. ,, रघुवरदयाल राधेय ,, ,, ,,
११२. ,, हरिशंकरसिंह ,, धनबाद ,,
११३. ,, नागेश्वर ,, भागलपुर ,,
११४. ,, रेणुका महन्ति ,, सिंहभूमि ,,
११५. ,, जगदीश थवानी ,, संथालपरगना ,,
११६. ,, के. जनार्दन पिल्लै केरल त्रिवेन्द्रम् ,,
११७. ,, पी. गोपीनाथन् नैयर ,, ,, ,,
११८. ,, आचार्य वरटकर ,, ,, ,,
११९. ,, माम्मन पंतलम् ,, ,, ,,
१२०. ,, एम.आर.बलराम ,, अलेप्पी ,,
१२१. ,, सी. ए. मेनन दिल्ली दिल्ली ,,
१२२. ,, जैनेन्द्र कुमार ,, ,, ,,
१२३. ,, जीवनलाल जयरामदास ,, ,, ,,
१२४. ,, रामवतार गाड़ी ,, ,, ,,

www.vinoba.in

१२५. ,, निर्मला नायक कर्नाटक कारवार ,,
१२६. ,, के. एस. आचार्लू ,, बंगलौर ,,
१२७. ,, नारायण पावार ,, ,, ,,
१२८. ,, गुण्डाचार ,, ,, ,,
१२९. ,, सदाशिवराव भोंसले ,, बेलगांव ,,
१३०. ,, वी. कमाई देवी ,, ,, ,,
१३१. ,, वा. ह. हार्दिक ,, ,, ,,
१३२. ,, विपिन फौजदार गुजरात बड़ौदा ,,
१३३. ,, कान्ताबेन शाह ,, ,, ,,
१३४. ,, हरविलास शाह ,, ,, ,,
१३५. ,, कान्तिशाह ,, ,, ,,
१३६ ,, महेन्द्र भट्ट गुजरात भावनगर ,,
१३७ ,, मंदाकनि के. भट्ट ,, ,, ,,
१३८ ,, मीरा भट्ट ,, ,, ,,
१३९ ,, लीलाधर ,, जूनागढ ,,
१४० ,, कृष्णबदन शाह ,, अहमदाबाद ,,
१४१ ,, शारदाबहीन देसाई ,, ,, ,,
१४२ ,, इंदुमति ,, ,, ,,
१४३ ,, जीसवाल पटेल ,, ,, ,,
१४४ ,, बंशीलाल ,, ,, ,,
१४५ ,, रतनखन जोशी ,, मेहसाणा ,,
१४६ ,, सविता बहीन ,, ,, ,,
१४७ ,, प्र. गो. शेंदुर्णीकर महाराष्ट्र भंडारा ,,
१४८ ,, नंदलाल काबरा ,, जलगांव ,,
१४९ ,, बसंतराव बोंबटकर ,, वर्धा ,,
१५० ,, दत्तोबा दास्ताने ,, ,, ,,
१५१ ,, मालूताई दास्ताने ,, ,, ,,
१५२ ,, शीला कड़कीया ,, ,, ,,
१५३ , आशादेवी आर्यनायकम् ,, ,, ,,
१५४ ,, मुरलीधर चौधरी ,, ,, ,,
१५५ ,, गोविंदराव देशपांडे ,, पूना ,,
१५६ ,, गोविन्दराव शिंदे ,, ,, ,,
१५७ ,, श्रीराम चिंचलीकर ,, ,, ,,
१५८ ,, मालती चिंचलीकर ,, ,, ,,
१५९ ,, गणेश बहडे ,, ,, ,,

www.vinoba.in

१६० श्री चन्द्रा किर्लोस्कर ,, रत्नागिरी ,,
१६१ ,, श्रीकृष्णमूर्ति मिरमिरा ,, चांदा ,,
१६२ ,, नरोत्तम शाह ,, बंबई ,,
१६३ ,, विठ्ठलदास बोदाणी ,, ,, ,,
१६४ ,, मोहनलाल रुपाणी ,, ,, ,,
१६५ ,, इंदुमती तेंडुलकर ,, ,, ,,
१६६ ,, एस. मंजगांवकर ,, ,, ,,
१६७ ,, शकुंतला वैद ,, ,, ,,
१६८ ,, द्वारकाप्रसाद शास्त्री ,, ,, ,,
१६९ ,, राधेश्याम ,, ,, ,,
१७० ,, श्रीराम देशपांडे ,, ,, ,,
१७१ ,, प्रताप रुपोलिया ,, ,, ,,
१७२ ,, दत्तात्रय बोहेडे ,, ,, ,,
१७३ ,, कान्तिलाल बोहरा ,, ,, ,,
१७४ ,, जयनारायण वर्मा हरियाणा हिसार ,,
१७५ ,, दादा गणेशीलाल ,, ,,
१७६ ,, शकुंतला ,, गुडगांव
१७७ ,, शारदादेवी ,, ,,
१७८ ,, सोमदत्त वेदालंकार पंजाब अमृतसर ,,
१७९ ,, वैद्य रामस्वरुप कौशिक ,, फिरोजपुर ,,
१८० ,, बनारसीदास गोयल ,, जालंधर ,,
१८१ ,, सावित्री देवी ,, ,, ,,
१८२ ,, बद्रीप्रसादस्वामी राजस्थान नागोर ,,
१८३ ,, रामबल्लभ अग्रवाल ,, जयपुर ,,
१८४ ,, सिद्धराज ढड्ढा ,, ,, ,,
१८५ ,, पूर्णचन्द्र जैन ,, ,, ,,
१८६ ,, छीतरमल गोयल ,, ,, ,,
१८७ ,, जवाहिरलाल जैन ,, ,, ,,
१८८ ,, यज्ञदत्त उपाध्याय ,, ,, ,,
१८९ ,, गोकुलभाई भट्ट ,, सिरोही ,,
१९० ,, दीनदयाल दशोत्तर ,, उदयपुर ,,
१९१ ,, एस. जगन्नाथन् तमिलनाडु मदुराई ,,
१९२ ,, कृष्णामल ,, ,, ,,
१९३ ,, के. अरुणाचलम् ,, ,, ,,
१९४ ,, भागीरथसिंह मणिपुर मणिपुर ,,

www.vinoba.in